बड़े वन में छोटा घर

लॉरा इंगल्स विइल्डर

LITTLE HOUSE IN THE BIG WOODS

LAURA INGALLS WILDER



बड़े वन में छोटा घर

लेखिका

लॉरा इंगल्स विल्डर

प्रकाशक

इंडियन प्रेस (पब्लिकेशंस), प्राइवेट लिमिटेड,

इलाहाबाद

१९५७

मूल्य २॥)

अथवा २·५० रुपये

Hindi Edition
Little House In The Big Woods
by
Laura Ingalls Wilder

Printed by P. L. Yadava at
The Indian Press (Private), Ltd.,
Allahabad

विषय-सूची



अध्याय १



बड़े वन में छोटा घर

साठ वर्ष हुए, एक समय विसकानसिन के बड़े वन में लकड़ी के कुन्दों के बने हुए एक छोटे भूरे घर में एक छोटी लड़की रहती थी।

घर के चारों तरफ बड़े वन के विशाल हरे वृक्ष खड़े थे। उनके आगे काफी दूर तक दूसरे पेड़ थे। उनके उत्तर में मनुष्य चाहे दिन भर चले, चाहे सप्ताह भर अथवा महीने भर, उसे वन ही वन मिलते थे। न तो कहीं मकान थे, न सड़कें और न मनुष्य। केवल पेड़ ही पेड़ थे और उनके बीच में जंगली जानवर रहते थे।

बड़े वन में भेड़िए, भालू तथा बड़ी-बड़ी जंगली बिल्लियाँ रहती थीं। नदियों के किनारे विशेष प्रकार के चूहे, नेवले और ऊदबिलाव रहते थे। पहाड़ियों में लोमड़ियों की माँदें थीं और हिरण सर्वत्र घूमा करते थे।

कुन्दों के छोटे मकान के पूर्व में मीलों तक पेड़ ही पेड़ थे। केवल थोड़े से छोटे-छोटे कुन्दों के मकान बड़े वन की सीमा पर दूर-दूर स्थित थे।

जहाँ तक छोटी लड़की की दृष्टि जाती थी वहाँ तक केवल एक छोटा सा मकान था, जिसमें वह अपने पिता, माता, अपनी बड़ी बहन मेरी तथा छोटी बहन कैरी के साथ रहती थी। मकान के सामने गाड़ी का एक टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता था जो चक्कर काटता हुआ वन को जाता था जहाँ जंगली जानवर रहा करते थे। परन्तु छोटी लड़की यह नहीं जानती थी कि वह मार्ग कहाँ जाता है और न यह जानती थी कि उसके छोर पर क्या है।

छोटी लड़की का नाम लॉरा था। वह अपने पिता को पा और माता को मा कहा करती थी। आजकल की भाँति उन दिनों वहाँ के बच्चे पिता तथा माता अथवा पापा और मामा नहीं कहा करते थे।

रात को जब लॉरा छोटे पहियों पर घूमनेवाले बिस्तर में जागृतावस्था में लेटी रहती थी तब वह पेड़ों की हल्की-हल्की आवाजों के सिवाय और कुछ नहीं सुन सकती थी। कभी-कभी रात बहुत बीत जाने पर भेड़िया बोलता था। तब वह निकट आता था और फिर बोलता था।

वह भयानक आवाज थी। लॉरा जानती थी कि भेड़िये छोटी लड़कियों को खा जाते हैं। परन्तु कुन्दों की ठोस दीवारों के भीतर वह सुरक्षित थी। दरवाजे के ऊपर उसके पिता की तलवार लटक रही थी और अच्छा पुराना चितकबरा कुत्ता जैक उसके सामने पहरा दे रहा था। उसके पिता कहते थे——

"लॉरा, सो जाओ। जैक भेड़ियों को अन्दर न आने देगा।" इसलिए लॉरा पहिएदार बिस्तर पर, मेरी की बगल में, ओढ़ने के नीचे आराम से लेट जाती थी और फिर उसे नींद लग जाती थी।

एक रात को उसके पिता उसे बिस्तर पर से उठाकर भेड़िये दिखाने के लिए खिड़की के पास ले गये। घर के सामने दो

भेड़िये बैठे थे। वे मोटे और रूखे बालोंवाले कुत्तों की भाँति दिखाई पड़ते थे। वे बड़े चमकीले चाँद की तरफ अपनी नाकें करके जोर से चिल्लाते थे।

जैक गुर्राता हुआ दरवाजे के सामने इधर से उधर घूम रहा था। उसकी पीठ पर के बाल खड़े थे और वह भेड़ियों को अपने तेज, भयानक दाँत दिखाता था। वे चिल्लाते थे परन्तु भीतर नहीं आ सकते थे।

वह सुखद मकान था। ऊपर की बड़ी मंजिल पर एक बड़ा कमरा था। जब छत पर पानी बरसता था तब उस कमरे में खेलने में बड़ा मजा आता था। नीचे की मंजिल में छोटा शयनागार और एक बड़ा कमरा था। सोने के कमरे में एक खिड़की थी जो झिलमिली से बंद होती थी। बड़े कमरे में दो खिड़कियाँ थीं जिनके किवाड़ में शीशे लगे थे और उसमें दो दरवाजे थे––एक सामने, दूसरा पीछे।

मकान के चारों तरफ लकड़ी का पेचदार बाड़ा बना था जिससे भेड़िये और हिरण निकट न आ सकें।

घर के सामने आँगन में दो सुन्दर तथा विशाल बलूत के वृक्ष थे। प्रति दिन प्रातःकाल ज्यों ही लॉरा जागती थी त्यों ही वह दौड़-कर खिड़की से बाहर झाँकती थी। एक दिन प्रातःकाल उसने देखा कि प्रत्येक विशाल वृक्ष में एक मरा हुआ हिरण लटक रहा है।

लॉरा के पिता ने हिरणों को उसके पूर्ववर्ती दिन को गोली से मारा था और रात को जब वह उनको घर ले आये थे तब लॉरा सो गई थी। उसके पिता ने हिरणों को पेड़ों पर ऊँचा टाँग दिया था जिससे भेड़िये गोश्त को न पा सकें।

उस दिन पिता, माता, लॉरा और मेरी को भोजन के लिए हिरण का ताजा गोश्त मिला। वह इतना अच्छा था कि लॉरा चाहती

थी कि वे लोग सब गोश्त खा जायँ। किन्तु अधिकांश मांस में नमक लगाकर और धुएँ में सेंककर जाड़े में खाने के लिए डिब्बों में बन्द करके रखना आवश्यक था।

इसका कारण यह था कि जाड़ा आ रहा था। दिन छोटे होते थे और खिड़की के दिलहों पर रात में तुषार जम जाता था। शीघ्र बर्फ आनेवाली थी। तब कुन्दों का मकान बर्फ के ढेर में करीब करीब गड़ जायगा और झीलें तथा नदियाँ जम जायँगी। जाड़े के अत्यन्त ठंडे मौसम में यह निश्चय नहीं रहता था कि लॉरा के पिता खाने के लिए शिकार मार सकेंगे।

भालू अपनी माँदों में छिपकर जाड़े भर गहरी नींद में सोते रहेंगे। अपनी बालदार दुमों से अपनी नाकों को ढँक कर गिलहरियाँ खोखले पेड़ों में अपने घोंसलों में दुबकी पड़ी रहेंगी। हिरण और खरगोश बहुत कम दिखाई पड़ेंगे और जो दिखाई भी पड़ेंगे, तेजी से भाग जायँगे। यदि लॉरा के पिता कोई हिरण पावेंगे भी तो वह दुबला-पतला होगा, पतझड़ के हिरण की भाँति मोटा-ताजा न होगा।

हो सकता है कि लॉरा के पिता दिन भर बर्फ से ढके हुए बड़े वन में अकेले शिकार की तलाश करते रहें और रात को खाली हाथ लौटें, और लॉरा, मेरी तथा उनकी माता के खाने के लिए कुछ न लावें।

अतएव जाड़ा आने से पहले छोटे से मकान में अधिक से अधिक मात्रा में भोजन एकत्र कर लेना आवश्यक था।

लॉरा के पिता ने बड़ी सतर्कता से हिरण की खाल उतारी और उसको नमक लगाकर फैला दी क्योंकि वह उसको सिझाना चाहते थे। तब उन्होंने गोश्त के टुकड़े-टुकड़े काटे, उनको एक तख़्ते पर रक्खा और उन पर नमक छिड़क दिया।

सहन के छोर पर एक बड़े खोखले पेड़ का तना कटा हुआ रक्खा था। लॉरा के पिता ने दोनों सिरों से उसमें जहाँ तक वह पहुँच सकते थे वहाँ तक उसके भीतर कीलें गाड़ दी थीं। तब उन्होंने उस तने को खड़ा कर दिया था, उसकी चोटी पर एक छोटा सा छप्पर छा दिया था और पेंदे के निकट एक तरफ काटकर एक छोटा दरवाजा बना दिया था। काटे हुए टुकड़े पर उसने चमड़े के कब्जे लगा दिये और फिर उसके स्थान में उसे जड़ दिया। इस प्रकार एक छोटा-सा किवाड़ बन गया जिस पर छाल लगी हुई थी।

हिरण के मांस पर कई दिन नमक छिड़कने के बाद, लॉरा के पिता ने प्रत्येक टुकड़े के सिरे के पास छेद कर दिया और उसमें रस्सी डाल दी। लॉरा ने उन्हें यह करते हुए देखा और तब उसने खोखले कुन्दे के भीतर उनको कीलों पर लटकाते हुए देखा।

छोटे दरवाजे के अन्दर हाथ डालकर, जहाँ तक वह पहुँच सकते थे वहाँ तक, उन्होंने कीलों पर गोश्त लटकाया। तब उन्होंने कुन्दे पर सीढ़ी रक्खी, चोटी तक चढ़कर छप्पर को एक तरफ हटाया और कुन्दे के अन्दर कीलों पर गोश्त के टुकड़े टाँग दिये।

तब लॉरा के पिता ने छप्पर को उसके स्थान पर रख दिया और सीढ़ी से नीचे उतरकर उससे बोले :

"दौड़कर उस कुन्दे पर जाओ जिस पर लकड़ी काटी जाती है और हिकरी नामक वृक्ष के कुछ हरे टुकड़े लाओ जो नये, साफ और सफेद हों।"

इसलिए लॉरा दौड़कर उस कुन्दे के पास गई जिस पर उसका पिता लकड़ी काटा करता था और अपने आँचल में ताजे, सुगंधित टुकड़े भर लिये।

खोखले कुन्दे के भीतर छोटे दरवाजे के ठीक पास लॉरा के पिता

ने छाल और सेवार से आग जलाई और उस पर लॉरा द्वारा लाये हुए कुछ टुकड़ों को बड़ी सावधानी से रख दिया।

शीघ्रतापूर्वक जलने के बदले हरे टुकड़े सुलगने लगे और इस प्रकार खोखला कुन्दा गहरे तथा दम घोंटनेवाले धुएँ से भर गया। लॉरा के पिता ने दरवाजा बन्द कर दिया। कुछ धुआँ उसके चारों



तरफ की दरार से बाहर निकल आया और कुछ छत से। किन्तु अधिकांश धुआँ गोश्त के साथ उसमें बंद था।

लॉरा के पिता ने कहा, "हिकरी वृक्ष के धुएँ से बढ़कर दूसरा कोई धुआँ नहीं होता। उससे हिरण का मांस ऐसा अच्छा तैयार होता है कि वह कहीं भी और किसी भी मौसम में नहीं बिगड़ता।"



तब उन्होंने अपनी बन्दूक उठाई और कुल्हाड़ी को कंधे पर रख-कर कुछ और पेड़ काटने के लिए वह वन के उस भाग में गये जहाँ उन्होंने कुछ पेड़ों को काटकर जमीन खाली कर दी थी।

लॉरा और उसकी माता कई दिन आग को देखती रही। जब दरारों से धुआँ निकलना बंद हो जाता था तब लॉरा हिकरी* के और टुकड़े लाती थी और उसकी माँ उन्हें गोश्त के नीचे आग पर रख देती थी। सारे समय सहन में धुएँ की गंध फैली रहती थी,

---

* अखरोट की तरह का एक पेड़।

और जब दरवाजा खोल दिया जाता था तब धुएँ और मांस की गाढ़ी गंध निकलती थी।

अन्त में लॉरा के पिता ने कहा कि हिरण का मांस काफी समय तक धुआँ खा चुका। तब उन्होंने आग को बुझ जाने दिया और पिता ने मांस के सब टुकड़े खोखले पेड़ के भीतर से निकाल लिये। माँ ने प्रत्येक टुकड़े को सफाई से कागज में लपेट दिया और उन्हें ऊपर की मंजिल के कमरे में टाँग दिया जिससे वे सूखे और सुरक्षित रहें।

एक दिन प्रातःकाल सूर्योदय से पहले लॉरा के पिता घोड़े और गाड़ी लेकर गये और उस रात को वह गाड़ी भर मछली लेकर लौटे। गाड़ी का सन्दूक पूरा भरा हुआ था और उनमें से कुछ मछलियाँ इतनी बड़ी थीं कि जितनी लॉरा। उसके पिता पिपिन झील गये थे और मछलियों को जाल में पकड़ा था।

लॉरा और मेरी की माता ने उनके लिए सफेद, मोटी मछलियों के बड़े-बड़े टुकड़े काटे। उन सबने अच्छी, ताजी मछलियाँ खाईं। जितनी मछलियाँ वह न खा सके वह नमक लगाकर जाड़े के लिए पीपों में बन्द कर दी गईं।

लॉरा के पिता के पास एक सूअर था। वह बड़े वनों में घूमा करता था और शाहबलूत के फल, अखरोट, मूँगफली तथा कन्द खाया करता था। उन्होंने उस सूअर को पकड़ लिया था और मोटे होने के लिए उसे कुन्दों से बने हुए बाड़े में बन्द कर दिया था। जब मौसम इतना ठंडा हो जाय कि सूअर का मांस जमा रहे तब वह उसको मारना चाहते थे।

एक बार आधी रात को लॉरा जगी और सूअर को चिल्लाते हुए सुना। उसके पिता बिस्तर से उछलकर बाहर निकले,

दीवार पर से बन्दूक उठाई और घर से बाहर दौड़कर गये। तब लॉरा ने दो बार बन्दूक को छूटते हुए सुना।

जब उसके पिता वापस आये तब उन्होंने बतलाया कि क्या हुआ था। उन्होंने सूअर के बाड़े के पास एक बड़े काले भालू को खड़ा देखा था। भालू सूअर को पकड़ने के लिए बाड़े में घुसना चाहता था। इसलिए सूअर दौड़ता और चिल्लाता था। लॉरा के पिता ने तारों के प्रकाश में यह देखा और उन्होंने शीघ्रता से गोली चलाई। लेकिन रोशनी धुँधली थी और जल्दी में वह भालू को गोली न मार सके। भालू वन में भाग गया। उसे चोट बिलकुल न लगी थी।

लॉरा को खेद था कि उसके पिता भालू को न मार सके। उसे भालू का गोश्त बहुत पसन्द था। उसके पिता को भी खेद था, परन्तु उन्होंने कहा——

"खैर, मैंने सूअर को बचा लिया।"

छोटे घर के पीछे का बगीचा गर्मी भर बढ़ता रहा। वह घर के इतने निकट था कि दिन भर हिरण झाड़ी पार करके उसमें तरकारियाँ नहीं खाते थे और रात को जैक उनको दूर रखता था। कभी-कभी प्रातःकाल गाजर और पातगोभी में खुरों के छोटे-छोटे चिह्न दिखाई पड़ते थे। परन्तु वहाँ जैक के पैरों के चिह्न भी रहते थे। उसे देखकर हिरण उछलकर बाहर भाग जाते थे।

अब आलू, गाजर, चुकन्दर, शलजम और पातगोभी तहखाने में एकत्र किये गये क्योंकि बर्फ जमनेवाली रातें आ गई थीं। प्याज के डंठल बटकर लम्बी रस्सियाँ बनाई गईं और लाल मिर्चों को डोरों में गूँथकर मालाएँ बनाई गईं। फिर वे ऊपरी मंजिल के कमरे में अगल-बगल में टाँग दी गईं। उस कमरे के कोनों में लौकियों और कोहड़ों की, नारंगी रंग की, पीली और हरी राशियाँ लगा दी गईं।

नमक लगाकर सुखाई हुई मछलियाँ भंडारघर में पीपों में रक्खी थीं और पीले पनीर को भंडारघर की आलमारियों में रख दिया गया।

तब एक दिन चाचा हेनरी बड़े वन में से घोड़े पर सवार होकर आये। वह सूअर को मारने में लॉरा के पिता की सहायता करने के लिए आये थे। उसकी माता का, मांस काटनेवाला, चाकू पहले ही से तेज कर लिया गया था। चाचा हेनरी चाची पॉली की छुरी लाये थे।

सूअर-बाड़े के निकट लॉरा के पिता और चाचा हेनरी ने एक बड़ी आग जलाई और उस पर एक बड़े देकचे में पानी गर्म किया। जब पानी खौलने लगा तब वे सूअर को मारने गये। तब लॉरा भागी और बिस्तर में अपना सिर छिपा लिया। उसने अपने कानों को उँगलियों से बन्द कर लिया जिससे 'वह सूअर का चिल्लाना न सुन सके।

उसके पिता ने कहा, "लॉरा हम उसको इतनी जल्दी मार डालेंगे कि उसको कष्ट न होगा।" परन्तु वह उसका चिल्लाना नहीं सुनना चाहती थी।

एक मिनट बाद उसने सतर्कता से एक कान से एक उँगली निकालकर सुना। सूअर ने चिल्लाना बन्द कर दिया था। तत्पश्चात् उसको काटने का समय बड़ा सुखद तमाशा हो गया।

वह बड़ा व्यस्त दिन था। बहुत कुछ देखना और करना था। चाचा हेनरी और लॉरा के पिता बहुत प्रसन्न थे। आज वे लोग पसलियों में लिपटे हुए गोश्त को खायेंगे। पिता ने लॉरा और मेरी को सूअर का मूत्राशय और दुम देने की प्रतिज्ञा की थी।

ज्यों ही सूअर मरा त्यों ही पिता और चाचा हेनरी ने उसे



उठाकर खौलते हुए पानी में छोड़ दिया और उसे अच्छी तरह उबाल दिया। तब उन्होंने उसे एक तख्ते पर रक्खा और चाकू से खुरचकर उसके बाल साफ कर दिये। उसके बाद उन्होंने सूअर को एक पेड़ में लटका दिया, उसकी आँतें निकाल लीं और उसे ठंडा होने के लिए छोड़ दिया।

जब वह ठंडा हो गया तब उन्होंने उसे उतारा और उसको बोटी-बोटी काट डाला। जाँघ, कंधे, बगल का गोश्त, पसलियाँ, कलेजा, यकृत और जीभ आदि अंग अलग अलग कर दिये गये। सिर काटकर अलग रख दिया गया जिससे "हेड चीज" नामक खाद्य

पदार्थ बनाया जा सके। कड़ाही में गोश्त के छोटे-छोटे टुकड़े थे जिनको मसाले के साथ पकाकर "सासेज" तैयार किया जा सकता था।

मकान के पिछले भाग में ओसारे में एक तख्ते पर गोश्त रखा गया और हर एक टुकड़े पर नमक छिड़क दिया गया। मुरब्बा बनाने के लिए जाँघें और कंधे खारे पानी में रख दिये गये, क्योंकि हिरण के मांस की भाँति उनको भी खोखले कुंदे के अन्दर धुएँ में झुलसाना था।

पिता ने कहा, "हिकरी का धुआँ खाई हुई सूअर की जाँघ अत्यन्त स्वादिष्ट होती है।"

वह मूत्राशय को फूँककर फुला रहे थे। वह छोटा सफेद गुब्बारा बन गया। उन्होंने उसके मुँह को डोरे से कसकर बाँध दिया और उसे मेरी और लॉरा को खेलने के लिए दे दिया। वे उसको ऊपर हवा में उछाल सकती थीं और हाथ से मारकर उसे आगे या पीछे उड़ा सकती थीं। वह पृथ्वी पर लुढ़कता हुआ आगे बढ़ सकता था और वे उसे पैर से मार सकती थीं। परन्तु सूअर की दुम गुब्बारे से भी बढ़कर खेल थी।

उसके पिता ने सावधानी से उसकी खाल उतार दी और मोटे सिरे में एक नोकीली लकड़ी घुसेड़ दी। माँ ने खाना पकानेवाली अँगीठी के सामने का भाग खोलकर कुछ कोयला निकाला और उसे लोहे के अग्नि-कुंड में रख दिया। तब लॉरा और मेरी बारी बारी से दुम को कोयले पर सेंकने लगीं।

वह छन-छन करके भुन गई। चरबी की बूँदें कोयले पर गिरती थीं और उनसे लपट निकलती थी। माँ ने उस पर नमक छिड़क दिया। उनके हाथ और चेहरे बहुत गर्म हो गये। लॉरा की उँगली जल गई परन्तु वह ऐसी उत्तेजित थी कि उसने उसकी

चिन्ता न की। सूअर की दुम को भूनना ऐसा अच्छा खेल था कि प्रत्येक लड़की चाहती थी कि वह दूसरी लड़की को भी उसे भूनने की बारी दे।

अन्त में दुम भुन गई। वह एक सिरे से दूसरे सिरे तक बादामी हो गई और उसकी सुगंध कितनी अच्छी थी! वे उसे ठंडी करने के लिए सहन में ले गईं। ठंडी होने के पहले ही वे उसे चखने लगीं। इससे उनकी जीभें जल गईं।

उन्होंने हड्डियों पर से गोश्त को एकदम खा डाला, तब हड्डियाँ जैक को दे दीं। इस प्रकार सूअर की दुम समाप्त हो गई। अगले वर्ष के पहले वे फिर दूसरी दुम नहीं पा सकती थीं।

भोजन के उपरान्त चाचा हनरी घर चले गये और लॉरा के पिता बड़े जंगल में काम करने चले गये। किन्तु लॉरा, मेरी और उनकी माँ के लिए गोश्त काटने का समय केवल आरम्भ हुआ था। माँ को बहुत काम करना था। लॉरा और मेरी उनकी सहायता करती थीं।

उस दिन और दूसरे दिन माँ अँगीठी पर लोहे के बड़े बर्तनों में सूअर की चरबी पिघलाती रहीं। लॉरा और मेरी लकड़ी ले जाती थीं और आग को देखती थीं। अँगीठी को गर्म होना चाहिए किन्तु बहुत अधिक गर्म नहीं, अन्यथा चरबी जल जाती। बड़े बर्तन सन-सनाकर खौलने लगे परन्तु उनमें से धुआँ नहीं निकलता था। थोड़ी देर बाद माँ उन पर से फेन काट देती थीं। वह उसको कपड़े में रखकर चरबी को खूब निचोड़ लेती थीं और शेष भाग को अलग रख देती थीं। इस अवशेष का उपयोग वह बाद में "जॉनी-केक" को स्वादिष्ट बनाने के लिए करती थीं।

यह अवशेष खाने में बहुत स्वादिष्ट होता था, परन्तु लॉरा

और मेरी केवल उसका स्वाद ले सकती थीं। माँ न कहा कि यह ऐसी बहुमूल्य वस्तु है कि छोटी लड़कियों को नहीं दी जा सकती।

माँ ने सूअर के सिर को सावधानी से खुरचकर साफ किया और तब उन्होंने उसको इतना उबाला कि पूरा गोश्त हड्डियों से अलग हो गया। उन्होंने गोश्त को चाकू से काटकर महीन टुकड़े कर डाले और उनको लकड़ी के प्याले में रक्खा। फिर उन्होंने गोश्त को मिर्च, नमक और मसालों से स्वादिष्ट बनाया। तब उन्होंने उसमें गोश्त का शोरबा मिलाया और ठंडा होने के लिए एक कड़ाही में अलग रख दिया। जब वह ठंडा हो गया तब उसको टुकडों में काट लिया गया। इस प्रकार 'हेड-चीज' तैयार हो गया।

गोश्त के बड़े-बड़े टुकड़ों में से जो छोटे-मोटे टुकड़े निकले थे, माँ ने उन सबको काटकर महीन कर डाला। उन्होंने उनमें नमक, मिर्च और 'सेज' नामक वनस्पति की पत्तियाँ मिलाईं। तब उन्होंने हाथ से सबको सानकर गोलियाँ बना डालीं। इन गोलियों को उन्होंने कड़ाही में डालकर बाहर छाया में रख दिया जहाँ जम जाने पर वह जाड़े भर खाने योग्य रहेंगे। यह 'सासेज' था।

जब गोश्त काटने और पकाने का समय समाप्त हो गया तो बाहर ओसारे में "सासेज", 'हेड-चीज', बड़ी बड़ी बोतलों में भरी हुई चरबी और सफेद "साल्ट-पॉर्क" का पीपा रक्खा था और ऊपरी मंजिल के कमरे में धुआँ खाई हुई जाँघें और कंधे थे।

लम्बी शीत ऋतु के लिए छोटे घर में काफी अच्छा खाना भरकर रक्खा था। भंडारघर, ओसारा, तहखाना और ऊपरी मंजिल का कमरा—सब भरे थे।

अब लॉरा और मेरी घर के भीतर खेलती थीं क्योंकि बाहर बहुत ठंड पड़ती थी और पेड़ों से बादामी पत्तियाँ गिर रही थीं। खाना

पकाने वाली अँगीठी में आग सदा जला करती थी। रात को लॉरा का पिता आग के चारों ओर राख का ढेर लगा देता था जिससे प्रात:काल तक वह न बुझे।



ऊपरी मंजिल का कमरा खेलने के लिए बड़ा सुन्दर स्थान था। बड़े, गोल और रंगीन कद्दू सुन्दर कुर्सियों और मेजों का काम देते थे। ऊपर लाल मिर्चें और प्याज लटके थे। कागज में लपेटी हुई सूअर की जाँघें और हिरण का गोश्त भी लटका हुआ था। सूखी हुई जड़ी-बूटियों के गुच्छों, खाना पकाने के लिए मसालों और दवा के लिए कड़वी जड़ी-बूटियों के कारण उस स्थान में गर्दीले मसालों की सुगन्ध भर गई थी।

प्राय: बाहर सुनसान में ठंडी हवा जोर से बहती थी परन्तु ऊपरी ंजिल के कमरे में लॉरा और मेरी कद्दुओं और लौकियों के घरौंदे बनाकर सुखपूर्वक खेला करती थीं।

मेरी लॉरा से बड़ी थी और उसके पास चिथड़े की एक गुड़िया थी जिसका नाम नेटी था। लॉरा के पास रूमाल में लपेटा हुआ केवल एक भुट्टा था परन्तु वह अच्छी गुड़िया का काम देता था। उसका नाम सूसन था। भुट्टा होना सूसन का अपराध नहीं था। कभी-कभी मेरी लॉरा को अपनी गुड़िया नेटी दे देती थी परन्तु वह ऐसा केवल तब करती थी जब सूसन को दिखाई नहीं पड़ता था।

सबसे मजेदार समय रात को होता था। भोजन के बाद लॉरा का पिता ओसारे से आग के पास अपने फन्दे लाता था। वह उनको रगड़कर चमका देता था और भालू की चरबी में पंख डुबोकर फन्दों के कब्जों और कड़ाही की कमानी पर पोतता था। उसके पास छोटे, मँझले और बड़े भालू पकड़नेवाले फन्दे थे। बड़े फन्दे के जबड़ों में ऐसे दाँत थे जो यदि मनुष्य की टाँग पर बन्द होते तो उसे तोड़ सकते थे।

लॉरा का पिता फन्दों में ग्रीज लगाते समय उसे और मेरी को हास्यपूर्ण कहानियाँ सुनाता था और बाद में सारंगी बजाता था।

दरवाजे और खिड़कियाँ कसकर बन्द रहती थीं और खिड़कियों की चौखटों की दरारों में कपड़ा ठूँस दिया गया था जिससे भीतर ठंड न आवे। परन्तु सामनेवाले दरवाजे के निचले भाग में एक छेद था जिससे "ब्लैक सूसन" नामक बिल्ली रात-दिन अपनी इच्छा के अनुसार आ-जा सकती थी । वह सदा बड़ी शीघ्रता से आती-



जाती थी। इससे उसकी दुम किवाड़ में नहीं दबती थी जब वह उसके निकल जाने पर बन्द होता था।

एक रात को जब लॉरा के पिता फन्दों में ग्रीज लगा रहे थे तब ब्लैक सूसन को भीतर आते हुए देखकर उन्होंने कहा——

"एक समय की बात है कि एक मनुष्य के पास दो बिल्लियाँ थीं। उनमें से एक बड़ी थी और दूसरी छोटी।"

लॉरा और मेरी दौड़कर उनके घुटनों पर झुक गईं कि शेष कहानी को सुन सकें।

पिता ने दोहराया, "उसके पास दो बिल्लियाँ थीं। एक बड़ी बिल्ली थी और दूसरी छोटी थी। इसलिए उसने बड़ी बिल्ली के आने-जाने के लिए दरवाजे में एक बड़ा छेद बनवाया और छोटी बिल्ली के आने-जाने के लिए एक छोटा छेद बनवाया।"

यह कहकर पिता रुक गया।

मेरी ने कहा, "परन्तु छोटी बिल्ली क्यों नहीं····"

लॉरा बीच ही में बोल उठी, "क्योंकि बड़ी बिल्ली उसको नहीं आने-जाने देती थी।"

पिता ने कहा, "लॉरा, यह बात बहुत अशिष्टतापूर्ण है। जब कोई बोल रहा हो तो तुम्हें बीच में नहीं बोल देना चाहिए।"

"परन्तु मैं समझता हूँ," उन्होंने कहा, "उस मनुष्य की अपेक्षा तुम दोनों अधिक समझदार हो जिसने बिल्लियों के आने-जाने के लिए दरवाजे में दो छेद बनवाये थे।"

तब उन्होंने फन्दे रख दिए, सन्दूक में से सारंगी निकाली और उसे बजाने लगे। यह सबसे अधिक सुखद समय था।

अध्याय २



जाड़े के दिन और रातें

बर्फ पड़नी आरम्भ हुई। उसके साथ ही कठोर जाड़ा आया। प्रत्येक दिन प्रातःकाल पिता अपनी बन्दूक और जाल लेकर बड़े जंगल में जाते थे। दिन भर वह खाड़ी के किनारे चूहों और नेवलों के लिए जाल लगाते थे। लोमड़ियाँ और भेड़िये पकड़ने के लिए वह मँझोले जाल लगाते थे। उन्हें आशा थी कि जाड़े के दिनों में अपनी माँद में भालुओं के सो जाने से पहले ही वह कोई मोटा भालू पकड़ सकेंगे। इसलिए वह बड़े जाल लगाते थे।

एक दिन प्रातःकाल वह जंगल से वापस आये, घोड़े और गाड़ी ली और फिर जल्दी से चले गये। उन्होंने एक भालू को गोली मारी थी। लारा और मेरी खुशी से उछलती थीं और ताली बजाती थीं। मेरी चिल्लाती थी—

"मैं भालू की टाँग के नीचे का भाग लूँगी।"

मेरी नहीं जानती थी कि भालू की टाँग का निचला भाग कितना भारी होता है।

जब पिता वापस आये तब उनकी गाड़ी में एक भालू और एक सूअर दोनों थे। अपने हाथ में बड़ा जाल और कन्धे पर

बन्दूक रक्खे हुए वह जंगल में जा रहे थे। जब उन्होंने बर्फ से ढके हुए एक बड़े देवदार के पेड़ का चक्कर लगाया तो पेड़ की दूसरी ओर उन्होंने एक भालू देखा।

भालू ने अभी-अभी सूअर को मारा था और खाने के लिए उसे उठा रहा था। पिता ने बतलाया कि भालू अपनी पिछली टाँगों पर खड़ा हो रहा था और सूअर को अपने पंजों में इस प्रकार पकड़े था मानो वे उसके हाथ हों।

पिता ने भालू को गोली मार दी। यह जानने का कोई साधन नहीं था कि सूअर कहाँ से आया है अथवा किसका है। इसलिए पिता उसे अपने घर ले गये।

अब उन लोगों के पास ताजा गोश्त इतना था कि काफी दिनों तक चल सकता था। दिन और रात में इतनी ठंड पड़ती थी कि सन्दूक में रक्खा हुआ सूअर का मांस और पिछले दरवाजे के



बाहर ओसारे में लटकाया हुआ भालू का मांस बर्फ से जम गया। वह पिघलता नहीं था।

जब माता को भोजन के लिए ताजे गोश्त की जरूरत होती थी तो पिता जमे हुए भालू अथवा सूअर के मांस में से कुल्हाड़ी से एक बड़ा टुकड़ा काट लेते थे। परन्तु उबाले हुए मांस की गोलियाँ, नमक लगाया हुआ सूअर का मांस, धुआँ दिखाई हुई सूअर की जाँघें या हिरण का गोश्त माता स्वयं ओसारे या ऊपर की मंजिलवाले कमरे से ले सकती थीं।

बराबर तुषारपात होता रहा और घर के चारों ओर तुषार-राशि एकत्र हो गई। प्रातःकाल खिड़कियों के शीशों पर तुषार जमा हुआ दिखाई पड़ता था। उन पर पेड़ों, फूलों और परियों के सुन्दर चित्र बने हुए दिखते थे।

माता कहती थीं कि रात को जब सब लोग सोये रहते हैं तब जैक तुषार आकर चित्र बना देता है। लॉरा सोचती थी कि जैक तुषार बर्फ की भाँति बिलकुल सफेद एक छोटा आदमी है जो चमकीली, सफेद, नुकीली टोपी और मृगचर्म के बने हुए बूट पहने रहता है। उसके कोट और दस्ताने सफेद होते हैं। वह अपनी पीठ पर बन्दूक नहीं लिये रहता। परन्तु हाथों में वह तेज और चमकीले औजार लिये रहता है जिनसे वह चित्र बनाता है।

लारा और मेरी को माता का अंगुलित्राण लेने की अनुमति मिल गई थी। वे शीशे पर पड़े तुषार में सुन्दर वृत्त बनाती थीं। परन्तु वे उन चित्रों को कभी नहीं बिगाड़ती थीं जो जैक तुषार रात को बना जाता था।

जब वे अपने मुँह खिड़की के शीशे के पास रखकर उस पर फूँकती थीं तब सफेद तुषार पिघल जाता था और बूँद-बूँद होकर

बहने लगता था। तब वे देख सकती थीं कि बाहर तुषार-राशि एकत्र है और बड़े-बड़े काले वृक्ष बिना पत्तियों के हो गये हैं। उनकी हल्की नीली छाया सफेद तुषार पर दिखाई पड़ती थी।

लॉरा और मेरी काम में माता की सहायता करती थीं। प्रति दिन प्रातःकाल रकाबियाँ धोनी होती थीं। मेरी लॉरा की अपेक्षा अधिक रकाबियाँ धोती थी क्योंकि वह बड़ी थी परन्तु लॉरा अपना प्याला और तश्तरी सदैव बड़ी सावधानी से धोती थी।

जब तक रकाबियाँ धोकर अलग रक्खी जाती थीं तब तक



पहियेदार बिस्तर सूख जाता था। तब उसके एक तरफ मेरी खड़ी हो जाती थी और दूसरी तरफ लॉरा। वे ओढ़ना को सीधा करती थीं और पैताने की तरफ तह कर देती थीं। फिर वे तकियों को ठीक करके यथास्थान रख देती थीं। तब माँ पहियेदार बिस्तर को धक्का देकर बड़े बिस्तर के नीचे ढकेल देती थीं।

यह करने के बाद माता उस दिन के काम को करना आरम्भ करती थीं। प्रत्येक दिन के लिए विशेष कार्य निर्धारित था। माँ कहा करती थीं—

सोमवार को कपड़े धोओ,
मंगल को लोहा करो,
बुध को मरम्मत करो,
बृहस्पति को दूध मथो,
शुक्र को सफाई करो,
शनि को रोटी पकाओ,
रविवार को आराम करो।

लॉरा को मथने और रोटी पकाने के दिन सप्ताह के अन्य दिनों से अधिक पसन्द थे।

जाड़े में गर्मी के दिनों की भाँति मलाई पीली नहीं होती थी और उससे जो मक्खन निकलता था वह सफेद होता था। वह गर्मी के मक्खन जैसा सुन्दर नहीं दिखाई पड़ता था। माँ चाहती थीं कि खाने की मेज पर की प्रत्येक वस्तु सुन्दर हो। इसलिए वह मक्खन को रँग देती थीं।

वह एक ऊँचे मथने के बर्तन में मलाई डालकर उसे अँगीठी के पास रखती थीं जिससे वह गर्म हो जाय। तब वह एक लम्बी नारंगी रंग की गाजर धोकर खुरचती थीं। फिर उसे एक टिन के

पेंदे पर रगड़ती थीं जिसमें पिता ने छोटे-छोटे छेद कर दिये थे। उस पर रगड़कर माँ गाजर के पतले-पतले टुकड़े कर डालती थीं।

गाजर के इन टुकड़ों को वह दूध में डालकर दूध के बर्तन को अँगीठी पर रखती थीं। जब दूध गर्म हो जाता था तब वह दूध और गाजर के टुकड़ों को कपड़े के एक थैले में उँड़ेल देती थीं। तब वह पीला दूध मथने के बर्तनों में निचोड़ देती थीं। इस प्रकार मलाई रंगीन हो जाती थी। अब मक्खन भी पीला होता था।

जब दूध निचोड़ लिया जाता था तब जो गाजर बच रहती थी उसे लॉरा और मेरी को खाने की आज्ञा दे दी जाती थी। मेरी चाहती थी कि मुझे आधी से अधिक मिले, क्योंकि मैं बड़ी हूँ। लॉरा कहती थी कि मुझे अधिक मिलना चाहिए क्योंकि मैं छोटी हूँ। किन्तु माँ कहती थीं कि दोनों बराबर बाँट लो। यह बहुत अच्छी बात थी।

जब मलाई तैयार हो जाती थी तब माँ लकड़ी की लम्बी मथानी को खौलाकर मथने के बर्तन में रखती थीं और फिर बर्तन के मुँह पर ढक्कन रख देती थीं। ढक्कन के बीच में एक गोल छेद था। माँ छेद में मथानी डालकर मलाई को मथती थीं।

वह बहुत देर तक मथती थीं। कभी-कभी जब माँ आराम करती थीं तब मेरी मथानी चलाती थी। परन्तु वह इतनी भारी थी कि लॉरा उसे नहीं चला सकती थी।

पहले छोटे छेद के चारों ओर मलाई की चिकनी बूँदें जम जाती थीं। बहुत देर बाद उनमें दाने दिखाई पड़ने लगते थे। तब माँ धीरे-धीरे मथती थीं और बाद में मथानी पर मक्खन के दाने दीख पड़ते थे।

जब माँ बर्तन का ढक्कन हटाती थीं तब मथे हुए दूध में डूबता हुआ मक्खन का सुनहला डला दृष्टिगोचर होता था। तब माँ लकड़ी के चम्मच से निकालकर उसे लकड़ी के प्याले में रखती थीं और उसको चम्मच से उलट-पुलटकर धोती थीं। फिर वह उसमें नमक मिला देती थीं।

अब मथने का सबसे अच्छा भाग आता था। माँ मक्खन को एक साँचे में रखती थीं। साँचे के ढीले पेंदे में दो पत्तियों सहित झर-बेरी का चित्र खुदा हुआ था।



माँ चम्मच से साँचे में मक्खन भर देती थीं। फिर वह उसे रकाबी में उलट देती थीं और ढीले पेंदे के हत्थे को दबा देती थीं। सुनहले मक्खन का छोटा, ठोस डला बाहर निकल आता था। उसके सिरे पर झरबेरी और उसकी पत्तियों का चित्र बना होता था।

जब माँ झरबेरी

और उसकी पत्तियों का चित्र बनी हुई टिकिया साँचे से निकालती थीं तब लॉरा और मेरी उसकी दो तरफ खड़ी होकर आश्चर्य से उसकी क्रिया को देखती रहती थीं। अब माँ उनको ताजा मखनियाँ दूध खूब पीने को देती थीं।

शनिवार को जब माँ रोटी बनाती थीं तब वह प्रत्येक लड़की को थोड़ा गूँधा हुआ आटा देती थीं जिससे वे डबल रोटी बनाती थीं। कभी-कभी उनको मिठाई बनाने के लिए भी सना हुआ आटा दिया जाता था। एक बार लॉरा ने समोसा बनाया था।

जब दिन का काम समाप्त हो जाता था तब माँ कभी-कभी उनके लिए कागज की गुड़ियाँ बनाती थीं। वह कड़े सफेद कागज में से गुड़ियों को काटती थीं और पेन्सिल से उनका चेहरा खींच देती थीं। फिर रंगीन कागजों में से वह कपड़े, टोपियाँ और फीते आदि काटती थीं जिससे लॉरा और मेरी अपनी गुड़ियों को सुन्दर वस्त्र पहना सकें।

परन्तु सबसे आनन्दप्रद समय रात को होता था, जब पिता घर आते थे।

वह बर्फीले जंगलों में जाल लगाकर लौटते थे। उनकी मूँछों पर बर्फ के छोटे-छोटे टुकड़े जमे रहते थे। वह दरवाजे में ऊपर दीवार पर बन्दूक टाँगते थे और अपनी बालदार टोपी, कोट और दस्ताने उतार कर कहते थे—लॉरा कहाँ है?

लॉरा और मेरी दौड़कर उसके पास जाती थीं और जब तक वह आग तापते थे तब तक वे उसकी गोद में बैठी रहती थीं। फिर वह अपना कोट, टोपी और दस्ताने पहनकर घर का काम करने जाते थे। वह आग जलाने के लिए काफी लकड़ियाँ लाते थे।

कभी-कभी जब पिता कोई जानवर नहीं फँसा पाते थे या

जब वह रोज की अपेक्षा शीघ्र शिकार पा जाते थे तब जल्द घर लौट आते थे। ऐसे अवसरों पर वह लॉरा और मेरी के साथ खेल खेलते थे।

एक खेल "पागल कुत्ता" कहलाता था। वे लोग उसे बहुत पसन्द करते थे। पिता अपनी उँगलियों से अपने घने बादामी बालों को खड़ा कर देते थे। फिर वह बकैयाँ हो जाते थे और गुर्राते हुए कमरे भर में लॉरा और मेरी का पीछा करते थे। जब वे नहीं भाग सकती थीं तब वह उनको घेरने का प्रयास करते थे।

वे शीघ्रतापूर्वक भाग जाती थीं और उनकी पकड़ में नहीं आती थीं। किन्तु एक बार उन्होंने उनको अँगीठी के पीछे लकड़ी के सन्दूक के निकट पकड़ लिया। वे पिता के निकट से होकर नहीं भाग सकती थीं और कोई दूसरा रास्ता नहीं था।

तब पिता इतनी भयानकता से गुर्राये, उनके बाल ऐसे बिखरे थे और आँखें ऐसी डरावनी थीं कि सब कुछ बिलकुल सत्य प्रतीत होता था। मेरी इतनी भयभीत हो गई कि वह चल नहीं सकती थी। किन्तु जब पिता और निकट गये तब लॉरा चिल्लाई और पागल की तरह कूदकर लकड़ी के सन्दूक पर चढ़ गई। उसने मेरी को भी अपने साथ खींच लिया।

तुरन्त पागल कुत्ता गायब हो गया। उसकी जगह पर पिता खड़े थे। उनकी नीली आँखें चमक रही थीं और वह लॉरा को देख रहे थे।

उन्होंने उससे कहा, "देखने में तो तुम इतनी नन्हीं सी हो परन्तु, भगवान् की कसम है, तुम इतनी मजबूत हो जितना फ्रांसीसी टट्टू।"

माँ ने कहा—"चार्ल्स, तुम्हें बच्चों को इस प्रकार नहीं डराना चाहिए। देखो, उनकी आँखें कितनी बड़ी हो गई हैं।"

पिता ने देखा। तब उन्होंने अपनी सारंगी उतारी और उसको बजाने तथा गाने लगे:

"यांकी डूड्ल नगर गया
पहनकर धारीदार पतलून,
बार बार वह कहता था
नहीं नगर देखा मैंने,
क्योंकि थे वहाँ भवन अनेक।"



लॉरा और मेरी को पागल कुत्ते के बारे में बिलकुल याद न रही।

"वहाँ देखी उसने बन्दूकें
जैसे 'मेपल' वृक्ष के कुन्दे,
घुमाने के वास्ते जिन्हें
चाहिए थे बैलों के जोड़े।
चलाने के लिए उन्हें
चाहिए थी पीपों बारूद
आवाज उनकी पहुँचती थी
सारे देश के ओर-छोर।"

पिता अपने पैर से ताल दे रहे थे और लॉरा हाथ से ताली बजाती थी जब वह गाते थे--



"और मैं गाऊँगा यांकी डूड्ल-डी-डू
और मैं गाऊँगा यांकी डूड्ल,
और मैं गाऊँगा यांकी डूड्ल-डी-डू
और मैं गाऊँगा यांकी डूड्ल।"

सुनसान बड़े जंगलों, बर्फ और ठंड में कुन्दों का बना हुआ अकेला घर गर्म और सुखद था। वहाँ माँ, पिता, मेरी, लॉरा और बच्चा कैरी प्रसन्न और सुखी थे विशेषकर रात को।

तब अग्निकुंड में आग चमकती रहती थी। ठंड, अंधकार और जंगली जानवर अन्दर नहीं आ सकते थे और चितकबरा कुत्ता जैक और काली सूसन नामक बिल्ली आग की लपटों के कारण आँख मींचते हुए बैठे रहते थे।

माँ अपनी हिलती हुई कुर्सी पर बैठी रहती थीं। मेज पर रक्खी हुई बत्ती के प्रकाश में वह कपड़े सिलती थीं। बत्ती तेज प्रकाश देती थी। उसके शीशे के पेंदे में मिट्टी के तेल के साथ नमक रक्खा था जिससे वह धड़ाके से फट न जाय और नमक में लाल फलालैन के छोटे-छोटे टुकड़े मिले थे जिससे वह सुन्दर दिखाई पड़ता था।

लॉरा बत्ती देखना बहुत पसन्द करती थी। उसकी चिमनी बहुत साफ और चमकीली थी, उसकी पीली लपटें निश्चल जलती थीं और उसके पेंदे में फलालैन के टुकड़ों के कारण मिट्टी का तेल रंगीन दिखाई पड़ता था। वह अग्निकुंड में आग को देखना पसन्द करती थी जिसकी लपटें जगमगाती और झिलमिलाती रहती थीं। वे कुन्दों के ऊपर कभी पीली, कभी लाल और कभी हरी जलती थीं। वे सुनहले और लाल कोयलों के ऊपर नीली नीली मँडराती थीं।

और पिता तब कहानियाँ कहते थे।

जब लॉरा और मेरी उनसे कहानियों के लिए प्रार्थना करती थीं, तब वह उनको अपने घुटनों के बीच में ले लेते और अपने लम्बे गलमुच्छों से वह उनको गुदगुदाते थे जिससे वे जोर से हँसती थीं। उनकी आँखें नीली और प्रसन्न थीं।

एक रात को पिता ने काली सूसन को देखा जो आग के सामने लेटी थी और अपने पंजों को कभी तो फैलाती थी और कभी समेट लेती थी। उन्होंने कहा—

"क्या तुम जानते हो कि तेंदुआ बिल्ली-जैसा होता है? बड़ी, जंगली बिल्ली?"

लारा ने कहा, "नहीं।"

पिता ने कहा, हाँ वह बिल्ली-जैसा होता है। कल्पना करो कि काली सूसन जैक से बड़ी है और जब जैक गुर्राता है, उससे भी अधिक भयानक है। तब वह ठीक तेंदुए की तरह होगी।

उन्होंने ने लॉरा और मेरी को और आराम से अपने घुटनों पर बैठाकर कहा, "मैं तुम्हें पितामह और तेंदुआ के विषय में बताऊँगा।"

लॉरा ने पूछा, "तुम्हारे पितामह?"

उन्होंने उत्तर दिया, "नहीं, लॉरा, तुम्हारे पितामह, मेरे पिता।"

लॉरा ने कहा, "ओह! और वह पिता की बाँह से और चिपक गई। वह अपने पितामह को जानती थी। वह बड़े जंगलों में बहुत दूर कुन्दों के बने हुए एक बड़े घर में रहते थे। पिता ने आरम्भ किया—



पितामह और तेंदुए की कहानी

"एक दिन तुम्हारे पितामह शहर गये और वापस लौटने में उन्हें देर हो गई। जब वह घोड़े पर सवार होकर घर आ रहे थे तब इतना अँधेरा था कि वह मुश्किल से सड़क देख सकते थे और जब उन्होंने एक तेंदुए को चिल्लाते हुए सुना तब वह भयभीत हो गये, क्योंकि उनके पास बन्दूक नहीं थी।"

लॉरा ने पूछा, "तेंदुआ कैसे चिल्लाता है ?"

पिता ने कहा, "स्त्री की तरह। इस तरह।" तब वह ऐसे चिल्लाये कि लॉरा और मेरी भय से काँपने लगीं।

माँ कुर्सी पर उछल पड़ी और बोली। "चार्ल्स, दया करो।"

परन्तु लॉरा और मेरी इस प्रकार डराया जाना पसन्द करती थीं।

"पितामह को पीठ पर लिये हुए घोड़ा तेजी से भागा, क्योंकि वह भी भयभीत था। परन्तु वह तेंदुए से दूर नहीं भाग सकता था। तेंदुए ने अँधेरे जंगलों में उनका पीछा किया। वह भूखा तेंदुआ था। वह इतनी तेजी से पीछा करता था जितनी तेजी से घोड़ा भाग रहा था। कभी तो वह सड़क की एक तरफ चीखता था और कभी दूसरी तरफ। वह सदा निकट, पर पीछे होता था।

"पितामह जीन पर आगे झुके हुए थे और घोड़े को तेज दौड़ाते थे। जितनी तेजी से हो सकता था उतनी तेजी से घोड़ा

दौड़ रहा था और तब भी तेंदुआ उसके निकट पीछे चीखता हुआ आ रहा था।

"तब पितामह ने उसकी झलक देखी। वह लगभग उनके सिर के ऊपर एक पेड़ की चोटी से दूसरे पेड़ की चोटी पर कूदता था।

"वह विशाल, काला तेंदुआ था। जैसे काली सूसन चूहे पर झपटती है वैसे ही वह हवा में कूदता था। वह काली सूसन से कई गुना बड़ा था। वह इतना बड़ा था कि यदि वह पितामह के ऊपर कूद पड़ता तो अपने बड़े, तेज पंजों और तेज दाँतों से उनको मार डालता।

"अपने घोड़े पर बैठे हुए पितामह उससे इस प्रकार भाग रहे थे जैसे चूहा बिल्ली को देखकर भागता है।

"अब तेंदुआ नहीं चिल्लाता था और पितामह उसको नहीं देखते थे। परन्तु वह जानते थे कि उनके पीछे अँधेरे जंगलों में कूदता हुआ वह उनके पीछे आ रहा है। घोड़ा अपनी पूरी शक्ति से भाग रहा था।

"अन्त में दौड़ता हुआ घोड़ा पितामह के घर के पास पहुँच गया। पितामह ने तेंदुए को उछलते हुए देखा। वह घोड़े पर से कूदकर दरवाजे के निकट पहुँचे। भीतर घुसकर उन्होंने दरवाजे को बन्द कर दिया। घोड़े की पीठ पर जहाँ पितामह बैठे थे वहीं तेंदुआ बैठ गया।

"घोड़ा भयानक रूप से चिल्लाता हुआ भागने लगा। वह बड़े जंगलों में भागा जा रहा था। तेंदुआ उसकी पीठ पर सवार होकर अपने पंजों से उसका मांस निकाल रहा था किन्तु पितामह ने दीवार पर से बन्दूक उठाई और खिड़की के पास पहुँचे। वहाँ से उन्होंने तेंदुए को गोली मार दी।

"पितामह कहते थे कि अब कभी मैं बिना बन्दूक लिये हुए बड़े जंगलों में नहीं जाऊँगा।"

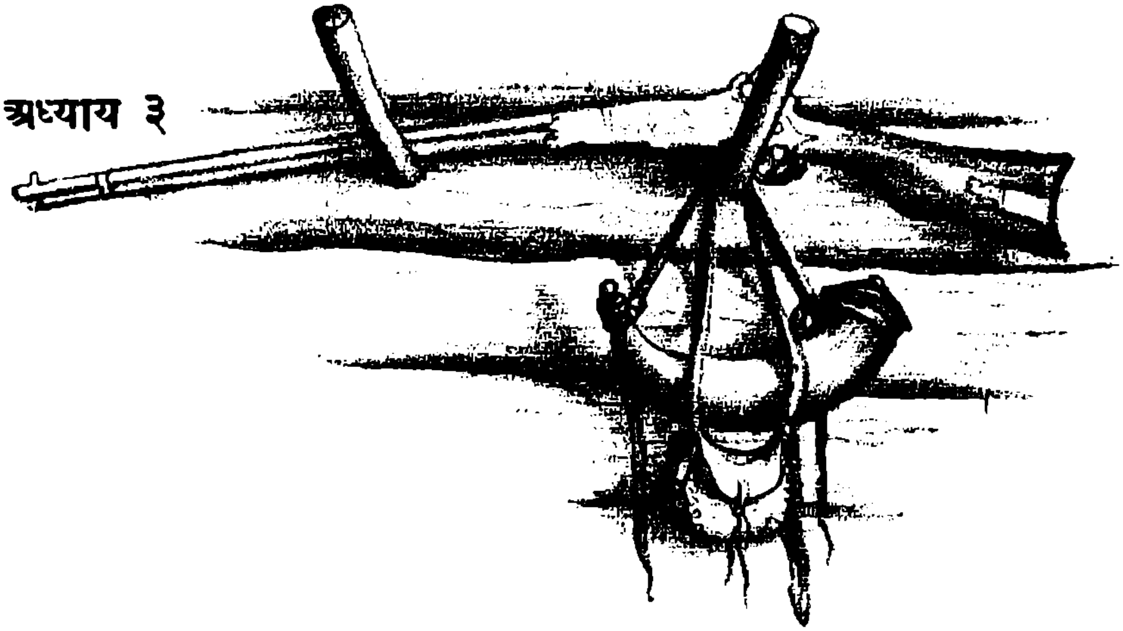
जब पिता यह कहानी कहते थे, तब लॉरा और मेरी काँपती थीं और उनके निकट दुबक जाती थीं। वे उनके घुटनों पर सुख-पूर्वक तथा सुरक्षित थीं। उनकी मजबूत बाँहें उनको चारों तरफ से लपेटे थीं।



गर्म आग के सामने पिता के घुटनों पर बैठना उन्हें बहुत अच्छा लगता था जब काली सूसन आग के पास म्याऊँ-म्याऊँ करती हो और अच्छा कुत्ता जैक उसकी बगल में लेटा हो। जब वे किसी भेड़िये को बोलते हुए सुनते थे, तब जैक का सिर उठ जाता था और उसकी पीठ पर के बाल खड़े हो जाते थे। किन्तु लॉरा और मेरी उस आवाज को अँधेरे और ठंढे जंगलों में सुनकर डरती नहीं थीं।

वह कुन्दों के बने हुए अपने छोटे घर में सुख से थीं। उसके चारों तरफ बर्फ की राशि इकट्ठी हो गई थी। ऐसा मालूम होता था मानो हवा आग के पास पहुँच न सकने के कारण रो रही हो।

अध्याय ३



लम्बी बन्दूक

प्रत्येक दिन संध्या को, कहानी कहने के पहले, पिता दूसरे दिन शिकार करने के लिए गोलियाँ बनाया करते थे।

लॉरा और मेरी उनकी सहायता करती थीं। वे लम्बे दस्ते-वाला बड़ा चम्मच, सीसे के टुकड़ों से भरा हुआ सन्दूक और गोलियाँ बनानेवाला साँचा लाती थीं। तब पिता अँगीठी के निकट बैठकर गोलियाँ बनाते थे और वे उनके दोनों तरफ बैठकर देखती थीं।

पहले वह बड़े चम्मच में सीसे के टुकड़ों को रखकर उनको पिघलाते थे। जब सीसा पिघल जाता था तब वह उसे गोलियाँ बनाने के साँचे के छोटे छेद में उँडेलते थे। एक मिनट प्रतीक्षा करने के पश्चात् वह साँचे को खोलते और उसमें से चमकीली गोली निकाल लेते थे।

गोली इतनी गर्म होती थी कि उसको छूना उचित नहीं था। किन्तु उसकी चमक इतनी आकर्षक होती थी कि कभी कभी

लॉरा और मेरी उसको छूने से बाज नहीं आ सकती थीं। ऐसी दशा में उनकी उँगलियाँ जल जाती थीं, परन्तु वह कुछ कहती नहीं थीं, क्योंकि पिता ने उनको पहले ही मना कर दिया था। अतएव यदि उनकी उँगलियाँ जल जाती थीं तो यह स्वयं उनका दोष था। उन्हें अपने पिता की आज्ञा का पालन करना चाहिए था। अतएव उन्हें ठंडी करने के लिए वे उन्हें अपने मुँह में दबा लेती थीं और पिता को अन्य गोलियाँ बनाते हुए देखती थीं।

फर्श पर जब गोलियों की चमकीली ढेरी एकत्र हो जाती थी तब पिता गोलियाँ बनाना बन्द कर देते थे। वह उनको ठंडी हो जाने देते थे। फिर साँचे के छेद में जो कुछ सीसा जमा रहता था उसे वह चाकू से खुरच देते थे। जो कुछ खुरचन निकलती थी उसे वह सावधानी से एकत्र कर लेते थे और दूसरी बार उसे पिघलाकर गोलियाँ बनाते थे।

तैयार गोलियों को वह एक थैले में रख लेते थे। यह सुन्दर थैला माता ने एक हिरण के चमड़े से बनाया था जिसे पिता ने मारा था।

गोलियाँ बना लेने के बाद पिता दीवार से अपनी बन्दूक उतारकर साफ करते थे। दिन भर बाहर बर्फीले जंगलों में रहने के कारण उसमें कुछ नमी आ जाती थी और बारूद के धुएँ के कारण उसका भीतरी भाग कुछ गन्दा हो जाता था।

इसलिए पिता बन्दूक की नली के नीचे से लोहे का छड़ निकालकर उसके एक सिरे पर एक टुकड़ा साफ कपड़ा बाँधते थे। वह कड़ाही में बन्दूक का कुन्दा रखकर उसे खड़ी कर देते थे और बन्दूक की नली में चाय की देकची में से गर्म पानी छोड़ते थे। तब वह नली में लोहे का छड़ डालकर उससे रगड़ते थे। बारूद के धुएँ से

काला पड़ा हुआ गर्म पानी बन्दूक के उस छेद से निकलता जाता था जो उस समय टोपी से बन्द कर दिया जाता था जब बन्दूक में गोली भरी होती थी।

पिता बराबर गर्म पानी छोड़ते जाते थे और छड़ पर बँधे हुए कपड़े से उसे साफ करते जाते थे जब तक नली में से साफ पानी नहीं निकलने लगता था। इस तरह बन्दूक साफ हो जाती थी। पानी सदैव गर्म होता था जिससे गर्म लोहा तुरन्त सूख जाय।

तब पिता ग्रीज लगा हुआ साफ चिथड़ा छड़ में बाँध देते थे और जब बन्दूक गर्म रहती थी तभी उसके भीतरी भाग में अच्छी तरह ग्रीज लगा देते थे। ग्रीज लगे हुए दूसरे कपड़े से वह बन्दूक का बाहरी भाग पोंछ देते थे। इस प्रकार उसका प्रत्येक भाग चिकना और चमकदार हो जाता था।

अब वह बन्दूक में गोली भरने के लिए तैयार हो जाते थे और लॉरा तथा मेरी उनकी सहायता करती थीं। वह सीधे तनकर खड़े हो जाते थे। उनके दोनों तरफ लॉरा और मेरी खड़ी होती थीं। लम्बी, चमकीली बन्दूक को कुन्दे पर खड़ी करके और उसे अपने हाथ में पकड़कर वह कहते थे—

"अब तुम लोग मुझे ध्यान से देखना और यदि मैं कोई गलती करूँ तो मुझे बतलाना।"

अतएव वे बड़े ध्यान से उन्हें देखती थीं परंतु वह कभी भी गलती नहीं करते थे।

लॉरा उन्हें गाय का चिकना और पालिश किया हुआ सींग देती थी जिसमें बारूद भरी होती थी। सींग के सिरे पर धातु की बनी टोपी लगी थी। पिता इस टोपी में बारूद भरकर बन्दूक

की नली में उडेलते थे। तब वह बन्दूक को थोड़ा हिलाते थे और नली को थपथपाते थे जिससे बारूद पेंदे में एकत्र हो जाय।

फिर वह पूछते थे मेरा वह डिब्बा कहाँ है जिसमें मैं ग्रीज लगे हुए कपड़े के टुकड़े रखता हूँ? यह सुनकर मेरी उन्हें टिन का वह डिब्बा दे देती थी।



पिता ग्रीज लगा हुआ कपड़े का टुकड़ा बन्दूक के मुँह पर रखते थे और उसके ऊपर एक बड़ी चमकीली गोली रखते थे। फिर लोहे के छड़ से गोली और कपड़े को बन्दूक की नली में ठूँस देते थे।

तब वह बारूद में उनको छड़ से कसकर कूँचते थे। जब वह उनको छड़ से ठोंकते थे तब छड़ बन्दूक की नली में उछलता था। पिता उसको पकड़कर फिर नली में ठूँसते थे। वह बहुत देर तक ऐसा करते रहते थे।

इसके बाद वह छड़ को बन्दूक की नली के निकट उसके स्थान पर फिर रख देते थे। फिर वह अपनी जेब से टोपियों का एक डिब्बा निकालते थे। वह बन्दूक के घोड़े को उठाते थे और उसके नीचे जो खोखली खूँटी होती थी उस पर एक छोटी चमकीली टोपी पहना देते थे।

वह धीरे से और बड़ी सतर्कता से घोड़े को गिरा देते थे। यदि



घोड़ा जोर से गिरता तो बन्दूक छूट जाती और धाँय की आवाज होती।

अब बन्दूक भर जाती थी और पिता उसको दरवाजे के ऊपर दो टेढ़ी खूँटियों पर टाँग देते थे।

पिता जब घर पर होते थे तब बन्दूक सदैव दरवाजे के ऊपर लकड़ी की दोनों टेढ़ी खूँटियों पर रक्खी होती थी। पिता ने एक हरी लकड़ी को अपने चाकू से काटकर ये खूँटियाँ बनाई थीं और उनके सीधे सिरों को कुन्दों में गहरा गाड़ दिया था। बाहर के सिरे ऊपर की ओर झुके हुए थे और उन पर बन्दूक सुरक्षित रक्खी रहती थी।

बन्दूक सदैव भरी रहती थी और दरवाजे के ऊपर रक्खी रहती थी जिससे जब कभी पिता को उसकी आवश्यकता पड़े वह जल्दी तथा सरलता से उसे पा सकें।

पिता जब बड़े वन में जाते थे तब सदा यह देख लिया करते थे कि उनके थैले में गोलियाँ भरी हैं या नहीं। वह ग्रीज लगे हुए कपड़ों और टोपियों के डिब्बों को भी अपनी जेबों में रख लेते थे। बारूद भरा हुआ सींग और एक छोटी तेज कुल्हाड़ी उनकी पेटी से लटकती रहती थी। गोली भरी हुई तैयार बन्दूक वह कंधे पर रक्खे रहते थे।

गोली चलाने के बाद वह तुरन्त बन्दूक भर लिया करते थे क्योंकि वह कहते थे कि खाली बन्दूक से मैं खतरे का सामना नहीं करना चाहता।

जब कभी वह किसी जंगली जानवर पर गोली चलाते थे तब वह रुककर फिर बन्दूक भर लेते थे। वह बारूद को नापकर बन्दूक की नली में भरते थे, और उसे हिलाकर पेंदे में पहुँचा देते थे। वह ग्रीज लगे कपड़े और गोली को छड़ से ठूँसते थे। इसके बाद घोड़े

के नीचे वह एक नई टोपी रखते थे। तब वह फिर गोली चला सकते थे। जब कभी वह भालू या तेंदुए पर गोली चलाते थे तब यह आवश्यक था कि पहली ही गोली में शिकार का काम तमाम कर दें। इससे पहले कि फिर से गोली भरी जाय, घायल भालू या तेंदुआ शिकारी की जान ले सकता था।

परन्तु जब पिता अकेले बड़े वन में जाते थे तो लॉरा और मेरी कभी भयभीत नहीं होती थीं। उन्हें मालूम था कि वह भालुओं और तेंदुओं को पहली गोली से मार सकते हैं।

जब गोलियाँ बन जाती थीं और बन्दूक भर जाती थी तब कहानी कहने का समय आता था।

लॉरा उनसे प्रार्थना करती थी, "हमें 'जंगलों में आवाज' नामक कहानी सुनाइये।"

पिता उसको तरेरते थे और कहते थे, "ओह, नहीं। क्या तुम उस समय की बात नहीं सुनना चाहती जब मैं छोटा नटखट लड़का था?"

लॉरा और मेरी कहती थीं, "हाँ, हाँ, हम लोग सुनना चाहती हैं।" अतएव पिता आरम्भ करते थे।



पिता और जंगल में आवाज की कहानी

"जब मैं छोटा लड़का था और मेरी अवस्था मेरी से अधिक नहीं थी तो प्रत्येक दिन तीसरे पहर गायों को ढूँढ़ने के लिए मुझे

जंगल में जाना पड़ता था। मेरे पिता ने मुझे बताया था कि मुझे रास्ते में कभी नहीं खेलना चाहिए बल्कि अँधेरा होने से पहले ही शीघ्रतापूर्वक गायों को घर हाँक लाना चाहिए, क्योंकि जंगल में भालू, भेड़िये और तेंदुए रहते थे।

"एक दिन मैं रोज की अपेक्षा जल्दी चल पड़ा। इसलिए मैंने सोचा कि शीघ्रता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। जंगल में इतनी अधिक चीजें देखने योग्य थीं कि मुझे भूल गया कि अँधेरा होनेवाला है। पेड़ों पर लाल गिलहरियाँ थीं जो डालों पर इधर-उधर दौड़ती थीं और छोटे-छोटे खरगोश थे जो खुली जगहों में खेलते थे। तुम्हें मालूम है कि सोने के पहले छोटे-छोटे खरगोश खेल खेला करते हैं।

"मैं खेलने लगा। मैंने कल्पना की कि मैं जंगली जानवरों और अमेरिका के आदिवासियों का शिकार करनेवाला शक्तिशाली शिकारी हूँ। मैंने कल्पना की कि मैं उन आदि-वासियों से युद्ध कर रहा हूँ। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि जंगल में असभ्य तथा जंगली लोग भरे हुए हैं। तब अकस्मात् मैंने सुना कि पक्षी रात को 'विदा अभिनन्दन' दे रहे हैं। इस समय रास्ता धुँधला और जंगल अँधेरा हो रहा था।

"मुझे मालूम था कि मुझे शीघ्रतापूर्वक गायों को घर वापस ले जाना चाहिए अन्यथा बाड़े में सुरक्षित पहुँचने के पहले अँधेरी रात हो जायगी। परन्तु मैं गायों को न ढूँढ़ सका।

"मैंने ध्यान से सुना परन्तु उनकी घंटियाँ न सुनाई पड़ीं। मैंने पुकारा परन्तु वे न आईं।

"मैं अन्धकार तथा जंगली पशुओं से भयभीत था परन्तु मुझमें इतना साहस न था कि बिना गायों को लिये हुए मैं अपने पिता के पास



घर वापस लौटूँ। इसलिए मैं उनको पुकारता और ढूँढ़ता हुआ जंगल में एक ओर से दूसरी ओर दौड़ता रहा। शनैः शनैः अंधकार बढ़ता जाता था। वन पहले की अपेक्षा विशाल प्रतीत होता था तथा पेड़ और झाड़ियाँ विचित्र दिखाई पड़ती थीं।

"मुझे कहीं भी गायें न मिलीं। मैं पहाड़ियों पर चढ़ जाता था, उनको पुकारता था और इधर-उधर देखता था। फिर मैं अँधेरी घाटियों में उतर जाता था और उन्हें ढूँढ़ता तथा पुकारता था। मैं रुककर उनकी घंटियों की आवाज सुनने का प्रयास करता था। किन्तु पत्तियों की खड़खड़ाहट के सिवाय कोई भी आवाज नहीं सुनाई पड़ती थी।

"तब मुझे जोर जोर से साँस लेने की आवाज सुनाई पड़ी और मैंने सोचा कि मेरे पीछे अँधेरे में शायद कोई तेंदुआ है। परन्तु वह केवल मेरे ही साँस लेने की आवाज थी।

"मेरी नंगी टाँगों को कँटीली झाड़ियों ने खुरच लिया था और जब मैं झाड़ियों में होकर दौड़ता था तब उनकी डालों से मुझे चोट लगती थी। परन्तु मैं गायों को पुकारता हुआ और चारों तरफ देखता हुआ दौड़ता रहा।

"मैं अपनी पूरी शक्ति से चिल्लाता था—"सूकी। सूकी।"

"ठीक मेरे सिरे के ऊपर से आवाज आई—"हू"।

"मेरे सब रोंगटे खड़े हो गये।

"आवाज ने फिर पुकारा—"हू! हू!" और मैं बड़ी तेजी से भागा।

"मुझे गायें भूल गईं। मैं केवल यही चाहता था कि किसी प्रकार अँधेरे जंगल में से भागकर घर पहुँच जाऊँ।

"वह चीज अंधकार में से मेरे पीछे आई और फिर पुकारा—"हू! हू!"



"मैं पूरी शक्ति लगाकर भागा। मैं इतना भागा कि साँस लेना कठिन हो गया, तथापि मैं दौड़ता रहा। मेरा पैर किसी चीज में फँस गया और मैं गिर पड़ा। मैं उछलकर खड़ा हो गया और फिर भागा। उस समय भेड़िया भी मेरी समता नहीं कर सकता था।

"अन्त में मैं अँधेरे जंगलों में से निकलकर बाड़े के निकट पहुँचा। वहाँ सब गायें बाड़े के भीतर प्रवेश करने के लिए खड़ी थीं। मैंने उन्हें अन्दर किया और फिर घर भागा।

"मेरे पिता ने सिर उठाकर देखा और कहा, "युवक, तुम्हें इतनी देर क्यों हुई? क्या रास्ते में खेल रहे थे?"

"मैंने अपने पैरों पर दृष्टिपात किया और देखा कि अँगूठे का नाखून साफ निकल गया है। मैं इतना भयभीत हो गया था कि उस क्षण के पहले मुझे यह भी ज्ञात नहीं हुआ कि मुझे चोट लग गई है।"

पिता सदा यहाँ कहानी कहना बंद कर देते थे और प्रतीक्षा करते थे जब तक लॉरा यह नहीं कहती थी––

"आगे चलिए, पिता जी। कृपया कहानी आगे कहिए।"

पिता कहते थे, "अच्छा, तब तुम्हारे पितामह ने आँगन में जाकर एक मोटी छड़ी काटी और घर में आकर मेरी मरम्मत की, ताकि मैं भविष्य में उनके आदेशों का पालन करूँ।"

उन्होंने कहा––"नौ वर्ष के लड़के को मेरी बातें याद रखनी चाहिए। जो कुछ मैं तुम्हें करने के लिए कहता हूँ उसका विशेष कारण होता है। यदि तुम मेरे कहने के अनुसार चलोगे तो तुम्हें कभी दंड नहीं मिलेगा।"

पिता के घुटनों पर उछलती हुई लॉरा कहती थी––"हाँ, हाँ, पिता जी, बहुत ठीक। इसके पश्चात् वह क्या कहते थे?"

उन्होंने कहा––"यदि तुमने आज्ञा का पालन किया होता तो तुम अँधेरा होने के बाद बड़े जंगलों में न रहे होते और तुम उल्लू की बोली से भयभीत न हुए होते।"

अध्याय ४



बड़ा दिन

बड़ा दिन आ रहा था।

कुन्दों का बना हुआ छोटा घर बर्फ में लगभग गड़ गया था। दीवारों और खिड़कियों के पास बर्फ की बड़ी-बड़ी राशियाँ एकत्र हो जाती थीं। प्रात:काल जब पिता जी दरवाजा खोलते थे तब उसके सामने लॉरा के बराबर ऊँची बर्फ की दीवार खड़ी मिलती थी। पिता जी फावड़े से उसे काट फेंकते थे। फिर वह बर्फ काटकर बाड़े तक रास्ता बनाते थे जहाँ घोड़े और गायें सुख से रखी जाती थीं।

दिन साफ होते थे और धूप खूब चमकती थी। लॉरा और मेरी खिड़की के पास कुर्सियों पर खड़ी होकर चमकती हुई बर्फ के पार चमकते हुए वृक्षों को देखती थीं। उनकी डालों में बर्फ जमी रहती थी जो धूप में चमकती थी। मकान की ओल्ती से बर्फ के टुकड़े लटके रहते थे। उनमें से कुछ टुकड़े लॉरा की बाँह के बराबर बड़े होते थे। वे शीशे की भाँति तीव्र प्रकाश से परिपूर्ण होते थे।

जब पिता जी बाड़े से रास्ते में लौटते थे तब उनकी साँस हवा में धुएँ की तरह दृष्टिगोचर होती थी। वह जोर से बादल की भाँति साँस बाहर निकालते थे और वह तुषार की भाँति उनकी मूँछों और दाढ़ी पर जम जाती थी।

जब वह भीतर आते थे तो पैर पटककर अपने बूटों पर से बर्फ झाड़ देते थे। वह लॉरा को अपने सीने से लगा लेते थे। उनकी मूँछों पर बर्फ पिघलकर पानी की बूंदें बन जाती थीं।

प्रत्येक रात को वह एक बड़े तख्ते और दो छोटे तख्तों को बनाने में व्यस्त रहते थे। उन्होंने उनको अपने चाकू से काटा, उनको सरेस कागज और अपनी हथेली से रगड़ा। अन्त में वे रेशम जैसे चिकने हो गये।

तब अपने तेज चाकू से बड़े तख्ते के किनारों को काटकर उन्होंने छोटी-छोटी चोटियाँ और मीनार बनाये। सबसे ऊँचे बिन्दु को कुरेद-कर उन्होंने एक बड़ा तारा बनाया। उन्होंने लकड़ी में छोटे-छोटे छेद कर दिये। उन्होंने इन छेदों को खिड़कियों, छोटे तारों, द्वितीया के चन्द्रमा तथा वृत्तों के आकार का बनाया। उनके चारों तरफ उन्होंने छोटी-छोटी पत्तियाँ, फूल और चिड़ियाँ बनाईं।

एक छोटे तख्ते को उन्होंने धनुषाकार बनाया। उसके किनारे किनारे उन्होंने फूल, पत्तियाँ और तारे बनाये। उसके बीच में उन्होंने अर्ध-चन्द्राकार तथा वृत्ताकार अनेक सुन्दर चित्र खोदे।

सबसे छोटे तख्ते के किनारों पर उन्होंने खिली हुई लता बनाई।

वह तख्तों को बहुत धीरे-धीरे और सावधानी से काटते थे और जो कुछ वह सुन्दर समझते थे उसे तख्तों पर बनाते थे। इस प्रकार बहुत छोटी-छोटी कतरन निकलती थी।

अन्त में तीनों तख्ते पूरे हो गये और उन्होंने उनको एक साथ



जोड़ दिया। इसके पश्चात् बड़े तख्ते को बीचोबीच खोदकर एक आल्मारी बना दी गई। बड़ा तारा उसके ऊपर था और धनुषाकार तख्ता पेंदे में था। सब पर सुन्दर चित्र खुदे हुए थे। यह आल्मारी पिता ने बड़े दिन के उपलक्ष्य में माँ को उपहार देने के उद्देश्य से बनाई थी। उन्होंने उसे सावधानी से खिड़कियों के बीच में दीवार से टाँग दिया और माँ ने उस पर चीनी मिट्टी की बनी हुई छोटी स्त्री खड़ी कर दी।

उस छोटी चीनी मिट्टी की स्त्री के सिर पर एक टोपी थी और उसकी गरदन पर घूँघरदार बाल लटके थे। उसके कपड़े सामने की तरफ फीते से बँधे थे। वह पीला गुलाबी चोगा और सुनहले जूते पहने थी। वह बहुत सुन्दर थी। उसके चारों तरफ फूल, पत्तियाँ, पक्षी और चन्द्रमा बने थे। बड़ा तारा उसके सिर के ऊपर बना हुआ था।

माँ दिन भर बड़े दिन के लिए स्वादिष्ट भोजन बनाने में व्यस्त थीं। उन्होंने भाँति-भाँति की मिठाइयाँ, समोसे, कचौड़ियाँ और दमालू बनाये। फिर उन्होंने अचार और मुरब्बे बनाये और उनको बर्तनों में बन्द कर दिया।

एक दिन माँ ने राब और चीनी को एक साथ खौलाकर शीरा बनाया, पिता बाहर से दो तसले साफ और सफेद बर्फ लाये। एक तसला लॉरा ने लिया और दूसरा मेरी ने। माँ ने उनको दिखलाया कि कैसे गाढ़ा शीरा बर्फ पर उड़ेला जाय।

शीरा बर्फ पर वृत्तों और अर्ध-वृत्तों के आकार में गिरता था और जमकर शीघ्र आकर्षक मिठाई बन जाता था। लॉरा और मेरी ने एक-एक मिठाई खाई परन्तु शेष बड़े दिन के लिए बचाकर रख दी गईं।

यह सब तैयारियाँ इसलिए की गईं कि चाची एलिज़ा, चाचा पीटर, उनका पुत्र पीटर तथा उनकी पुत्रियाँ एलिस और एला बड़ा दिन बिताने के लिए आनेवाले थे।

वे बड़े दिन के एक दिन पहले आये। लॉरा और मेरी ने उनकी गाड़ी की घंटियों का सुखद शब्द सुना। प्रति क्षण वह ऊँचा होता जाता था। तब बिना पहिये की विशाल गाड़ी जंगल में से बाहर निकली और फाटक पर पहुँची। उसमें चाची एलिज़ा, चाचा पीटर और चचेरे भाई तथा बहिन बैठी थीं। वे सब कम्बलों और भैंस के चमड़ों से ढके थे।

वे इतने कोट और अन्य वस्त्र पहने हुए थे तथा इतने शाल ओढ़े थे कि बड़े बड़े बंडलों की भाँति दिखाई पड़ते थे।

जब वे सब भीतर आये तब छोटा घर आदमियों से भर गया। काली सूसन भागकर बाड़े में छिप गई किन्तु जैक बर्फ पर गोलाकार कूदता

था और इस प्रकार भौंकता था मानो वह कभी नहीं रुकेगा। अब लॉरा और मेरी अपने चचेरे भाई और बहनों के साथ आनन्दपूर्वक खेल सकती थीं।

ज्यों ही चाची एलिज़ा ने पीटर, एलिस और एला के वस्त्र हटाये त्यों ही वे लॉरा और मेरी के साथ दौड़ने और चिल्लाने लगे। अन्त में चाची एलिज़ा ने उन्हें शान्त हो जाने की आज्ञा दी। तब एलिस ने कहा—"आओ, हम लोग चित्र बनावें।"

एलिस ने कहा कि ऐसा करने के लिए हमें घर से बाहर चलना चाहिए। माँ का विचार था कि इतनी सर्दी में लॉरा को बाहर नहीं खेलना चाहिए। किन्तु जब उसने देखा कि लॉरा निराश हो गई है तब उन्होंने उसे थोड़ी देर के लिए बाहर जाने की आज्ञा दे दी। उन्होंने लॉरा को कोट, दस्ताने और टोपी पहनाई, उसके गले में गुलूबंद लपेटा और तब बाहर जाने की अनुमति दी।

लॉरा को पहले कभी इतना मजा नहीं मिला था। प्रातःकाल देर तक वह, बर्फ में चित्र बनाती हुई एलिस, एला, पीटर और मेरी के साथ खेलती रही। चित्र बनाने की उनकी शैली निम्नांकित थी :

प्रत्येक बच्चा एक ठूँठे पेड़ पर चढ़ता था और फिर बाहें फैला-कर नर्म और गहरी बर्फ पर कूद पड़ता था। वे मुँह के बल गिरते थे। तब वे इस प्रकार उठ खड़े होते थे जिससे बर्फ पर पड़े हुए उनके निशान न मिटें। यदि वे यह काम भलीभाँति करते थे तब बर्फ में पाँच छेद बन जाते थे। उनका आकार ठीक चार लड़कियों और एक लड़के की भाँति होता था। उनकी बाहों, टाँगों तथा अन्य अंगों की शक्ल भी ठीक-ठीक बन जाती थी। वे इन्हें चित्र कहते थे।

वे दिन भर इतना खेलते थे कि उत्तेजित होने के कारण रात को उन्हें नींद नहीं आती थी। परन्तु सोना उनके लिए आवश्यक था

नहीं तो 'सैन्टाक्लाज' रात में आकर उन्हें बड़े दिन का उपहार कैसे देते? इसलिए उन्होंने अग्निकुंड के निकट अपने मोजे लटकाये, ईश्वर से प्रार्थना की और फर्श पर बिछे हुए एक बड़े बिस्तर में एलिस, एला, मेरी और लारा सब सो गये।



पीटर को पहियेदार बिस्तर मिला। चाची एलिज़ा और चाचा पीटर बड़े बिस्तर पर सोनेवाले थे। ऊपरी मंजिल के कमरे के फर्श पर पिता और माँ के लिए दूसरा बिस्तर लगाया गया। सब कम्बल और भैंस के चमड़े चाचा पीटर की गाड़ी से अन्दर लाये गये थे। इसलिए हर व्यक्ति के लिए ओढ़ने और बिछाने का काफी सामान था।

पिता और माँ तथा चाची एलिज़ा और चाचा पीटर आग के पास बैठे बातें कर रहे थे। जब लॉरा को नींद आ रही थी तब उसने चाचा पीटर को यह कहते हुए सुना--

"कुछ दिन हुए, जब मैं लेक सिटी गया हुआ था तब एलिज़ा मृत्यु से बाल बाल बची। आप तो मेरे बड़े कुत्ते राजकुमार को जानते हैं?"

लॉरा तुरन्त जागकर सावधान हो गई। वह सदैव कुत्तों के विषय में कहानियाँ सुनना चाहती थी। वह चूहे की भाँति शान्त लेटी रही, आग की रोशनी को दीवार पर झिलमिल-झिलमिल पड़ती देखती रही और चाचा पीटर की बातें सुनने लगी।

चाचा पीटर ने कहा--"हाँ, तो प्रातःकाल एलिज़ा सोते से एक घड़ा पानी लेने के लिए चली। राजकुमार उसके पीछे-पीछे जा रहा था। वह दर्रे के तट पर पहुँची जहाँ से रास्ता सोते को जाता था। अकस्मात् राजकुमार उसके साये को पीछे से पकड़कर खींचने लगा।

"आप जानते हैं कि वह कितना बड़ा कुत्ता है। एलिज़ा ने उसको बहुत डाँटा परन्तु वह नहीं छोड़ता था। वह इतना बड़ा और शक्तिशाली है कि एलिजा अपना वस्त्र उससे न छुड़ा सकी। वह उसे पीछे खींचता रहा। अन्त में उसके साये का एक टुकड़ा फटकर अलग हो गया।"

चाची एलिजा ने माँ से कहा—"वह मेरी नीली छींट थी।'
"हे भगवान्!" माँ बोल उठी।



चाची एलिज़ा ने आगे कहा—"उसने साये के पिछले भाग में से एक टुकड़ा फाड़ लिया। मैं इतनी पागल हो गई थी कि उसे कोड़े लगाती किन्तु वह मेरे ऊपर गुर्राता था।"

पिता ने कहा—"राजकुमार तुम्हारे ऊपर गुर्राता था?"

"जी हाँ" चाची एलिज़ा ने उत्तर दिया।

चाचा पीटर आगे बोले—"तब वह सोते की ओर बढ़ी। लेकिन राजकुमार कूदकर उसके सामने मार्ग में खड़ा हो गया और उस पर गुर्राने लगा। उसकी बातें और झिड़कियों पर कुत्ते ने कुछ ध्यान न दिया। वह केवल गुर्राता और दाँत दिखाता रहा और जब उसने चेष्टा की कि कुत्ते के आगे चली जाय तब वह उसके सामने खड़ा हो गया और काटने के लिए मुँह बाने लगा। इससे एलिज़ा डर गई।"

माँ ने कहा—"मेरा ख्याल है कि वह अवश्य डर गई होगी।"

चाची एलिज़ा ने माँ का अनुमोदन किया। "वह इतना भयंकर हो गया था कि मैं समझती थी कि वह मुझे काटनेवाला है। मेरा विश्वास है कि वह मुझे काट लेता।"

माँ बोली––"मैंने ऐसी बात कभी नहीं सुनी। अच्छा, तुमने क्या किया ?"

चाची एलिज़ा ने उत्तर दिया––"मैं लौट पड़ी और दौड़कर घर में घुस गई जहाँ बच्चे थे और दरवाजा बन्द कर दिया।"

चाचा पीटर ने कहा––"निस्सन्देह राजकुमार अपरिचित लोगों के साथ भयंकर हो जाता था। किन्तु एलिज़ा और बच्चों पर वह इतना दयालु रहता था कि मैं उनको उसके साथ छोड़कर निश्चिन्त रहता था। एलिज़ा उसके इस दुर्व्यवहार को बिलकुल न समझ सकी।

"जब वह घर में घुस गई तब वह गुर्राता हुआ घर का चक्कर लगाता रहा। जब कभी वह दरवाजा खोलना आरम्भ करती थी तब वह उस पर झपटता था और गुर्राता था।"

माँ ने पूछा––"क्या वह पागल हो गया था ?"

चाची एलिज़ा ने उत्तर दिया––"यही मैं भी सोचती थी। मैं नहीं समझती थी कि क्या करना चाहिए। मैं बच्चों के साथ घर में बंद थी। बाहर जाने का मुझे साहस नहीं होता था। घर में पानी नहीं था। मैं बर्फ भी नहीं पा सकती थी जिसे पिघला देती। ज्यों ही मैं जरा सा दरवाजा खोलती थी त्यों ही राजकुमार इस तरह मेरी ओर दौड़ता था मानो फाड़ खायगा।"

पिता ने पूछा––"यह कितनी देर चलता रहा ?"

चाची एलिज़ा ने उत्तर दिया––"दिन भर, तीसरे पहर को देर तक। पीटर बन्दूक लेकर चले गये थे। नहीं तो मैंने उसे गोली मार दी होती।"

चाचा पीटर ने कहा––"तीसरे पहर देर में वह शान्त हो गया और दरवाजे के सामने लेट गया। एलिज़ा ने सोचा, वह सो गया

है। उसने उसके निकट से होकर जाने का संकल्प किया जिससे वह सोते से कुछ पानी ला सके।

"इसलिए उसने चुपके से दरवाजा खोला, परन्तु वह जाग पड़ा। जब उसने देखा कि उसके हाथ में पानी का घड़ा है तब वह उठा और उसके आगे-आगे सोते तक गया जैसे वह साधारणतया जाया करता था और वहाँ सोते के चारों ओर बर्फ में तेंदुए के पैरों के ताजे चिह्न थे।"

एलिज़ा ने कहा—"वे चिह्न मेरे हाथ के बराबर बड़े थे।"

"हाँ," चाचा पीटर ने कहा—"वह बड़ा तेंदुआ था। उतने बड़े पद-चिह्न मैंने कभी नहीं देखे थे। यदि राजकुमार ने एलिज़ा को प्रातःकाल सोते तक जाने दिया होता तो तेंदुआ उसे पकड़ ले जाता। मैंने पद-चिह्नों को देखा था। सोते के निकट बलूत के पेड़ के खोखले में वह बैठा था और प्रतीक्षा कर रहा था कि यदि कोई जानवर पानी पीने आवे तो मैं उसे मार डालूँ। निस्संदेह वह एलिज़ा को मार डालता।

"जब उसने पद-चिह्नों को देखा तब रात होनेवाली थी। अतएव वह घड़े में पानी लेकर शीघ्र लौट आई। राजकुमार उसके पीछे-पीछे आता था और कभी-कभी पीछे दर्रे में देख लेता था।"

चाची एलिज़ा ने कहा—"मैंने उसे अपने साथ घर में घुस जाने दिया और जब तक पीटर घर नहीं लौटा तब तक हम भीतर पड़े रहे।"

"क्या तुमने उसे मार डाला?" पिता ने चाचा पीटर से पूछा।

"नहीं," चाचा पीटर ने उत्तर दिया। "मैंने अपनी बन्दूक उठाई और उस स्थल के चारों तरफ उसे ढूँढ़ा परन्तु उसे पा न सका।

मैंने उसके कुछ पद-चिह्न देखे। वह उत्तर की ओर, बड़े वनों के और अन्दर, चला गया था।"

अब एलिस, एला और मेरी सब जाग गये थे। लॉरा ने ओढ़ने के नीचे सिर करके एलिस से धीमे से कहा—"क्या तुम भयभीत नहीं हुई थीं?"

एलिस ने मंद स्वर में उत्तर दिया—"मैं तो डरी ही थी किन्तु एला मुझसे भी अधिक डरी थी।" एला ने कहा—"मुझे डर नहीं लगता था।"

"खैर," एलिस ने कहा—"तुमने प्यास लगने के विषय में बहुत अधिक शोर-गुल मचाया था।"

वे बिस्तर में लेटी हुई कानाफूसी करती रहीं। तब माँ ने कहा, "चार्ल्स, यदि तुम बाजा न बजाओगे तो वे बच्चे कभी न सोयेंगे।" इसलिए पिता ने अपनी सारंगी उठाई।

कमरा शान्त, गर्म तथा आग के प्रकाश से परिपूर्ण था। माँ, चाची एलिज़ा और चाचा पीटर की बड़ी और हिलती हुई छाया दीवारों पर पड़ रही थी और पिता की सारंगी पर आनन्दपूर्ण राग बज रहा था।

उन्होंने कई गाने बजाये और सब बच्चे सो गये।

प्रातःकाल वे सब लगभग साथ ही उठे। उन्होंने अपने मोजों पर दृष्टि डाली। उनमें कुछ रक्खा हुआ था। सैन्टाक्लाज वहाँ रात में आये थे। एलिस, एला, लॉरा लाल फलालैन के लम्बे कोट पहने थीं और पीटर लाल फलालैन की कमीज पहने था। वे सब चिल्लाते हुए यह देखने के लिए दौड़े कि सैन्टाक्लाज उन्हें क्या दे गये हैं।

हर एक मोजे में एक-एक जोड़े गहरे लाल दस्ताने और सुन्दर लड्डू थे।

वे सब इतने प्रसन्न हुए कि कुछ बोल नहीं सकते थे। वे दीप्तिमान् नेत्रों से बड़े दिन के उन आकर्षक उपहारों को घूरते रहे। किन्तु लॉरा सबसे अधिक प्रसन्न थी क्योंकि उसे कपड़ों की एक गुड़िया मिली थी ;

वह सुन्दर गुड़िया थी। उसका चेहरा सफेद कपड़े का बना था और आँखों की जगह काले बटन लगे थे। काली पेंसिल से उसकी आँखों की भौंहें बनाई गई थीं और गाल और मुँह पर लाल रंग पुता था। उसके बाल कच्चे तागे के बने हुए थे और घुँघराले थे।

उसके छोटे-छोटे मोजे लाल फलालैन के बने थे और काले कपड़े के जूते बने थे। उसके वस्त्र पीले और नीले कैलिको के बने थे।

वह इतनी सुन्दर थी कि लॉरा एक शब्द भी न बोल सकी। वह उसे कसकर पकड़े रही और अन्य सब चीजों को भूल गई। उसे यह नहीं मालूम था कि हर व्यक्ति उसकी ओर देख रहा है। तब चाची एलिज़ा ने कहा—



"क्या तुमने कभी इतनी बड़ी आँखें देखी थीं ?"

अन्य लड़कियाँ लॉरा से ईर्ष्या नहीं करती थीं कि उसे दस्ताने, मिठाई और गुड़िया मिली है, क्योंकि वह शिशु कैरी और चाची एलिज़ा के बच्चे डोली वारडन के सिवाय अन्य सब बच्चों से छोटी

थी। यह दोनों शिशु इतने छोटे थे कि उन्हें गुड़िया देना व्यर्थ था। वे इतने छोटे थे कि वे सैन्टाक्लाज के विषय में भी कुछ नहीं जानते



थे। वे केवल अपने मुँह में उँगली डालकर उत्तेजना के कारण खिलखिलाते थे।

लॉरा बिस्तर के किनारे बैठकर अपनी गुड़िया पकड़े थी। वह अपने लाल दस्तानों और लड्डू को बहुत चाहती थी परन्तु वह अपनी गुड़िया से सबसे अधिक प्रेम करती थी। उसने उसका नाम शार्लट रक्खा था।

तब वे सब एक दूसरे के दस्तानों को देखने और अपने हाथों पर आजमाने लगे। पीटर अपनी मिठाइयों को जल्दी जल्दी खाता था किन्तु एलिस, एला, मेरी और लॉरा धीरे-धीरे और थोड़ी-थोड़ी खाती थीं जिससे वे देर तक चल सकें।

"अच्छा," चाचा पीटर ने कहा, "क्या एक भी ऐसा मोजा नहीं है जिसमें छोटी टहनी के सिवाय अन्य कुछ न हो? ओ हो! क्या तुम सब लोग ऐसे अच्छे बच्चे हो?"

किन्तु वे यह विश्वास नहीं कर सकते थे कि सैन्टाक्लाज उन्हें छोटी टहनी के सिवाय और कुछ नहीं दे सकते थे। ऐसा कुछ अन्य बच्चों के लिए हो सकता है, परन्तु उनके लिए ऐसा नहीं हो सकता। वर्ष भर, प्रति दिन, हर समय अच्छा होना अत्यन्त कठिन है।

चाची एलिज़ा ने कहा, "पीटर, तुम बच्चों को तंग मत करो।"

माँ ने कहा--"लॉरा, क्या तुम अन्य लड़कियों को अपनी गुड़िया थोड़ी देर के लिए न दोगी?" उसका तात्पर्य था कि छोटी लड़कियों को इतनी स्वार्थिनी नहीं होना चाहिए।

अतएव लॉरा ने थोड़ी देर के लिए गुड़िया मेरी को दे दी और तब एक मिनट तक एलिस लिये रही और फिर एला। वे उसके सुन्दर वस्त्र सहलाती थीं और लाल फलालैन के मोजे, कपड़े के जूतों और ऊन के बने हुए घूँघरदार बालों की प्रशंसा करती थीं। परन्तु जब

शालर्ट लॉरा की गोद में सुरक्षित लौट आई तो उसे बहुत हर्ष हुआ।

पिता और चाचा पीटर में से प्रत्येक के पास नये गर्म दस्ताने थे जिनमें सफेद और लाल रंग के छोटे-छोटे वर्ग बुने हुए थे। माँ और चाची एलिज़ा ने उन्हें बनाया था।

चाची एलिज़ा माँ के लिए एक बड़ा लाल सेब लाई थीं जिसमें कई लौंगें चुभाई हुई थीं। उसकी सुगन्ध कितनी मधुर थी। वह बिगड़ नहीं सकता था क्योंकि उसमें कई लौंगें लगी थीं जो उसे स्वादिष्ट बनाये रखती थीं।

माँ ने चाची एलिज़ा को अपनी बनाई हुई एक कापी दी जिसमें सुइयाँ खोंसी जा सकती थीं। उस पर रेशम के टुकड़े लगे थे और भीतर सफेद फलालैन के पन्ने थे जिनमें सुइयाँ खोंसी जा सकती थीं। फलालैन सुइयों को जंग लगने से बचाता था।

वे सब माँ की सुन्दर आलमारी की प्रशंसा करती थीं। चाची एलिज़ा कहती थीं कि चाचा पीटर ने उनके लिए एक आलमारी बनाई है। निस्सन्देह उसकी खुदाई भिन्न थी।

सैन्टाक्लाज ने उन लोगों को कुछ भी नहीं दिया था। वह वयस्क लोगों को कुछ उपहार नहीं देते थे। परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं है कि वे लोग अच्छे नहीं हैं। पिता और माँ अच्छे थे। वे अवस्था में बड़े थे। अतएव उन्हें एक दूसरे को उपहार देना चाहिए।

तब सब उपहार कुछ देर के लिए अलग रख दिये गये। पीटर, पिता और चाचा पीटर के साथ लकड़ियाँ काटने के लिए चला गया। एलिस और एला बिस्तर बिछाने में चाची एलिज़ा की सहायता करती थीं। लॉरा और मेरी मेज लगाती थीं और माँ जलपान तैयार करती थीं।

जलपान के लिए माँ ने जलेबियाँ और मठली बनाईं। माँ ने अँगीठी पर कड़ाही चढ़ाई। उसमें चीनी और पानी डालकर शीरा तैयार किया। फिर शीरे को उतारकर दूसरी कड़ाही चढ़ाई। उसमें घी छोड़ा और मैदा की जलेबियाँ बनाने लगीं। जलेबियों को कड़ाही में से निकालकर वह शीरे में छोड़ती जाती थीं। जब जलेबियाँ तैयार हो गईं तब मठली बनी।

बच्चे अँगीठी के चारों ओर खड़े होकर आनन्द ले रहे थे। जलेबी के छातों को घी के ऊपर आते हुए देखने में और उनकी सुगन्ध लेने में वे व्यस्त थे। जब सब कुछ तैयार हो गया तब माँ ने उन्हें आज्ञा दी कि अपनी-अपनी तश्तरी लेकर आओ। सब लोग जब एक पंक्ति में खड़े हो गये तब माँ ने उन्हें जलेबियाँ और मठली दीं। पीटर जल्दी-जल्दी खाता था किन्तु एलिस, एला, मेरी और लॉरा धीरे-धीरे खाती थीं और बातें भी करती जाती थीं।

आज मौसम इतना ठंडा था कि बच्चे बाहर नहीं खेल सकते थे परन्तु वह घर के भीतर खेलकर खुशी मना सकते थे। वे एक दूसरे के दस्तानों को देखकर प्रसन्न हो सकते थे। वे सब फर्श पर एकत्र बैठ गये और इंजील में दिये हुए चित्रों को देखने लगे। फिर उन्होंने पिता की बड़ी हरी पुस्तक में अनेक प्रकार के पशुओं और पक्षियों के चित्र देखे। लॉरा शार्लट को बराबर गोद में लिये रही।

तब बड़े दिन का भोज हुआ। भोजन करते समय एलिस, एला, पीटर, मेरी और लॉरा सब शान्त रहे। उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा क्योंकि वे जानते थे कि ऐसे समय बातें करना अनुचित होगा। परन्तु उन्हें दोबारा किसी चीज को माँगने की आवश्यकता नहीं पड़ी। माँ और चाची एलिज़ा उनकी रकाबियों

में खाना परसती रहीं और उन्होंने दिल भर अच्छी-अच्छी चीजें खाईं।

चाची एलिज़ा ने कहा—"बड़ा दिन साल में केवल एक बार आता है।"

भोजन दिन में जल्द किया गया क्योंकि चाची एलिज़ा, चाचा पीटर और चचेरे भाई तथा बहनों को काफी दूर जाना था।

चाचा पीटर ने कहा—"हमारे घोड़े बहुत अच्छे हैं। अँधेरा होने के पहले ही हम घर पहुँच जायँगे।"

अतएव ज्यों ही भोजन समाप्त हुआ त्यों ही चाचा पीटर



और पिता घोड़ों को गाड़ी में जोतने के लिए गये और माँ तथा चाची एलिज़ा बच्चों को कपड़े पहनाने लगीं।

जो ऊनी मोजे और जूते वे पहने थे उनके ऊपर ऊनी मोजे चढ़ाये गये उन्होंने दस्ताने, ऊनी कोट और ओवरकोट पहने, शाल ओढ़े और गले में गुलूबन्द लपेटे। उन्होंने अपने चेहरे को ऊनी वस्त्रों से ढक लिया। माँ ने भूने हुए गर्म आलू उनकी जेबों में डाल दिये जो उनकी उँगलियों को गर्म रख सकते थे। इस्तिरी करनेवाला गर्म लोहा गाड़ी में उनके पैरों के पास रख दिया गया। कम्बल, लिहाफ और भैंसों के चमड़े भी गर्म कर दिये गये थे।

इस प्रकार वे सब गर्म और सुखद गाड़ी में बैठ गये और पिता ने गाड़ी के अन्दर चारों तरफ से अन्तिम वस्त्र बाँध दिया।

तब उनको विदा अभिनन्दन दिया गया और उन्होंने प्रस्थान किया। घोड़े मजे से गाड़ी खींचते हुए दौड़ते थे और गाड़ी की घंटियाँ बजती जाती थीं।

थोड़े ही समय में घंटियों की सुखद आवाज समाप्त हो गई और बड़ा दिन व्यतीत हो गया। ओह, वह बड़ा दिन कितना आनन्द-प्रद था!

अध्याय ५

रविवार



अब जाड़ा लम्बा प्रतीत होता था। लॉरा और मेरी सदा घर के अन्दर रहने से ऊबने लगीं। विशेषतया रविवार को समय बहुत कठिनाई से कटता था।

प्रत्येक रविवार को मेरी और लॉरा को अच्छे से अच्छे वस्त्र पहनाये जाते थे और उनके बालों में नये फीते बाँधे जाते थे। उनके शरीर बहुत साफ होते थे क्योंकि वे शनिवार की रात को स्नान किया करती थीं।

गर्मी में वे सोते के पानी से नहलाई जाती थीं, परन्तु जाड़े में पिता एक बड़ा पीपा साफ बर्फ से भर देते थे। बर्फ अँगीठी पर पिघलाई जाती थी। तब गर्म अँगीठी के निकट माँ दो कुर्सियों के ऊपर कम्बल फैलाकर पर्दा बनाती थीं। पहले वह लॉरा को नहलाती थीं फिर मेरी को।

लॉरा को मेरी से पहले इसलिए नहलाया जाता था कि वह मेरी से छोटी थी। शनिवार की रातों को शार्लट के साथ उसे जल्द सोना पड़ता था, क्योंकि जब वह नहाकर रात के कपड़े पहन लेती थी तब पिता पीपे को खाली करके मेरी के स्नान के लिए फिर बर्फ से भरते थे। फिर मेरी के नहा लेने पर कम्बल

के पीछे माँ नहाती थीं। तत्पश्चात् पिता स्नान करते थे। इस प्रकार वे सब रविवार के लिए साफ-सुथरे हो जाते थे।

रविवार को मेरी और लॉरा न तो दौड़ती थीं, न चिल्लाती थीं और न खेल में शोर-गुल मचाती थीं। मेरी अपना लिहाफ नहीं सीती थी। लॉरा शिशु कैरी के दस्ताने नहीं बुन सकती थी। वे शान्ति से कागज की बनी हुई अपनी गुड़ियों को देख सकती थीं परन्तु वे अपने लिए कोई नई वस्तु नहीं बना सकती थीं। उनको अपनी गुड़ियों के कपड़े सीने की अनुमति नहीं दी जाती थी, वे पिन से भी सिलाई नहीं कर सकती थीं।

माता इंजील पढ़कर उनको कहानियाँ सुनाती थीं। वे चुपचाप बैठकर सुनती थीं। कभी-कभी माँ पिता की हरी पुस्तक "पशु जगत् के आचार्य" से सिंहों, चीतों और भालुओं की कहानियाँ सुनाती थीं। वे चित्र देख सकती थीं, कपड़े की बनी हुई अपनी गुड़ियों को हाथ में लेकर उनसे बातचीत कर सकती थीं। किन्तु वे और कुछ नहीं कर सकती थीं।

लॉरा को बड़ी इंजील से चित्र देखना सब चीजों से अधिक अच्छा लगता था। सबसे अच्छा वह चित्र था जिसमें आदम पशुओं का नाम रख रहे थे।

आदम एक चट्टान पर बैठे थे और सब छोटे तथा बड़े पशु-पक्षी उनके चारों तरफ एकत्र थे। वे उत्सुकता से यह जानने की प्रतीक्षा कर रहे थे कि हम कैसे पशु हैं। आदम बहुत सुखी दिखाई पड़ते थे। उन्हें अपने वस्त्र साफ रखने में सावधान रहने की कोई आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि वह कोई वस्त्र पहने नहीं थे, बल्कि नंग-धड़ंग थे। वह कटि-भाग में केवल एक खाल लपेटे हुए थे।

लारा ने माँ से पूछा, "क्या रविवार को आदम सुन्दर वस्त्र पहनते थे?"

"नहीं", माँ ने उत्तर दिया, "गरीब आदम के पास पहनने के लिए केवल खालें थीं।"

लॉरा ने आदम के साथ सहानुभूति नहीं प्रकट की। वह चाहती थी कि यदि उसे भी खालों के सिवाय और कुछ न पहनना पड़ता तो बहुत अच्छा होता।

एक रविवार को रात के भोजन के उपरान्त वह इस विचार को अधिक न सह सकी। वह जैक के साथ खेलने लगी। कुछ मिनटों में वह दौड़ने और चिल्लाने लगी। पिता ने कहा कि कुर्सी पर चुपचाप बैठो परन्तु जब लॉरा बैठी तब वह रोने लगी और कुर्सी पर लात मारने लगी।



"मैं रविवार से घृणा करती हूँ।" उसने कहा।

पिता ने पुस्तक रख दी और कड़ाई से बोले, "लॉरा, यहाँ आओ।"

वह धीरे-धीरे पिता के पास गई क्योंकि वह जानती थी कि वह दंड की भागिनी है। किन्तु जब वह उनके निकट पहुँची तब उन्होंने एक

क्षण तक उसे शोकपूर्वक देखा, फिर उसे अपने घुटनों पर उठाकर छाती से लगा लिया। उन्होंने अपनी दूसरी बाँह मेरी की ओर फैलाकर कहा——

"मैं तुम्हें उस समय की कहानी सुनाने जा रहा हूँ जब तुम्हारे पितामह लड़के थे।"



पितामह की गाड़ी और सूअर की कहानी

"लॉरा, जब तुम्हारे पितामह बालक थे तब इस समय की भाँति रविवार रविवार के प्रातःकाल को नहीं आरम्भ होता था बल्कि वह शनिवार की रात को सूर्यास्त के समय आरंभ हो जाता था। तब प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक प्रकार का काम तथा खेल बन्द कर देता था।

"रात का भोजन गंभीरतापूर्वक किया जाता था। भोजन के उपरान्त पितामह के पिता इंजील में से एक अध्याय पढ़ते थे और प्रत्येक व्यक्ति कुर्सी पर शान्त और सीधा बैठा रहता था। तब वे सब घुटने टेककर बैठ जाते और उनके पिता एक लम्बी प्रार्थना कहते थे। जब वह "तथास्तु" कहते थे तब वे सब उठते थे और प्रत्येक व्यक्ति मोमबत्ती लेकर बिस्तर पर जाता था। वे सीधे सोने जाते थे। न तो कोई खेलता था, न हँसता था और न बातें करता था।

"रविवार के प्रातःकाल वह ठंडा नाश्ता करते थे, क्योंकि रविवार को कुछ भी पकाया नहीं जा सकता था। तब वे अपने अच्छे से अच्छे वस्त्र पहनकर गिरजाघर जाते थे। वे पैदल जाते थे, क्योंकि गाड़ी में घोड़ा जोतना काम है और रविवार को काम नहीं किया जा सकता।

"वे मन्द गति तथा गंभीरता से चलते थे और अपने सामने सीधे देखते जाते थे। वे न तो हँसी-मजाक करते थे, न हँसते थे और न मुस्कराते थे। पितामह और उनके दोनों भाई आगे-आगे जाते थे। उनके माता-पिता पीछे-पीछे जाते थे।

"गिरजाघर में पितामह और उनके भाइयों को दो घंटे तक बिलकुल चुपचाप बैठकर व्याख्यान सुनना पड़ता था। वे अपनी कड़ी बेंच पर चंचलता नहीं कर सकते थे। उन्हें साहस न होता था कि सिर घुमाकर गिरजाघर की खिड़कियाँ, दीवारें या छत देखें। उन्हें एकदम शान्त बैठना पड़ता था और एक क्षण के लिए भी वे पादरी की तरफ से आँख नहीं हटा सकते थे।

"जब गिरजाघर में प्रार्थना समाप्त हो जाती थी तब वे धीरे-धीरे घर जाते थे। वे रास्ते में बातचीत कर सकते थे, परन्तु उन्हें जोर से बातें करने की अनुमति नहीं थी। वे कभी भी न तो हँस सकते थे और न मुस्करा सकते थे। घर पर वे बासी भोजन करते थे जो एक दिन पहले का पकाया होता था। तब तीसरे पहर वे एक पंक्ति में बेंच पर बैठकर प्रश्नोत्तर का अध्ययन करते थे। जब सूर्यास्त होता था तब रविवार समाप्त होता था।

"पितामह का घर एक ढालू पहाड़ी के आधे रास्ते में था। सड़क पहाड़ी की चोटी से उसके तल तक, पितामह के घर के सामने से,

होकर जाती थी। जाड़े में बर्फ पर फिसलने के लिए वह सर्वोत्तम स्थान था।

"एक बार सप्ताह भर पितामह और उनके दो भाई, जेम्स और जार्ज, बिना पहिये की एक गाड़ी बनाते रहे। अपने खेलने के समय का प्रत्येक क्षण वे उसे बनाने में लगाते थे। वह उनकी बनाई हुई सर्वश्रेष्ठ गाड़ी थी। वह इतनी लम्बी थी कि उसमें तीनों भाई एक के पीछे दूसरे बैठ सकते थे। उन्होंने योजना बनाई थी कि वे गाड़ी ऐसे समय तैयार कर लें जिससे वे शनिवार के तीसरे पहर बर्फ पर फिसल सकें, क्योंकि हर शनिवार के तीसरे पहर वे दो-तीन घंटे खेल सकते थे।

"परन्तु उस सप्ताह में उनके पिता बड़े वन में पेड़ काट रहे थे। वह कठोर परिश्रम करते थे और अपने साथ लड़कों से भी काम कराते थे। वे घर का काम लालटेन की रोशनी में कर लेते थे और जब सूर्योदय होता था तब वनों में कठिन परिश्रम आरंभ कर देते थे। वे अँधेरा होने तक काम करते थे। वापस आने पर उन्हें घरेलू काम-काज करना पड़ता था। रात का खाना खाने के पश्चात् वे सो जाते थे जिससे प्रातःकाल जल्द उठ सकें।

"शनिवार के तीसरे पहर तक उन्हें गाड़ी बनाने के लिए समय न मिला। तब उन्होंने उसका काम बहुत तेजी से करना आरम्भ किया। किन्तु शनिवार के सूर्यास्त तक वे गाड़ी न तैयार कर सके।

"सूर्यास्त के पश्चात् वे एक बार भी बर्फ पर पहाड़ी से नीचे नहीं फिसल सकते थे। ऐसा करने से सबथ (सप्ताह के सातवें दिन) की पवित्रता नष्ट हो जाती। अतएव उन्होंने घर के पीछे ओसारे में गाड़ी रख दी और रविवार बीत जाने की प्रतीक्षा करने लगे।

"दूसरे दिन जब वे गिरजाघर में दो घंटे तक चुपचाप बैठकर

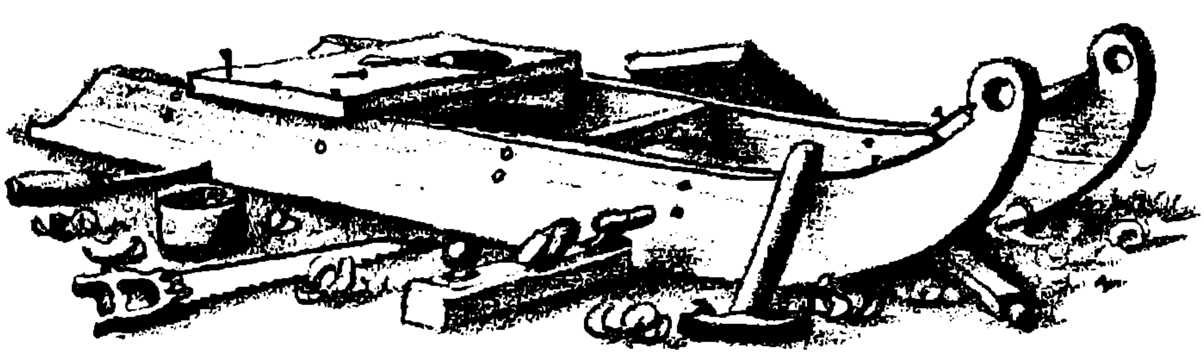
पादरी की ओर देखते थे तब गाड़ी के विषय में सोचते रहे। घर पर जब वे भोजन करते थे तब और कोई बात नहीं सोच सकते थे। भोजन के उपरान्त उनके पिता इंजील पढ़ने के लिए बैठे और पितामह, जेम्स तथा जार्ज अपना प्रश्नोत्तर लेकर बेंच पर, चूहों की भाँति, शान्त होकर बैठ गये। परन्तु वे गाड़ी के विषय में ही सोचते रहे।

"सूर्य तेजी से चमका। सड़क पर चिकनी तथा चमकीली बर्फ जमी थी। वे खिड़की से उसे देख सकते थे। पहाड़ी पर से नीचे फिसलने के लिए वह बहुत सुन्दर दिन था। वे देखते तो थे प्रश्नोत्तर की अपनी पुस्तक पर, किन्तु सोचते थे नई गाड़ी के विषय में। उन्हें ऐसा प्रतीत होता था कि रविवार कभी समाप्त न होगा।

"बहुत देर बाद उन्हें खर्राटे की आवाज सुनाई पड़ी। उन्होंने अपने पिता की ओर देखा तो उन्हें मालूम हुआ कि उनका सिर कुर्सी के पिछले भाग पर लटका है और वह गहरी नींद ले रहे हैं।

"तब जेम्स ने जार्ज को देखा और बेंच से उठ खड़े हुए। फिर वह पंजों के बल पिछले दरवाजे से बाहर निकल गये। पितामह ने भय से अपने पिता को देखा, फिर उन्होंने जार्ज का अनुसरण किया। उनके पिता खर्राटे लेते हुए कमरे में रह गये।

"उन्होंने बिना पहिये की अपनी नई गाड़ी ली और शान्तिपूर्वक पहाड़ी की चोटी पर गये। वह केवल एक बार फिसलकर नीचे जाना





चाहते थे। तब वह गाड़ी को अलग रखकर चुपके से अपनी बेंच पर पहुँच जाना चाहते थे और पिता के जागने के पहले अपने प्रश्नोत्तर पढ़ने में व्यस्त हो जाना चाहते थे।

"जेम्स गाड़ी में सबसे आगे बैठे, उनके पीछे जार्ज और जार्ज के पीछे पितामह, क्योंकि वह सबसे छोटे थे। तब गाड़ी चली, पहले धीरे, तब तेज, फिर और तेज। पहाड़ी की लम्बी ढाल पर वह दौड़ने और फिर उड़ने लगी परन्तु लड़कों को चिल्लाने का साहस न होता था। वे अपने घर के पास से चुपचाप फिसलना चाहते थे जिससे उनके पिता जाग न जायें।

"गाड़ी के फिसलने और हवा के चलने की आवाज के सिवाय अन्य कोई भी शोर न हुआ।

"ठीक जिस समय गाड़ी घर की ओर फिसलती जा रही थी उसी समय एक बड़ा काला सूअर जंगल से बाहर निकला और सड़क के बीच में जाकर खड़ा हो गया।

"गाड़ी इतनी तेजी से फिसल रही थी कि वह रोकी नहीं जा सकती थी। उसे घुमाने का भी समय नहीं था। गाड़ी सूअर के नीचे चली गई और उसे उठा लिया। चिल्लाकर वह जेम्स के ऊपर बैठ गया और बराबर तेजी से चिल्लाता रहा।

"वे घर के निकट से फिसलकर निकल गये। गाड़ी में सबसे आगे सूअर बैठा था, उसके पीछे जेम्स, तब जार्ज और तब पितामह बैठे थे। उन्होंने देखा कि उनके पिता दरवाजे पर खड़े हैं और उनकी ओर देख रहे हैं। वे न तो रुक सकते थे और न कुछ कह सकते थे। कुछ कहने के लिए भी समय नहीं था। वे पहाड़ी के नीचे फिसलते जाते थे, सूअर जेम्स के ऊपर बैठा चिल्लाता रहा।

"पहाड़ी के आधार के पास वे रुके। सूअर जेम्स के ऊपर से कूदकर भागा और चीखता हुआ जंगल में चला गया।

"लड़के धीमे-धीमे और गम्भीरतापूर्वक पहाड़ी पर चढ़े। उन्होंने गाड़ी को अलग रख दिया। वे चुपके से घर के भीतर गये और फिर शान्ति से बेंच पर अपने-अपने स्थान में बैठ गये। उनके पिता इंजील पढ़ रहे थे। उन्होंने ऊपर आँखें करके उन्हें देखा पर कुछ बोले नहीं।

"वह पढ़ते रहे और लड़के अपने प्रश्नोत्तर का अध्ययन करते रहे।

"परन्तु जब सूर्यास्त हो गया और पवित्र सातवाँ दिन बीत

गया तब उनके पिता उनको लकड़ी के ओसारे में ले गये और उन्हें पीटा——पहले जेम्स को, फिर जार्ज को और तब पितामह को।

"इस प्रकार तुम देखती हो, लॉरा और मेरी", पिता ने कहा, "अच्छा बनना तुम्हें कठिन मालूम पड़ सकता है पर तुम्हें प्रसन्न होना चाहिए कि इस समय वह इतना कठिन नहीं है जितना उस समय था जब पितामह बालक थे।"

"क्या लड़कियों को भी उतनी ही अच्छी बनना पड़ता था?" लॉरा ने पूछा और माँ ने उत्तर दिया——



"लड़कियों के लिए अच्छा बनना और कठिन था क्योंकि उन्हें केवल रविवार ही को नहीं बल्कि हर समय छोटी महिलाओं की भाँति बर्ताव करना होता था। बालकों की भाँति वे कभी पहाड़ी से नीचे नहीं फिसल सकती थीं। छोटी लड़कियों को मकान के अन्दर बैठकर सिलाई करनी पड़ती थी।"

"अच्छा अब दौड़कर जाओ, माँ तुम्हें सुलायेंगी," पिता ने कहा। फिर उन्होंने सन्दूक में से अपनी सारंगी निकाली।

लॉरा और मेरी अपने बिस्तर में लेटी हुई रविवार के भजन सुनती रहीं, क्योंकि प्रतिदिन के गीत रविवार को भी नहीं गाये जा सकते थे।

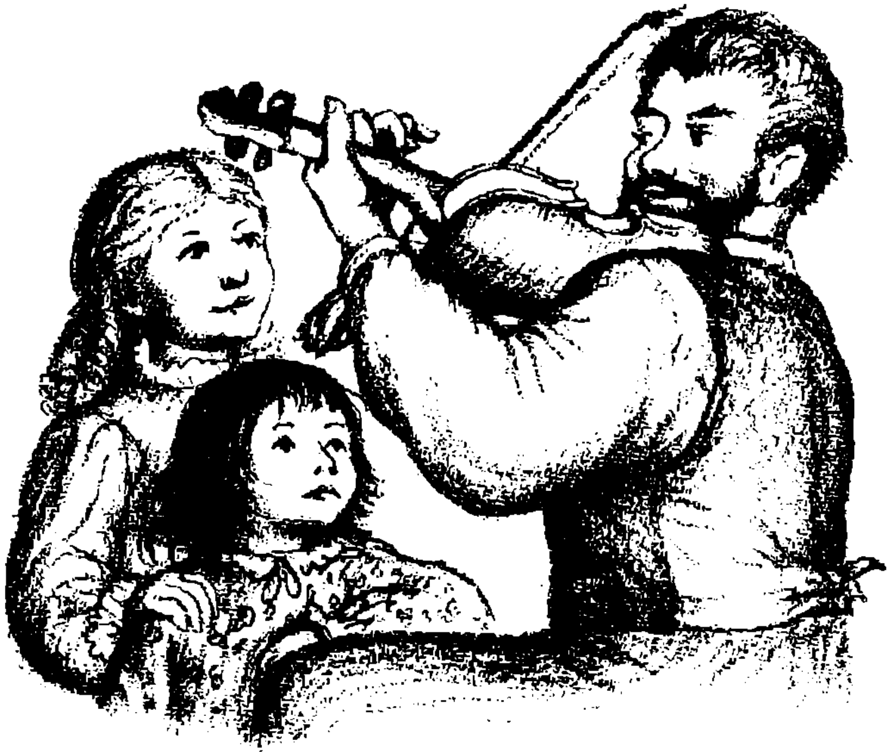
लॉरा को बाजे के राग में बड़ा आनन्द आया। वह गहरी नींद में सो गई। कुछ समय उपरान्त उसने खटखट की आवाज सुनी। उसे मालूम हुआ कि माँ जलपान तैयार कर रही हैं। सोमवार का प्रातःकाल आ गया था। अब एक सप्ताह तक फिर रविवार नहीं आवेगा।

उस दिन जब पिता जलपान करने भीतर आये तो उन्होंने लॉरा को पकड़कर कहा कि आज मैं तुम्हारी पीठ ठोकूँगा।

पहले उन्होंने समझाया कि आज तुम्हारा जन्म-दिवस है और यदि तुम्हें ठोंका न जायगा तो अगले साल तुम यथेष्ट रूप से नहीं बढ़ोगी। तब उन्होंने इतना धीरे-धीरे उसको ठोंका कि उसे जरा भी चोट न लगी।

"एक-दो-तीन-चार-पाँच-छः," उन्होंने गिना और धीरे से थप्पड़ लगाये। एक थप्पड़ हर वर्ष के लिए और अन्त में एक जरा भारी थप्पड़ अगले साल बढ़ने के लिए।

अब उन्होंने शार्लट का साथी बनाने के लिए लॉरा को काठ



का मनुष्य दिया जो उन्होंने स्वयं गढ़कर बनाया था। तब माँ ने उसे पाँच रसगुल्ले दिये--एक रसगुल्ला उसकी आयु के प्रतिवर्ष के लिए। मेरी ने शार्लट के पहनने के लिए नया वस्त्र दिया। मेरी वह वस्त्र स्वयं सी रही थी। जब वह सी रही थी तब लॉरा समझती थी कि वह अपने लिहाफ के लिए पैबन्द बना रही है।

उस दिन लॉरा के जन्म-दिवस के उपलक्ष में सबको आनन्द देने के उद्देश्य से पिता ने एक सुन्दर गीत गाया।

जब वह बाजा बजा रहे थे तब लॉरा और मेरी उनके घुटनों पर बैठी थीं। उन्होंने बाजा बजाया और फिर गीत गाया। उनकी उँगलियाँ तीव्र गति से सारंगी पर चलती थीं। लॉरा और मेरी को बड़ा आनन्द आया। वे हँसती हुई बिस्तर पर गईं और पिता के गीत सुनती रहीं। कुछ समय उपरान्त वे स्वप्नलोक में पहुँच गईं।

अध्याय ६





दो बड़े भालू

एक दिन पिता ने कहा कि वसन्त आ रहा है।

बड़े वन में बर्फ का पिघलना आरम्भ हो गया था। पेड़ों की डालों से बर्फ के टुकड़े गिरते थे और नीचे की नर्म बर्फ में गड्ढे बन जाते थे। छोटे घर की ओल्ती से लटके हुए बर्फ के टुकड़े दोपहर को धूप में चमकते थे और उनसे पानी की बूँदें टपकती थीं।

पिता ने कहा कि जाड़े भर मैंने जिन जानवरों को मारा है उनका ऊन बेचने के लिए मुझे शहर जाना पड़ेगा। इसलिए एक दिन शाम को उन्होंने उसको एक गट्ठर में बाँधा। इतना अधिक ऊन था कि गट्ठर पिता के बराबर बड़ा हो गया।

एक दिन प्रातःकाल पिता ने ऊन का गट्ठर अपने कंधे से लटकाया और शहर को पैदल चल दिये। इतना अधिक ऊन ले जाना था कि वह अपनी बंदूक न ले जा सके।

माँ व्यग्र थीं किन्तु पिता ने कहा कि सूर्योदय के पहले मैं यात्रा आरम्भ कर दूँगा और दिन भर तेजी से चलता रहूँगा। इस प्रकार अंधकार होने से पहले ही मैं घर लौट आऊँगा।

निकटतम नगर भी काफी दूर था। लॉरा और मेरी ने कभी न तो नगर देखा था और न गोदाम। उन्होंने दो घरों को भी एकत्र नहीं देखा था। परन्तु वे जानती थीं कि नगर में बहुत से घर होते हैं और गोदाम में बारूद, छर्रा, नमक, चीनी तथा कैलिको आदि अनेक आश्चर्यजनक वस्तुएँ होती हैं।

वे जानती थीं कि पिता गोदाम में ऊन बेंचकर नगर से सुन्दर-सुन्दर वस्तुएँ लायेंगे। वे दिन भर उन उपहारों की प्रतीक्षा करती रहीं जो पिता उनके लिए लानेवाले थे। जब सूर्यास्त निकट आ गया और ओल्ती से लटकी हुई बर्फ के टुकड़ों से बूँदें गिरनी बंद हो गईं तब वे उत्सुकता से पिता की राह देखने लगीं।

सूर्य अस्त हो गया। जंगल में अँधेरा हो गया, परन्तु वह नहीं आये। माँ ने मेज लगाई और भोजन की व्यवस्था की किन्तु वह न आये। घर का काम-काज करने का समय आ गया तिस पर भी वह नहीं आये।

माँ ने कहा मैं गाय दुहने जा रही हूँ। लॉरा, तुम मेरे साथ लालटेन लेकर चलो।

लॉरा ने कोट पहना और माँ ने उसके बटन बन्द कर दिये। लॉरा ने लाल दस्ताने पहन लिये जो उसके गले में लाल डोरे से लटक रहे थे। माँ ने लालटेन जलाई।

लॉरा को इस बात का गर्व था कि वह दूध निकालने में माँ की सहायता कर रही है वह बड़ी सावधानी से लालटेन लेकर गई।

लालटेन की बगलों में टिन लगा हुआ था और उसमें छेद बने हुए थे जिनमें से होकर मोमबत्ती की रोशनी बाहर निकलती थी।

जब लॉरा माँ के साथ बाड़े को जा रही थी तब मोमबत्ती की रोशनी के छोटे-छोटे हिस्से उसके चारों ओर बर्फ पर पड़ते थे। रात अभी बहुत अँधेरी नहीं हुई थी। जंगल में अँधेरा था परन्तु बर्फीले रास्ते पर प्रकाश था और आकाश में कुछ तारे टिमटिमा रहे थे। वे तारे उतने गर्म और प्रकाशपूर्ण नहीं दिखाई पड़ते थे जितनी वह रोशनी जो लालटेन से निकलती थी।

बादामी गाय सूकी की काली छाया को बाड़े के फाटक पर देखकर लॉरा चकित हो गई। माँ को भी आश्चर्य हुआ।

अभी वसन्त इतना नहीं व्यतीत हुआ था कि सूकी को चरने के लिए बड़े वन में जाने दिया जाय। वह बाड़े में रहती थी लेकिन कभी-कभी जब दिन गर्म होते थे तब पिता उसकी कोठरी का दरवाजा खुला छोड़ देते थे। इससे वह बाड़े के आँगन में आ सकती थी। अब माँ और लॉरा ने उसे लकड़ी के छड़ों के पीछे उनकी प्रतीक्षा करते हुए देखा।

माँ फाटक के पास गईं और खोलने के लिए उस पर धक्का दिया। परन्तु वह पूरी तरह नहीं खुला, क्योंकि सूकी उसके निकट खड़ी थी। माँ ने कहा:

"सूकी, हट जाओ।" उन्होंने फाटक पर झुककर सूकी के कंधों को सहलाया।

उसी समय लालटेन के छेद में से निकला हुआ प्रकाश फाटक में लगी हुई बल्लियों पर पड़ा और लॉरा ने लम्बे, काले, रूखे बाल और दो छोटी चमकीली आँखें देखीं।

सूकी के बाल छोटे, विरले और बादामी थे। उसकी आँखें

विशाल तथा कोमल थीं। माँ ने कहा, "लॉरा, घर वापस लौट चलो।"

इसलिए लॉरा घूम पड़ी और घर वापस जाने लगी। माँ उसके पीछे-पीछे जाती थीं। जब वे कुछ दूर चल चुकीं तब माँ ने लॉरा को लालटेन सहित गोद में उठा लिया और दौड़ने लगीं। घर के भीतर जाकर उन्होंने दरवाजा बंद कर लिया।

लॉरा ने कहा, "माँ, क्या वह भालू था?"

"हाँ, लॉरा," माँ ने कहा, "वह भालू था।"



लॉरा रोने लगी। वह माँ को पकड़कर सिसकने लगी, "आह, क्या वह सूकी को खा जायगा?"

"नहीं," माँ ने उसे सीने से लगाकर कहा। "सूकी बाड़े में सुरक्षित है। लॉरा, सोचो कि बाड़े की दीवारों में कितने भारी-भारी कुंदे लगे हुए हैं। किवाड़ भी ठोस और भारी हैं जिससे भालू अन्दर न घुस सकें। नहीं, भालू भीतर जाकर सूकी को नहीं खा सकता।"

तब लॉरा को शान्ति मिली। "परन्तु क्या वह हम लोगों को हानि नहीं पहुँचा सकता था?" उसने पूछा।

माँ ने उत्तर दिया, "उसने हमें चोट नहीं पहुँचाई। लॉरा, तुम बहुत अच्छी लड़की हो। मैंने तुमसे जो करने को कहा, तुमने उसे शीघ्रता से बिना कारण पूछे कर दिया।"

माँ काँप रही थीं। थोड़ा हँसकर उन्होंने कहा, "जरा सोचो कि यह कितनी विचित्र बात है कि मैंने एक भालू को थपथपाया।"

तब उन्होंने मेज पर लॉरा और मेरी के लिए भोजन परोस दिया। पिता जी अभी तक नहीं आये थे। भोजन के बाद लड़कियों ने कपड़े उतारे, ईश्वर की प्रार्थना की, फिर पहियेदार बिस्तर पर लेट गईं।

माँ लालटेन के पास बैठकर पिता की कमीज की मरम्मत करने लगीं। पिता की अनुपस्थिति में घर सुनसान तथा विचित्र मालूम पड़ता था।

लॉरा बड़े वन में चलनेवाली हवा का शोर सुन रही थी। घर के चारों तरफ हवा इस प्रकार विलाप करती हुई प्रतीत होती थी मानो वह ठंड और अंधकार में खो गई हो। वह भयभीत प्रतीत होती थी।

माँ कमीज की मरम्मत कर चुकीं। लॉरा ने देखा कि वह धीरे-धीरे और सावधानी से उसे तह कर रही हैं। उन्होंने हाथ से उसे चिकना किया। तब उन्होंने एक काम किया जो वह कभी नहीं करती थीं। वह दरवाजे के पास गईं और चमड़े की अगरी (सिटकनी) को किवाड़ के छेद में से खींच लिया जिससे उसे कोई बाहर से न खोल सके। तब वह आईं और सोती हुई कैरी को बड़े बिस्तर से उठाया।

उन्होंने देखा कि लॉरा और मेरी अब भी जाग रही हैं। उन्होंने कहा, "लड़कियो, सो जाओ। सब कुछ ठीक है। पिता प्रातः-काल आ जायेंगे।"

तब वह अपनी हिलनेवाली कुर्सी पर गईं और कैरी को गोद में लिये हुए उस पर झूलने लगीं।

वह रात में बहुत देर तक बैठी हुई पिता की प्रतीक्षा करती रहीं। लॉरा और मेरी भी उनकी वापसी तक जागना चाहती थीं। किन्तु कुछ समय उपरान्त सो गईं।

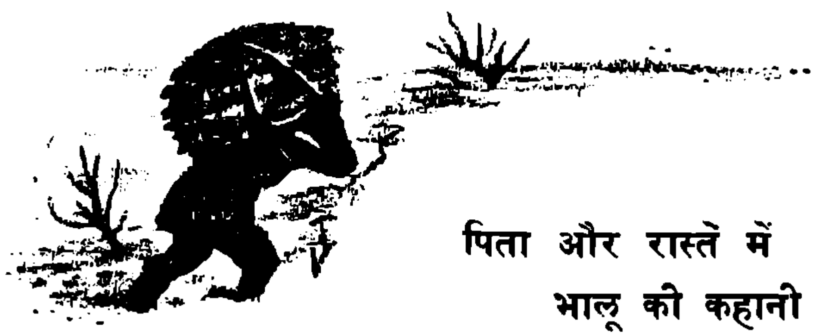
प्रातःकाल पिता वहाँ पहुँच गये। वह लॉरा और मेरी के लिए चीनी के खिलौने और दो कपड़े लाये थे जिससे उनके लिए फ्राक सिले जा सकते थे। मेरी की छींट की जमीन सफेद थी और बूटी नीली। लॉरा की छींट की जमीन गहरी लाल थी और उस पर सुनहली तथा बादामी बूटियाँ बनी थीं। माँ के लिए भी वह कपड़ा लाये थे। वह बादामी रंग का था। उस पर बड़ी पंखों के आकार की बूटियाँ बनी थीं।

वह सब प्रसन्न थीं कि पिता को अपने ऊन का इतना अधिक मूल्य मिल सका जिससे वह उनके लिए ऐसे सुन्दर उपहार ला सके।

बाड़ों के चारों तरफ बड़े भालू के पैरों के चिह्न थे और दीवारों पर उसके पंजों के दाग थे। किन्तु सूकी और घोड़े भीतर सुरक्षित थे।

उस दिन सूर्य चमकता था, बर्फ पिघलती थी और ओल्ती तथा पेड़ों पर लटकी हुई बर्फ के टुकड़ों से पानी की धारें बहती थीं। इससे बर्फ के टुकड़े बराबर छोटे और पतले होते जाते थे। सूर्यास्त के पहले भालू के पैरों के चिह्न नर्म बर्फ में आकारहीन चिह्न-मात्र रह गये।

रात के भोजन के उपरान्त पिता ने लॉरा और मेरी को अपने घुटनों पर बैठाकर कहा कि मैं तुम्हें नई कहानी सुनाऊँगा।



पिता और रास्ते में भालू की कहानी

"कल मैं जब ऊन लेकर नगर के लिए रवाना हुआ तब नर्म बर्फ पर चलना मेरे लिए कठिन हो गया। नगर में पहुँचने में मुझे बहुत अधिक समय लगा। ऊन लेकर दूसरे लोग वहाँ पहले पहुँच गये थे। गोदाम के बाबू व्यस्त थे। जब तक उन्होंने मेरे ऊन को न देख लिया, मुझे प्रतीक्षा करनी पड़ी।

"तब हर प्रकार के ऊन के लिए मोल-भाव करना पड़ा। उसके पश्चात् मुझे वे चीजें चुननी पड़ीं जो मैं बदले में लेना चाहता था।

"इसलिए मेरे वापसी यात्रा आरम्भ करने के पहले सूर्य लगभग अस्त हो गया।

"मैंने जल्दी करने की चेष्टा की। पर चलना कठिन था और मैं थका हुआ था। इसलिए मेरे थोड़ी दूर यात्रा करने पर रात हो गई। मैं बड़े वन में अकेला था और मेरे पास बन्दूक भी नहीं थी।

"तब भी छः मील चलना था और मैं अधिक से अधिक तीव्र गति से चला। रात अँधेरी होती गई। मैं चाहता था कि यदि मेरी बन्दूक मेरे पास होती तो बहुत अच्छा होता, क्योंकि मैं जानता था कि कुछ भालू माँदों से बाहर निकल आ चुके हैं। प्रातःकाल जब मैं नगर को जा रहा था तब उनके पैरों के चिह्नों को मैंने देखा था।

"साल के इस समय में भालू भूखे और क्रुद्ध होते हैं। तुम्हें ज्ञात है कि जाड़े भर वे बिना खाये-पिये अपनी माँदों में सोते रहते हैं। अतएव जब वे जागते हैं तब दुबले और चिड़चिड़े होते हैं। मैं चाहता था कि कोई भालू मुझे न मिले।

"मैं अँधेरे में यथाशक्ति शीघ्रता से चलता था। कुछ देर उपरान्त तारों से थोड़ा प्रकाश मिलने लगा। तब भी जहाँ वन घने थे वहाँ घोर अंधकार था परन्तु खाली जगहों में मैं कुछ-कुछ देख सकता था। मैं थोड़ी दूर आगे तक बर्फीली सड़क और चारों ओर अँधेरे वन को देख सकता था। जब मैं खुले स्थान में पहुँचता था और तारों से कुछ प्रकाश मिलता था तब मुझे प्रसन्नता होती थी।

"मैं बराबर देखता रहा कि कहीं कोई भालू तो नहीं है। जब वे लापरवाही से झाड़ियों में होकर चलते हैं तब कुछ आवाज होती है। मैं कान खड़ा किये था कि कहीं से ऐसी आवाज तो नहीं आ रही है।

"तब फिर मैं एक खुले स्थान में आया और वहाँ, सड़क के ठीक बीच में, मैंने एक बड़ा काला भालू देखा।

"वह अपनी पिछली टाँगों पर खड़ा था और मेरी तरफ देख रहा था। मैं उसकी चमकती हुई आँखों को देख सकता था। मुझे उसका थूथन दिखाई पड़ता था। तारों के प्रकाश में मुझे उसका एक पंजा भी दिखाई पड़ता था।

"मेरा माथा ठनका और रोंगटे खड़े हो गये। मैं मार्ग में शान्त खड़ा हो गया। भालू भी नहीं हिला। वह अपने स्थान पर खड़ा था और मुझे देख रहा था।"

"मैं जानता था कि उसकी बगल से घूमकर जाने की चेष्टा करना व्यर्थ है। वह घने वन में मेरा पीछा करेगा जहाँ उसे मुझसे अच्छी तरह दिखाई पड़ेगा। मैं जाड़े के भूखे भेड़िए से अँधेरे में नहीं लड़ना चाहता था। ओह, मैं सोचता था कि यदि मेरी बन्दूक मेरे पास होती तो कितना अच्छा होता।

"घर पहुँचने के लिए मुझे उस भालू के निकट से आना था। मैंने सोचा कि यदि मैं उसे डरा दूँ तो वह शायद सड़क पर से हट जाय और निकल आने दे। अतएव मैंने गहरी साँस ली और अचानक मैं पूरी शक्ति से चिल्लाया और अपनी बाँहें हिलाता हुआ उसकी तरफ दौड़ा।

"वह नहीं हिला।

"मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं उसकी तरफ बहुत दूर तक नहीं दौड़ा। मैं रुककर उसे देखने लगा। वह खड़ा-खड़ा मुझे देखता रहा, तब मैं फिर चिल्लाया। फिर भी वह अपने स्थान पर खड़ा रहा। मैं बराबर चिल्लाता और अपनी बाँहें हिलाता रहा पर वह नहीं हटा।

"मैंने सोचा कि भागने से मुझे कोई लाभ न होगा। जंगलों में और भी भालू हैं। किसी भी समय किसी भालू का मुझसे सामना हो सकता है। इसलिए जैसे मुझे अन्य किसी भालू का

मुकाबिला करना पड़ेगा वैसे ही इसी से क्यों न निपट लूँ। इसके सिवाय, मैं घर तुम्हारी माता और तुम लड़कियों के पास आ रहा था। यदि मैं उन सब चीजों से भागता जो जंगल में मुझे डराती थीं तो मैं यहाँ कभी नहीं आ सकता था।

"इसलिए अन्त में मैंने चारों तरफ देखा। मुझे एक भारी लकड़ी मिली। वह पेड़ की एक डाल थी जो जाड़े में बर्फ के बोझ से टूटकर गिर पड़ी थी।

"उसे हाथों में उठाकर मैं सीधे उस भालू पर झपटा। मैंने



खूब जोर से उसे हिलाया और भालू के सिर पर धम से दे मारा।

"तब भी वह वहीं खड़ा रहा, क्योंकि वह जला हुआ, काला ठूँठा पेड़ था।

"उस दिन प्रातःकाल मैं उसके पास से होकर शहर गया था। वह भालू नहीं था। उसी को मैंने भालू समझ लिया था। क्योंकि मैं बराबर भालुओं के विषय में सोच रहा था और डर रहा था कि शायद मुझे किसी भालू का मुकाबिला करना पड़ जाय।"

"क्या वह सचमुच भालू नहीं था?" मेरी ने पूछा।

"नहीं, मेरी, वह सचमुच भालू नहीं था। मैं जंगल में बिलकुल अकेला चिल्ला रहा था और बाँहें हिला रहा था क्योंकि मैं ठूँठे पेड़ को डराना चाहता था।"

लॉरा ने कहा, "हमारे सामने सचमुच एक भालू था। परन्तु हम डरे नहीं, क्योंकि हम लोगों ने सोचा कि यह सूकी है।"

पिता ने कुछ कहा नहीं, केवल उसे कसकर छाती से लगा लिया।

"आह! वह भालू मुझको और माँ को खा गया होता," लॉरा ने कहा और उनके सीने से खूब चिपट गई। "परन्तु माँ ने उसके बिलकुल निकट जाकर उसे थपथपाया, तिस पर भी उसने कुछ न किया। उसने क्यों कुछ नहीं किया?"

पिता ने उत्तर दिया, "लॉरा मैं समझता हूँ कि वह बहुत अधिक चकित हो गया था। मेरा ख्याल है, जब लालटेन का प्रकाश उसकी आँखों पर पड़ा तब वह डर गया और जब उसके निकट जाकर तुम्हारी माँ ने उसे थपथपाया तब उसने जान लिया कि वह डरती नहीं है।

"खैर, तुमने भी वीरता की," लॉरा ने कहा। "यद्यपि वह केवल ठूँठ था तथापि तुमने उसे भालू समझा। क्यों, पिता जी, यदि वह सचमुच भालू होता तो भी तुम उसके सिर पर लकड़ी से हमला करते ?"

"हाँ," पिता ने उत्तर दिया, "मैं मारता। तुम समझ सकती हो कि मुझे मारना ही पड़ता।"

तब माँ ने कहा कि सोने का समय हो गया है। उन्होंने लॉरा और मेरी को कपड़े उतारने और रात के कपड़े पहनने में सहायता दी। बिस्तर के पास उन्होंने घुटने टेककर ईश्वर की प्रार्थना की––

"अब मैं सोने जा रही हूँ। हे भगवान्, तुम मेरी आत्मा की रक्षा करो! यदि जागने के पहले मैं मर जाऊँ तो भगवान्, तुम मेरी आत्मा की देख-रेख करना।"

माँ ने लड़कियों को चूमा और उनको अच्छी तरह लिहाफ ओढ़ा दिया। कुछ देर तक वे बिस्तर में जगती रहीं। वे माँ के चिकने और कंघी किये बालों को देखती रहीं। वे यह भी देखती थीं कि माँ बत्ती की रोशनी में सिलाई कर रही हैं। उनकी सुई अंगुलि-त्राण पर लगती थी तब हल्की सी आवाज होती थी। फिर वह उस सुन्दर छींट में धँस जाती थी जो पिता आज ऊन बेचकर बाजार से लाये थ।

लॉरा ने पिता की ओर देखा जो अपने बूटों में ग्रीज लगा रहे थे। बत्ती की रोशनी में उनकी मूँछें, बाल और लम्बी बादामी दाढ़ी रेशमी दिखाई पड़ती थीं और ऊन की सदरी का रंग खूब खिल रहा था। काम करते हुए वह धीरे-धीरे कुछ गुनगुना रहे थे।

रात गर्म थी। अँगीठी में आग बुझ गई थी और पिता ने उसे फिर नहीं जलाया था। बड़े वन में, छोटे घर के चारों तरफ, बर्फ

गिरने की हल्की हल्की आवाज हो रही थी और ओल्तियों से बर्फ पिघलकर, बूँद-बूँद, गिर रही थी। उसकी टप-टप आवाज सुनाई पड़ती थी।

कुछ समय में वृक्षों में गुलाबी, पीली, हरी कोंपलें निकलेंगी। जंगलों में फूल और पक्षी दिखाई पड़ेंगे।

तब आग के पास बैठकर रात को कहानियाँ नहीं कही जायँगी किन्तु दिन भर लॉरा और मेरी पेड़ों के बीच में दौड़ें और खेलेंगी क्योंकि वसन्त ऋतु आ जायगी।

अध्याय ७



गुड़ की बर्फ

कई दिनों तक धूप चमकती रही और मौसम गर्म था। प्रातः-काल खिड़कियों पर तुषार नहीं जमता था। दिन भर ओल्तियों से बर्फ के टुकड़े नीचे गिरते थे और उनसे पट-पट की आवाज होती थी। पेड़ों की नर्म, काली डालें हिलती थीं और बर्फ के टुकड़े नीचे गिरते थे।

जब मेरी और लॉरा खिड़की में से झाँकती थीं तो वे ओल्तियों और बिना पत्तियों की डालों से पानी की बूंदें गिरती हुई देख सकती थीं। बर्फ चमकती नहीं थी। वह नर्म और क्लान्त दिखाई पड़ती थी। बर्फ के टुकड़े पेड़ पर से गिर-गिरकर नीचे जम गये थे और रास्ते के किनारे पर जमी हुई बर्फ भी शनैः-शनैः कम होती जाती थी।

तब एक दिन लॉरा ने आँगन में थोड़ी जमीन देखी जिस पर बर्फ बिलकुल नहीं थी। दिन भर यह जमीन का टुकड़ा बढ़ता रहा और रात होने के पहले पूरे आँगन में कीचड़ हो गई। अब केवल

रास्ते में बर्फ थी। उसके किनारे बर्फ की ढेरी थी और लकड़ी के टाल और बाड़े के चारों तरफ बर्फ थी।

लॉरा ने पूछा, "माँ, क्या मैं खेलने के लिए बाहर नहीं जा सकती?" माँ ने उत्तर दिया।

"लॉरा तुम जा सकती हो।"

"क्या मैं खेलने के लिए बाहर जा सकती हूँ?" उसने फिर पूछा।

"तुम कल जा सकती हो," माँ ने प्रतिज्ञा की।

उस रात को लॉरा को कँपकँपी आ रही थी और उसकी नींद खुल गई। उसका ओढ़ना पतला मालूम पड़ रहा था और उसकी नाक बर्फ के समान ठंडी थी। माँ उसके ऊपर दूसरा लिहाफ ओढ़ा रही थी।

माँ ने कहा, "मेरी के निकट खिसक जाओ! इससे तुम्हें गर्मी मालूम पड़ेगी।"

प्रातःकाल अँगीठी की गर्मी के कारण घर तो गर्म था परन्तु जब लॉरा ने घर से बाहर झाँका तब उसने देखा कि पृथ्वी पर नर्म मोटी बर्फ जमी हुई है। पेड़ों की डालों पर बर्फ पंखों की भाँति जमी हुई थी। बाड़े के घेरे के चारों तरफ और फाटक के खम्भों पर काफी बर्फ जमी हुई थी।

अपने कंधों और बूटों पर से बर्फ गिराकर पिता जी अन्दर आये।

उन्होंने कहा, "यह गुड़ की बर्फ है।"

लॉरा ने सफेद बर्फ के छोटे टुकड़े से जीभ लगाई जो उसकी आस्तीन के तह में पड़ा हुआ था। वह साधारण बर्फ की भाँति केवल

नम था, उसमें मिठास न थी। उसे हर्ष था कि बर्फ चखत हुए उसे किसी ने नहीं देखा था।

"पिता जी, यह क्यों गुड़ की बर्फ है ?" उसने पूछा, किन्तु उन्होंने कहा कि अभी यह समझाने का मेरे पास समय नहीं है। वह पितामह के घर जा रहे थे, अतएव उन्हें जल्दी थी।

पितामह बड़े वन में बहुत दूर रहते थे जहाँ पेड़ घने और अधिक बड़े थे।

लॉरा ने खिड़की के निकट खड़ी होकर देखा कि विशाल, तेज और बलवान् पिता बर्फ पर चले जा रहे हैं। वह कंधे पर बन्दूक लिये थे, कुल्हाड़ी और बारूद उनकी बगल में लटक रही थीं और उनके ऊँचे जूतों से नर्म बर्फ में बड़े-बड़े निशान बनते थे। जब तक वह आँखों से ओझल न हो गये तब तक लॉरा उनको देखती रही।

उस रात को वह देर में घर लौटे। जब वह वापस आये तब माँ बत्ती जला चुकी थीं। एक बाँह के नीचे वह बड़ी गठरी दाबे थे और दूसरे हाथ में लकड़ी की बड़ी ढक्कनदार बाल्टी लिये थे।

"यह लो, कैलोरिन," कहकर उन्होंने गठरी और बाल्टी माँ को दे दी और तब दरवाजे के ऊपर खूँटियों पर बन्दूक रख दी।

उन्होंने कहा, "यदि रास्ते में मुझे भालू मिला होता तो अपना बोझ बिना गिराये हुए मैं उसको गोली नहीं मार सकता था।" तब वह हँसे। "यदि मैं वह बाल्टी और गठरी फेंक देता तब मुझे उसको गोली मारने की जरूरत न पड़ती। जो कुछ उनमें है, मैं खड़ा होकर उसे खाते हुए देख सकता था।

माँ ने गठरी खोली, उसमें दो बड़ी-बड़ी रोटियाँ थीं जो तसले के बराबर थीं। उसने बाल्टी का ढक्कन हटाया। उसमें गाढ़ा बादामी सीरा भरा था।

"लॉरा और मेरी, यह लो," कहकर उन्होंने अपने जेब से दो गोल पोटलियाँ निकालकर एक एक प्रत्येक को दीं।

उन्होंने उनके ऊपर से कागज हटाया और प्रत्येक को छोटी, कड़ी, बादामी केक मिली जिसके किनारे बहुत सुन्दर कटे हुए थे।

पिता ने कहा, "उसे काटकर खाओ," और उनकी आँखें चमक उठीं।

हर एक ने एक छोटा टुकड़ा काटकर खाया, वह मीठी थी। वह उनके मुँह में गल गया। वह उस मिठाई से भी स्वादिष्ट थी जो उन्होंने बड़े दिन को खाई थी।

पिता ने कहा, "यह मेपल वृक्ष का गुड़ है।"

भोजन तैयार था। लॉरा और मेरी ने मेपल वृक्ष के गुड़ की केक को अपनी अपनी रकाबी के पास रक्खा और अपनी रोटी के साथ मेपल का शीरा खाया।

भोजन के पश्चात् आग के पास बैठकर पिता ने उनको अपने घुटनों पर बैठाया और उन्होंने उनको गुड़ की बर्फ के विषय में बतलाया। उन्होंने उन्हें यह भी बतलाया कि पितामह के घर उन्होंने वह दिन कैसे बिताया था।

पिता ने कहा, "जाड़े भर पितामह लकड़ी की बाल्टियाँ और नलियाँ बनाते रहे। उन्होंने उनको देवदार और ऐश की लकड़ी का बनाया था जिससे उनमें रक्खा हुआ मेपल के शीरे का स्वाद न बिगड़ जाय।

"नली बनाने के लिए उन्होंने खपाचियाँ चीरी थीं जो हाथ भर लम्बी और दो अंगुल मोटी थीं। एक सिरे के किनारे वह लकड़ी को आधी काट देते थे और आधी चीरकर निकाल देते थे। इससे वह चपटी हो जाती थी और उसका एक सिरा वर्गाकार हो जाता था।

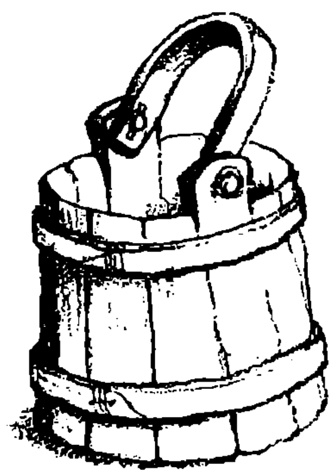
तब बर्मी से वह वर्गाकार सिरे को लम्ब-लम्बे छेद देते थे। फिर वह लकड़ी काट देते थे जिससे छेद के चारों तरफ वह पतली हो जाती थी। लकड़ी के चपटे सिरे को चाकू से काटकर वह खोखला बना डालते थे जिससे अन्त में वह नली बन जाती थी।

"उन्होंने दर्जनों नलियाँ और लकड़ी की दस नई बाल्टियाँ बनाईं। जब पहला गर्म मौसम आया और पेड़ों में रस का संचार हुआ तब उनकी सब नलियाँ और बाल्टियाँ तैयार हो गई थीं।

"तब वह मेपल के वन में गये और मेपल के प्रत्येक पेड़ में उन्होंने बर्मी से छेद किया और छोटी नली का गोल सिरा उन्होंने छेद में ठोंक दिया और उसके नीचे बाल्टी रख दी।

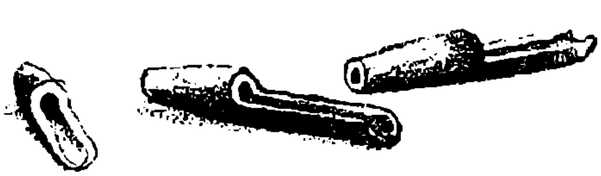
"तुम जानती हो कि रस पेड़ का खून होता है। वसन्त में जब गर्म मौसम आरम्भ होता है तब रस जड़ों से ऊपर चढ़ता है और पेड़ की हर डाल तथा टहनी के सिरों तक पहुँचता है जिससे हरी पत्तियाँ उग सकें।

"मेपल का रस जब ऊपर छेद में चढ़ता था तब वह पेड़ से बाहर निकलता था और छोटी नली में होकर वह बाल्टी में गिरता था।"



लारा ने कहा, "क्या इससे बेचारे पेड़ को चोट नहीं पहुँचती थी ?"

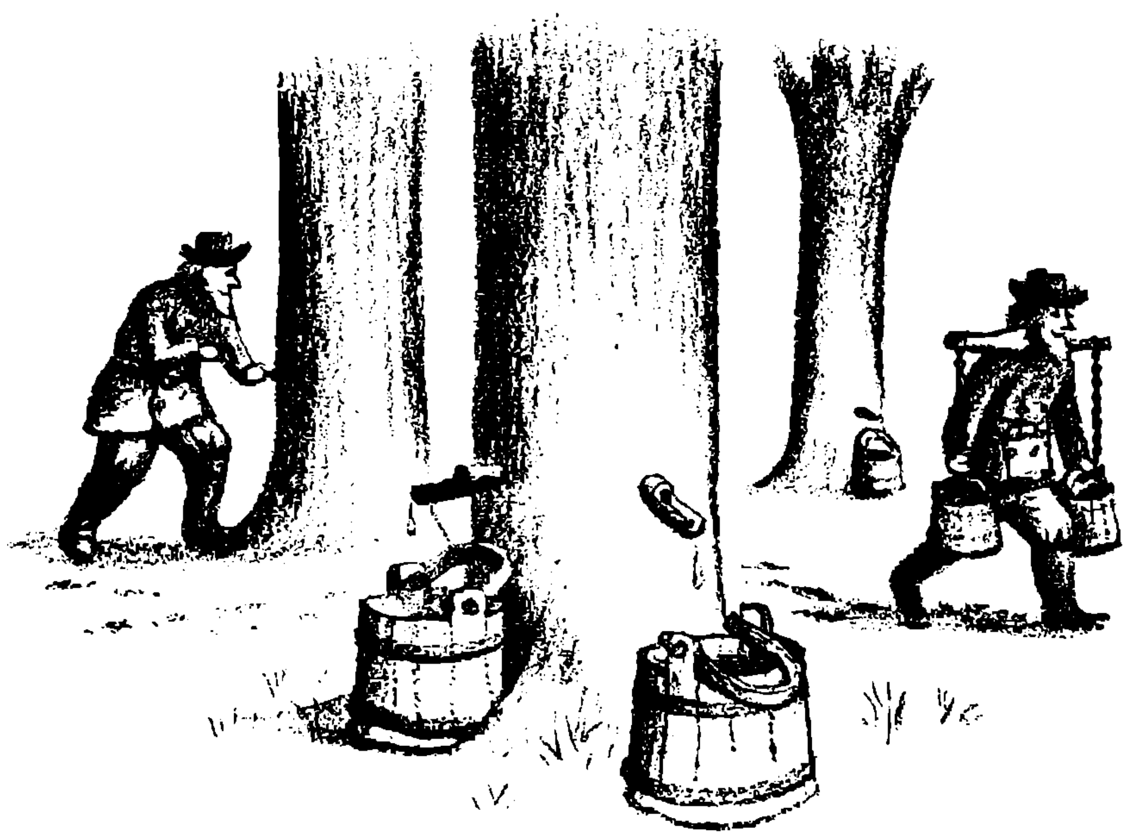
पिता ने उत्तर दिया, "पेड़ों को उतनी ही चोट पहुँचती थी जितनी तुमको उस समय



पहुँचती है जब तुम्हारी उँगलियों में काँटा धँस जाता है और उससे खून बहने लगता है।"

"प्रति दिन पितामह अपने जूते, गर्म कोट और बालदार टोपी पहनकर बर्फीले वन में जाते हैं और रस एकत्र करते हैं। गाड़ी पर पीपा रखकर वहएक पेड़ से दूसरे पेड़ तक जाते हैं और रस को बाल्टियों में से पीपे में उँडेल देते हैं। तब वह दो पेड़ों पर रक्खी हुई बल्ली से लटके हुए लोहे को बड़े कड़ाह तक उठाते हैं।

"रस को वह लोहे के कड़ाह में उँडेल देते हैं। कड़ाह के नीचे वह तेज आग जलाते हैं जिससे रस खौलने लगता है। पितामह सावधानी से उसे देखते रहते हैं। आग इतनी जलती है जिससे



रस खौलता रहे पर इतनी तेज न हो जिससे उबलकर बाहर निकल जाय।

"थोड़ी-थोड़ी देर बाद रस को छानना पड़ता है। पितामह एक बड़े दस्तेवाले पौने से छानते हैं जिसको उन्होंने नीबू की लकड़ी काटकर बनाया है। जब रस बहुत गर्म हो जाता है तब पितामह उसको बड़े पौनों से ऊपर उठाते हैं और धीरे धीरे फिर कड़ाह में उड़ेल देते हैं। इससे रस थोड़ा ठंडा हो जाता है और बहुत अधिक नहीं खौलता।

"जब रस काफी खौल चुकता है, तब वह शीरे को बाल्टियों में भर देते हैं। इसके बाद वह रस को गर्म करते हैं जिससे रकाबी में ठंडा किये जाने पर उसमें दाने पड़ जायें।

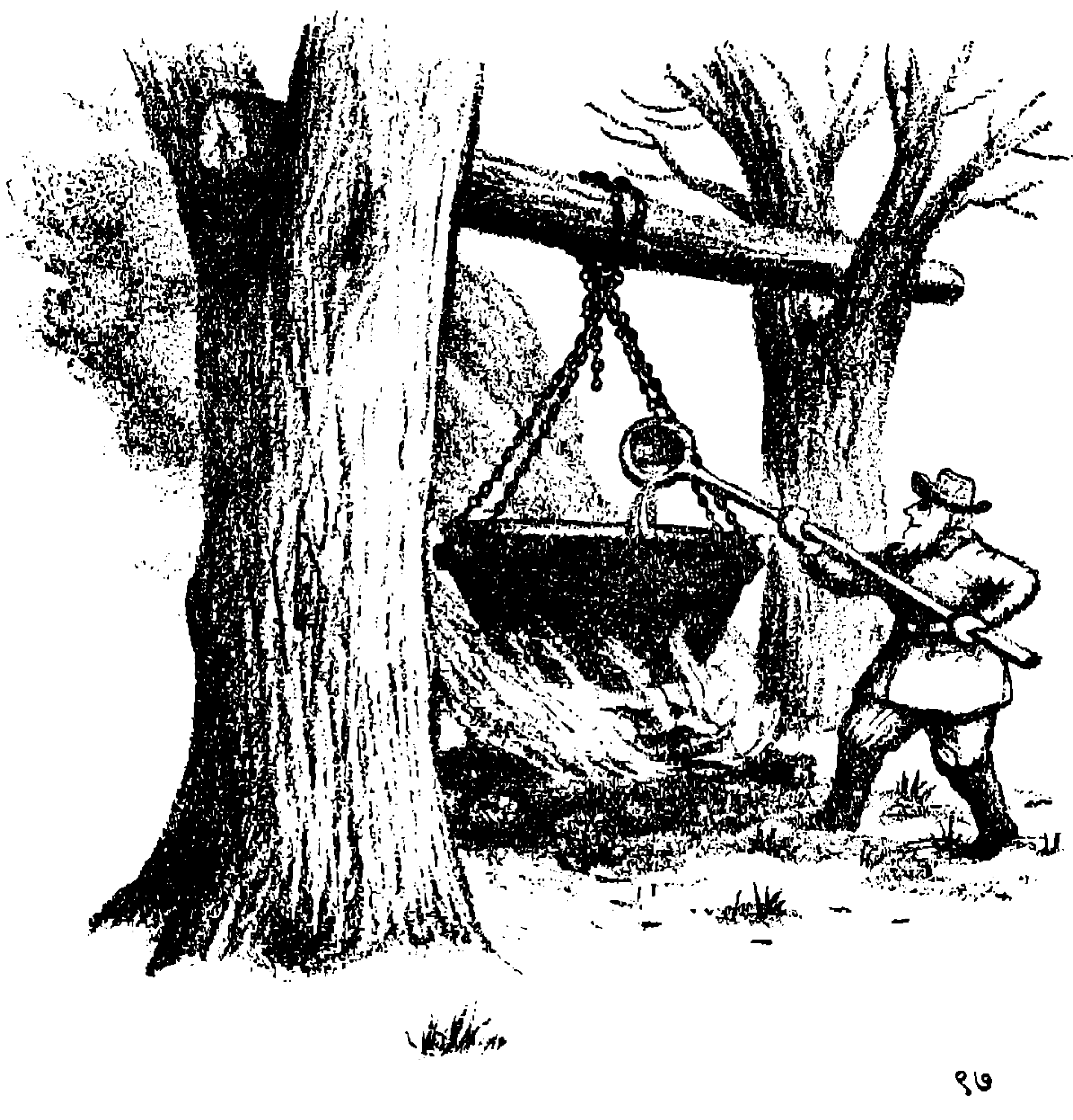
"ज्यों ही रस में दाने पड़ने लगते हैं पितामह आग के पास जाते हैं और उसको कड़ाह के नीचे से हटा देते हैं। तब यथाशीघ्र वह गाढ़े शीरे को बाल्टियों में भर देते हैं जो तैयार रक्खी रहती



हैं। बाल्टियों में शीरा जमकर कठोर, बादामी व गुड़ बन जाता है।

लॉरा ने पूछा, "पितामह गुड़ बनाते रहते हैं। क्या इसीलिए इसको गुड़ बनाने की बर्फ कहते हैं?"

"नहीं," पिता ने कहा, "इसको गुड़ की बर्फ इसलिए कहते हैं कि साल के इस समय बर्फ पड़ने का अर्थ होता है कि लोग और अधिक गुड़ बना सकते हैं। देखो अल्पकालीन ठंड तथा बर्फ के



कारण पेड़ों में पत्तियाँ निकलना कुछ समय के लिए बन्द हो जाता है और इससे रस और अधिक समय तक निकलता है।

"जब अधिक दिनों तक निकलता है तो उसका मतलब होता है कि पितामह इतना गुड़ बना सकते हैं जो साल भर चले। जब ऊन लेकर बाजार जाते हैं तब उनको गोदाम से अधिक चीनी लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती। वह केवल थोड़ी सी चीनी लेते हैं जो उस समय मेज पर इस्तेमाल की जाती है जब अतिथि आते हैं।"

लॉरा ने कहा, "पितामह प्रसन्न होंगे कि इस समय बर्फ पड़ रही है?"

"हाँ," पिता ने कहा, "वह बहुत प्रसन्न हैं। वह अगले सोमवार को फिर गुड़ बनाने जा रहे हैं और उन्होंने हम सबको बुलाया है।"

पिता की नीली आँखें चमक उठीं। सबसे अच्छी चीज अन्त में कहने के लिए उन्होंने बता रक्खा था और उन्होंने माँ से कहा—

"ओ हो, कैलोरिन, नाच भी होगा।"

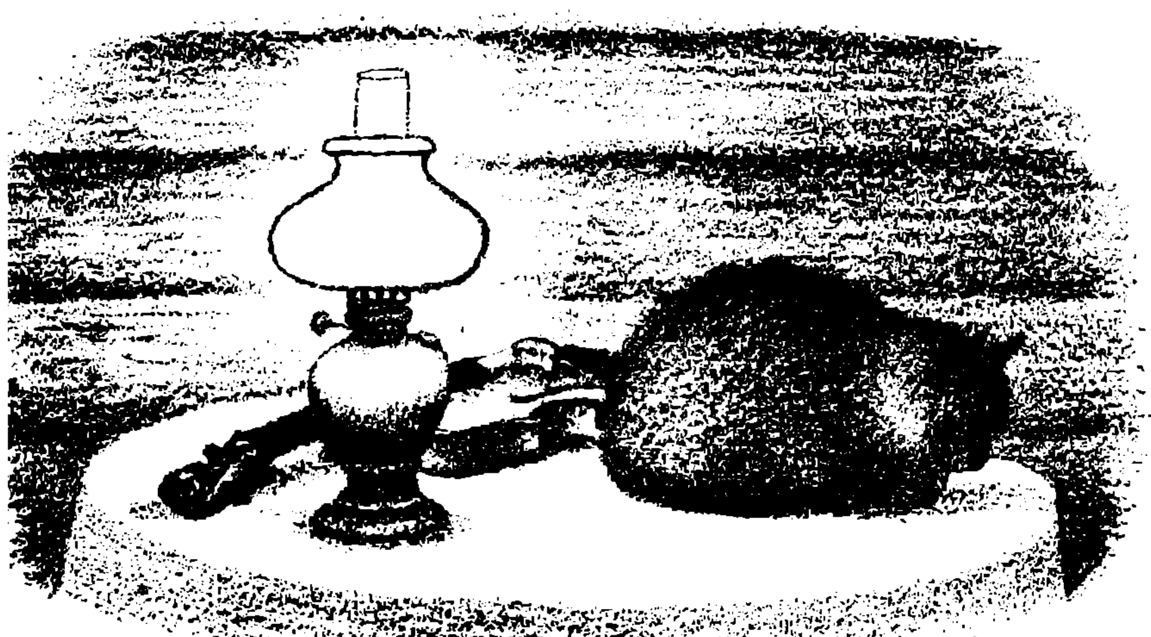


माँ मुस्कराईं। वह बहुत प्रसन्न दिखाई पड़ती थीं। उन्होंने एक क्षण तक कपड़ों की मरम्मत करना बन्द करके कहा, "ओह, चार्ल्स।"

तब वह फिर कपड़े की मरम्मत करने लगीं परन्तु बराबर हँसती रहीं। उन्होंने कहा, "मैं अपनी रेशमी छींट पहनूँगी।"

माँ की रेशमी छींट सुन्दर थी। वह गहरे नीले रंग की थी जिसके ऊपर पकी झरबेरी की तरह बूटियाँ बनी हुई थीं। पूर्व में एक दर्जी ने उसे बनाया था जहाँ से विवाह होने पर माँ पश्चिम की ओर विस्कान्सिन के बड़े वन में आई थीं। पिता से शादी करने के पहले माँ बड़ी शौकीन थीं। एक वस्त्र बनानेवाले ने उनके कपड़े बनाये थे।

रेशमी छींट का बना हुआ उनका वस्त्र कागज में लपेटकर रक्खा हुआ था। लॉरा और मेरी ने माँ को उसे पहने हुए कभी



नहीं देखा था किन्तु उन्होंने उसे एक बार उनको दिखाया था। जो बटन उसमें सामने की ओर लगे थे उन लोगों ने उन्हें छुआ था। उसने उनको यह भी दिखाया था कि उसकी जालीदार सिलाई कितनी सुन्दर है।

माँ अपना रेशमी छींट का वस्त्र पहनेंगी। इससे कितना महत्त्व-पूर्ण नाच होगा। लॉरा और मेरी उत्तेजित थीं। वे पिता के घुटनों पर उछलती-कूदती थीं और नाच के विषय में अनेक प्रश्न पूछती थीं। अन्त में पिता ने कहा——

"लड़कियो, तुम लोग जाकर सो जाओ। जब तुम लोग नाच देखोगी तब उसके विषय में सब कुछ जान जाओगी। मुझे सारंगी में नया तार लगाना है।"

उन लोगों ने स्वादिष्ट भोजन किया था। उन्हें हाथ-मुँह धोना तथा प्रार्थना करना था। जब लॉरा और मेरी सुखपूर्वक लेट गईं तब पिता जी सारंगी बजाने और गाने लगे। पिता जी पैर से ठेका भी देते जाते थे—

मैं हूँ अश्वारोही कप्तान,
डटकर लड़ना मेरी आन,
शत्रु हराना मेरी शान,
मैं हूँ अश्वारोही कप्तान।

अध्याय ८



पितामह के घर नाच

सोमवार को प्रातःकाल सब लोग तड़के उठे क्योंकि पितामह के घर के लिए प्रस्थान करने की जल्दी थी। पिता चाहते थे वह वहाँ पहुँचकर रस एकत्र करने तथा खौलाने में पितामह की सहायता करें। जो लोग नाच में आनेवाले थे उनके लिए भोजन बनाने में माँ, दादी और चाचियों की सहायता करना चाहती थीं।

लोगों ने जलपान किया, रकाबियाँ धोई गईं और बत्ती की रोशनी में बिस्तर बाँधे गये। पिता ने सावधानी से अपनी सारंगी उसके डिब्बे में बन्द करके बड़ी गाड़ी में रख दिया जो दरवाजे पर इन्तजार कर रही थी।

लॉरा, मेरी और शिशु कैरी के साथ माँ सुखपूर्वक गाड़ी के पेंदे में पुआल पर बैठ गईं और उनके ऊपर वस्त्र ओढ़ा दिया गया। उस समय ठंडी हवा बह रही थी।

घोड़े अपने सिर हिला रहे थे और खुर पटक रहे थे। इससे गाड़ी की घंटियाँ आनन्दपूर्वक बज रही थीं। बड़े जंगल में से होकर उन लोगों ने पितामह के घर की ओर प्रस्थान किया।

सड़क पर बर्फ नर्म और चिकनी थी। इससे गाड़ी तेजी से उस पर फिसलने लगी और ऐसा मालूम होता था कि बड़े-बड़े पेड़ दोनों तरफ तीव्रता से विपरीत दिशा में भागे जा रहे हैं।

थोड़ समय के बाद जंगल में धूप चमकने लगी। पेड़ों के तनों की छाया के बीच-बीच में पीले प्रकाश की लम्बी धारियाँ पड़ती थीं और बर्फ जरा गुलाबी रंग की दिखाई पड़ती थी। सब छाया हल्की और नीली थी। बर्फ की प्रत्येक राशि की छाया पड़ती थी।

सड़क की पटरी पर बर्फ में जंगली जानवरों के पैर के चिह्न बने हुए थे। पिता ने उन्हें लॉरा को दिखाया। खरगोशों, चूहों और बर्फ पर रहनेवाली चिड़ियों के पैरों के चिह्न बने हुए थे। लोमड़ियों के पीछा करनेवाले कुत्तों और जंगलों में भागनेवाले हिरणों के पद-चिह्न भी थे।

हवा गर्म हो चली थी। इससे पिता ने कहा कि बर्फ अधिक दिनों तक नहीं गिरेगी।

उन्हें ऐसा मालूम हुआ कि वे थोड़ी ही देर में पितामह के घर के निकट खुले वन में पहुँच गये हैं। गाड़ी की घंटियाँ बज रही थीं। दादी दरवाजे पर आईं और खड़ी होकर मुस्कराने तथा उन लोगों को अन्दर बुलाने लगीं।

उन्होंने कहा कि पितामह और चाचा जार्ज ने मेपल के वन में काम आरम्भ कर दिया है। इसलिए पिता उनकी सहायता करने के लिए गये और लॉरा, मेरी तथा बच्ची कैरी को गोद में लिये माँ दादी के घर में गईं और अपने ओढ़ने के वस्त्र उतार दिये।

लॉरा दादी के घर को पसन्द करती थी। वह उनके घर से बहुत बड़ा था। उसमें एक भारी कमरा था। इसके सिवाय उसमें चाचा जार्ज के लिए एक छोटा कमरा और चाची डोसिया तथा

चाची रूबी के लिए एक कमरा था। इनके अतिरिक्त रसोईघर था जिसमें एक बड़ी अँगीठी थी।

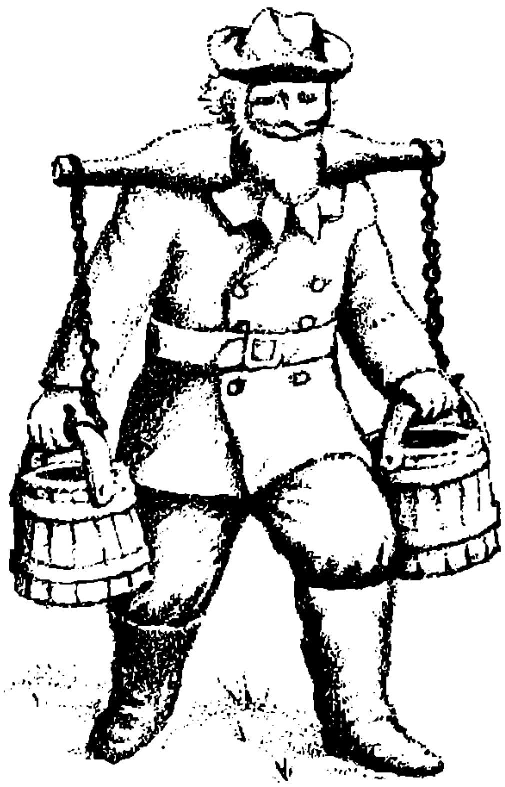
बड़े कमरे में एक सिरे पर अग्निकुंड था और दूसरे सिरे पर खिड़की के नीचे दादी का बिस्तर था। उसमें एक सिरे से दूसरे सिरे तक दौड़ने में बड़ा आनन्द आता था। फर्श में लकड़ी के चौड़े मोटे टुकड़े लगे थे जिनको पितामह ने अपनी कुल्हाड़ी से कुन्दों में से काटकर बनाया था। फर्श चारों तरफ बराबर कर दिया गया था और उसको रगड़कर साफ कर दिया गया था। खिड़की के नीचे का बड़ा बिस्तर पंख बिछाकर नर्म बना दिया गया था।

लॉरा और मेरी बड़े कमरे में खेलती थीं और माँ रसोई बनाने में दादी तथा चाचियों की सहायता करती थीं। उन्हें दिन छोटा मालूम होता था। मनुष्य अपना भोजन मेपल के वन में ले गये थे। अतएव उनके भोजन के लिए मेजें नहीं लगाई गईं। उन्होंने ठंडी कचौड़ियाँ खाईं और दूध पिया। परन्तु रात के भोजन के लिए दादी ने जल्दी-जल्दी हलुआ तैयार किया।

वह अँगीठी के पास बैठकर हलुआ बना रही थीं। उन्होंने कड़ाही में घी डाला। जब वह पिघल गया तब उन्होंने उसमें सूजी डाली। उसको उन्होंने अच्छी तरह भूना। जब वह बादामी रंग की हो गई तब उन्होंने उसमें चीनी मिलाई, फिर उसमें किशमिश और चिरौंजी डाली। सारा घर सोंधी सुगन्ध से भर गया। देवदार की लकड़ी जल रही थी। खिड़की के चमकते हुए शीशे से धूप आ रही थी। प्रत्येक चीज बड़ी और साफ थी।

रात के भोजन के समय पिता और पितामह वनों से आये। हर एक के कन्धे पर एक छोटी काँवर थी जिसको पितामह ने बनाया था। काँवर के दोनों सिरों पर जंजीर बँधी थी जिसमें

हुक लगा था। हर एक हुक से मेपल के गर्म शीरे से भरी हुई लकड़ी की बाल्टी लटक रही थी।



पिता और पितामह शीरे को जंगल के बड़े कड़ाह से लाये थे। वे अपने हाथों से उन बाल्टियों को पकड़े थे। परन्तु बाल्टियाँ उनके कन्धों पर से लटकी थीं।

दादी ने अँगीठी पर पीतल के एक बड़े देकचे के लिए जगह बनाई। पिता और पितामह ने उस देकचे में शीरे को उड़ेल दिया। वह इतना बड़ा था कि चारों बाल्टियों का शीरा उसमें आ गया।

तब चाचा जार्ज एक छोटी बाल्टी में शीरा लेकर आये और हर एक आदमी ने गर्म हलुआ तथा मेपल का शीरा खाया।

चाचा जार्ज सेना से घर आये थे। वह अपना नीला सैनिक कोट पहने थे जिसमें पीतल के बटन लगे थे। उनकी आँखें नीली तथा वीरतापूर्ण थीं। वह बड़े और तगड़े थे और कुछ झूमते हुए चलते थे।

जब लॉरा हलुआ खा रही थी तब वह बराबर चाचा जार्ज को देखती रही क्योंकि उसने पिता को यह कहते हुए सुना था कि वह अशिष्ट है।

"जब से जार्ज सेना से लौटा है तब से वह अशिष्ट हो गया है।"

पिता ने अपना सिर इस प्रकार हिलाते हुए कहा था मानो वह खिन्न थे परन्तु विवश हो, चाचा जार्ज जब चौदह वर्ष के थे जब वह भागकर सेना में भरती हो गये थे और ढोल बजाते थे।

लॉरा ने पहले कभी अशिष्ट मनुष्य नहीं देखा था। वह नहीं जानती थी कि वह जार्ज से भयभीत है या नहीं।

जब भोजन समाप्त हो गया तब चाचा जार्ज घर से बाहर गये और देर तक तथा जोर से अपना सैनिक बिगुल बजाते रहे। बड़े वन में दूर तक उसकी सुन्दर ध्वनि हुई। वन अंधकारपूर्ण तथा शान्त थे और पेड़ इस प्रकार चुपचाप खड़े थे मानो वे उनका बिगुल सुन रहे हों। तब जंगल में बहुत दूर से आवाज वापस आई—पतली और सुरीली मानो कोई छोटा बिगुल बड़े बिगुल के जवाब में बजाया जा रहा हो।

"सुनो", चाचा जार्ज ने कहा, "क्या यह सुन्दर नहीं है?" लॉरा ने उनको देखा परन्तु कुछ बोली नहीं। जब चाचा जार्ज ने बिगुल बजाना बन्द किया तब वह दौड़कर घर में गई।

माता और दादी ने रकाबियाँ हटाकर उन्हें धोया और रसोईघर में झाड़ू लगाया। चाची डोसिया और चाची रूबी ने अपने कमरे में अपना शृंगार किया!

लॉरा उनके बिस्तर पर बैठी थी और उन्हें अपने लम्बे बालों में कंघी लगाते हुए और सावधानी से माँग काढ़ते हुए देखती थी। उन्होंने अपने ललाट से गर्दन के ऊपर तक और आर-पार एक कान से दूसरे कान तक माँग काढ़ी। उन्होंने बालों की चोटियाँ बनाईं और फिर चोटियों को बाँधकर जूड़े बनाये।

उन्होंने रसोईघर के बेंच में लगे हुए तसले में साबुन से हाथ-मुँह धोये। उन्होंने उस चिपचिपे गहरे बादामी रंगवाले साबुन



को नहीं इस्तेमाल किया था जिसे दादी ने दैनिक उपभोग के लिए बनाकर एक जार में रक्खा था। उन्होंने बाजार का साबुन इस्तेमाल किया।

वह देर तक अपने सामने के बाल काढ़ती रहीं और बत्ती उठाकर छोटे शीशे में अपना मुँह देखती रहीं जो कुन्दे की दीवार पर टँगा था। माँग की दोनों तरफ उन्होंने ब्रुश से अपने बाल ऐसे चिकने बना दिये कि वह बत्ती की रोशनी में रेशम की तरह चमकते थे। दोनों तरफ पफ भी चमकता था। चोटी के सिरे ऐंठकर पीछे जूड़े के नीचे बाँध दिये गये थे।

तब उन्होंने अपने उन सुन्दर सफेद मोजों को पहना जो उन्होंने सफेद सूत से बुनकर बनाया था और जिसमें अनेक डिजाइन बने

थे। फिर उन्होंने जूतों में बटन बन्द किये। उन्होंने पहनने में एक दूसरे की सहायता की। चाची डोसिया ने अपनी पूरी शक्ति लगाकर चाची रूबी की चोली के फीते कसे और तब चाची रूबी ने चाची डोसिया की चोली के फीते कसकर बाँध दिये।

"खींचो, रूबी, खींचो," चाची डोसिया ने हाँफते हुए कहा, "और जोर से खींचो।" इसलिए चाची रूबी ने अपने पैर जमाये और कसकर खींचा। चाची डोसिया अपने हाथों से अपनी कमर नापती रही और अन्त में वह बोली, "मैं समझती हूँ कि इससे अधिक तुम नहीं कस सकती।"

उन्होंने कहा, "कैरोलिन कहती है कि जब उसकी शादी हुई थी तब चार्ल्स उसकी कमर को अपने हाथ से नाप सकता था।"

कैरोलिन लॉरा की माँ थी और जब लारा ने यह सुना तो उसे बड़ा गर्व हुआ।

तब चाची रूबी और चाची डोसिया ने फलालैन के साये, सादे साये और कलप किये कड़े साये पहने जिनके चारों तरफ फीते लगे हुए थे। फिर उन्होंने अपने सुन्दर वस्त्र पहने।

चाची डोसिया का ऊपरी वस्त्र छींट का बना था जिस पर लाल फूल और हरी पत्तियाँ बनी थीं। उसकी फतुही में सामने की तरफ काले-काले बटन लगे थे जो काली झरबेरी से इतने मिलते-जुलते थे कि लॉरा उन्हें खाना चाहती थी।

चाची रूबी का वस्त्र अंगूरी रंगका बना हुआ था। उस पर हल्के अंगूरी रंग के पंखाकार चित्र बने हुए थे। उसमें सुनहले रंग के बटन लगे हुए थे और हर एक बटन पर एक किला और एक पेड़ बने हुए थे।

चाची डोसिया का सुन्दर सफेद कालर सामने की ओर एक

बड़ी गोल पिन से बँधा हुआ था जिस पर स्त्री का सिर बना हुआ था। किन्तु चाची रूबी का कालर लाह के बने हुए लाल गुलाब से बँधा था। उसको उसने स्वयं रफू करनेवाली सुई की नोक पर बनाया था जिसका छेद टूट गया। इससे वह रफू करने के लिए और इस्तेमाल नहीं की जा सकती थी।

जब वे अपने बड़े गोल घाँघरों को पहनकर फर्श पर चलती थीं तो बहुत सुन्दर दिखाई पड़ती थीं। उनकी कमर कसकर बँधी थी। उनके चिकने और चमकीले बालों के नीचे उनके गाल लाल और आँखें प्रकाशपूर्ण थीं।

गहरे हरे रंग की अपनी रेशमी छींट पहने हुए माँ भी सुन्दर दिखाई पड़ती थीं। जिस पर बनी हुई छोटी-छोटी पत्तियाँ झरबेरी की भाँति दिखाई पड़ती थीं। उनका चुन्नटदार घाँघरा कहीं उभरा हुआ और कहीं दबा हुआ था। उस पर कहीं-कहीं गहरे हरे रंग के फीते में गाँठ लगी हुई थी। उनके गले में सोने की पिन लगी थी। वह चपटी और लॉरा की दो बड़ी उँगलियों के बराबर लम्बी और चौड़ी थी। उस पर चित्र खुदे हुए थे और उसके किनारे पर मोती लगे थे। माता ऐसी सम्पन्न और सुन्दर दिखाई पड़ती थीं कि लारा उन्हें छूने से डरती थी।

लोगों का आना आरम्भ हो गया या। कुछ लोग लालटेन लेकर बर्फीले वनों में से होकर पैदल आ रहे थे और कुछ लोग गाड़ियों में। गाड़ियों की घंटियाँ बराबर बजती रहती थीं।

बड़ा कमरा ऊँचे बूटों और सरसराते हुए घाँघरों से भरा था और दादी के बिस्तर पर अनेक बच्चे पंक्तियों में लेटे हुए थे। चाचा जेम्स और चाची लिबी अपनी छोटी लड़की के साथ आये थे। उसका नाम भी लॉरा इनगाल्स था। दोनों लॉरा बिस्तर पर

झुककर बच्चों को देखती थीं और दूसरी लॉरा कहती थी कि उसका शिशु बच्ची कैरी से अधिक सुन्दर है।

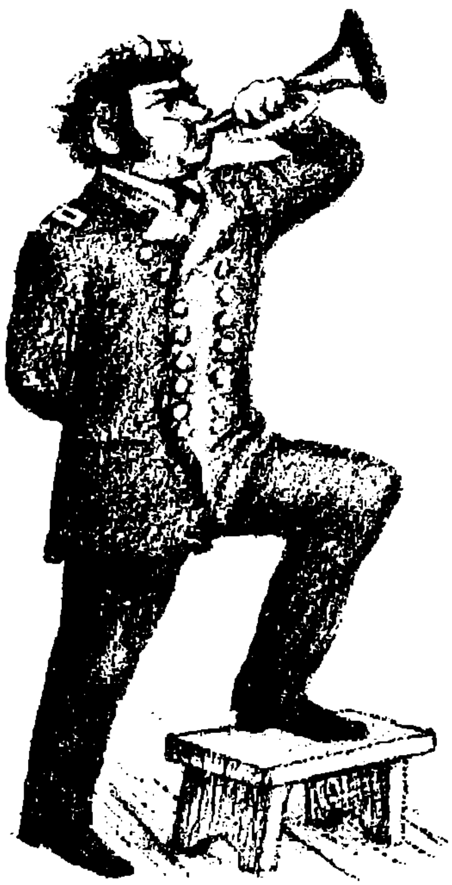
लॉरा ने कहा, "ऐसा नहीं है। कैरी संसार में सब बच्चों से अधिक सुन्दर है।"



दूसरी लॉरा ने कहा, "नहीं, ऐसा नहीं है।"

"हाँ, वह सबसे सुन्दर है।"

"नहीं, वह सुन्दर नहीं है।"



माँ अपनी सुन्दर रेशमी छींट पहने हुए आईं और कठोरतापूर्वक बोलीं--"लॉरा।"

इसलिए किसी भी लॉरा ने और कुछ नहीं कहा।

चाचा जार्ज अपना बिगुल बजा रहे थे जिससे बड़े कमरे में बहुत आवाज होती थी। वह बिगुल बजाकर हँसी मजाक करते थे, हँसते और नाचते थे। तब पिता ने सन्दूक में से अपनी सारंगी निकाली और बजाने लगे। सब दम्पति फर्श पर वर्गाकार खड़े होकर नाचने लगे।

पिता ने पुकारा--"बहुत अच्छा, दाहना, बायाँ" और सब घाँघरे वृत्ताकार घूमने लगे और सब बूटों के चलने की आवाज होने लगी। वृत्त गोलाई में घूमता रहा। सब घाँघरे एक तरफ जाते थे और बूट उनकी विपरीत दिशा में। लोग एक दूसरे के हाथ ऊपर हवा में पकड़ते तथा छोड़ते थे।

"सब लोग अपने साथी के साथ नाचें", पिता ने पुकारा और "हर एक पुरुष अपनी बाईं ओरवाली स्त्री को नमस्कार करे।"

सबने पिता के आदेश का पालन किया। लारा ने देखा कि माँ का घाँघरा घूम रहा है, उनकी पतली कमर और सिर झुक रहे थे।

उसने सोचा कि माँ संसार में सबसे सुन्दर नाचती है। सारंगी बज रही थी।

मनुष्य तथा स्त्रियाँ वृत्तों में नाच रहे थे। घाँघरे घूमते थे और बूट खटखट करते थे। साथी नमस्कार करते थे और एक दूसरे से अलग हो जाते थे, मिलते थे और नमस्कार करते थे ।

रसोईघर में दादी अकेली थी। पीतल की बड़ी देकची में वह शीरा खौला रही थीं। वह बाजे के सुर में शीरा चलाती थीं। पिछले दरवाजे पर एक पीपे में साफ बर्फ थी। कभी-कभी दादी चम्मच में शीरा भरकर ले जाती थीं और तश्तरी में बर्फ रखकर उस पर उड़ेलती थीं।



लॉरा ने नाचनेवालों को फिर देखा। पिता "आयरलैण्ड की धोबिन" नामक गीत बजा रहे थे।

लॉरा अपने पैरों को शान्त नहीं रख सकी। चाचा जार्ज ने उसको देखा और हँसे। तब उन्होंने उसका हाथ पकड़ा और कोने में उसके साथ थोड़ा नाच किया। वह चाचा जार्ज को बहुत पसन्द करती थी। हर एक आदमी रसोईघर के दरवाजे के ऊपर से हँसता था। वे दादी को रसोईघर से

भीतर घसीट रहे थे। दादी का वस्त्र भी सुन्दर था। वह गहरे नीले रंग का कैलिको पहने थीं। जिस पर पतझड़ के रंगवाली पत्तियाँ बनी थीं। उनके कपोल हँसने से लाल हो रहे थे और वह अपना सिर हिला रही थीं। लकड़ी का चम्मच उनके हाथ में था।

उन्होंने कहा, "मैं शीरा छोड़कर नहीं जा सकती।"

किन्तु पिता ने "आरकन्सस यात्री" नामक गीत बजाना आरम्भ किया और हर एक आदमी उसमें सुर मिलाकर ताली बजाने लगा। इसलिए दादी ने उन सबको नमस्कार किया और अकेले



थोड़ा सा नाच किया। वह कभी अन्य स्त्रियों की भाँति सुन्दर नाच सकती थीं। ताली की आवाज में पिता की सारंगी का बजना नहीं सुनाई पड़ता था।

अकस्मात् चाचा जार्ज ने कमर पर हाथ रखकर कबूतर के डैनों के आकार का बनाया और दादी के सामने झुककर नाचने लगे। दादी ने अपना चम्मच किसी और को दे दिया उन्होंने अपने हाथ कमर पर रखे और जार्ज के सामने खड़ी हो गईं। हर एक आदमी चिल्लाया। दादी नाच रही थीं।

लॉरा तथा अन्य लोग बाजे के राग में स्वर मिलाकर ताली बजा रहे थे। सारंगी ऐसी मधुर बज रही थी जैसी पहले कभी नहीं बजी थी। दादी की आँखें देदीप्यमान थीं, उनके कपोल लाल थे और उनके घाँघरे के नीचे उनकी एड़ियाँ इतनी तेजी से उठती और गिरती थीं कि जितनी तेजी से जार्ज के बूट।

प्रत्येक व्यक्ति उत्तेजित था। चाचा जार्ज और दादी एक दूसरे के सम्मुख खड़े नाच रहे थे। सारंगी नहीं रुकती थी। चाचा जार्ज हाँफने लगे। वह अपने ललाट से पसीना पोंछकर फेंकते थे। दादी की आँखें चमक उठीं।

"जार्ज, तुम उनको नहीं हरा सकते!" कोई चिल्लाया।

चाचा जार्ज और तेजी से नाचने लगे। वह पहले की अपेक्षा दूनी तेजी से नाचते थे। दादी भी ऐसा ही करती थीं। प्रत्येक व्यक्ति ने फिर शाबाशी दी। सब स्त्रियाँ हँस रही थीं और ताली बजा रही थीं। सब पुरुष जार्ज को चिढ़ा रहे थे। जार्ज को इसकी परवा नहीं थी परन्तु वह ऐसे जोर से हाँफते थे कि हँस नहीं सकते थे। वह नाच रहे थे।

पिता की नीली आँखें चमक रही थीं। वह खड़े होकर जार्ज

और दादी को देख रहे थे। उनकी सारंगी फिर बजी। लॉरा इधर-उधर उछलने-कूदने लगी। वह चिल्लाती और ताली बजाती थी।

दादी नाचती रहीं। उनके हाथ कमर पर थे। उनकी ठुड्ढी ऊपर उठी थी और वह मुस्करा रही थीं। जार्ज नाचते रहे, परन्तु अब उनके बूटों के जमीन पर गिरने की ऐसी ऊँची आवाज नहीं होती थी जैसी पहले। दादी की एड़ियाँ आनन्दपूर्वक थिरकती रहीं। जार्ज के ललाट पर से एक बूँद पसीना लुढ़ककर उनके गाल पर चमकने लगा।

अकस्मात् उन्होंने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाये और हाँफते हुए बोले। "मैं हार मानता हूँ।" उन्होंने नाचना बंद कर दिया।

प्रत्येक व्यक्ति दादी को शाबाशी देने लगा। उनके चिल्लाने से भयानक शोर हुआ। दादी एक मिनट और नाचीं और तब रुक गईं। वह हाँफती हुई हँसने लगीं। उनकी आँखें ठीक वैसे ही चमकीं जैसे पिता की चमकती थीं जब वह हँसते थे। जार्ज भी हँस रहे थे और आस्तीन से ललाट का पसीना पोंछ रहे थे।

अकस्मात् दादी ने हँसना बन्द कर दिया। वह घूम कर यथाशक्ति तेजी से रसोई में भाग गईं। सारंगी का बजना भी बन्द हो गया था। सब स्त्रियाँ एकत्र बातचीत करती थीं और सब मनुष्य जार्ज को तंग करते थे। पर जब दादी ने हँसना बन्द कर दिया तब सब लोग एक मिनट के लिए चुप हो गये।

तब वह रसोई और बड़े कमरे के बीचवाले दरवाजे पर आईं और बोलीं—

"शीरा तैयार है। आकर आप लोग चखें।"

तब प्रत्येक व्यक्ति फिर हँसने और बातचीत करने लगा। वे सब शीघ्रतापूर्वक रकाबी के लिए रसोईघर में गये और फिर बाहर

बर्फ लाने गये । रसोईघर का दरवाजा खुला था और ठंडी हवा भीतर आ रही थी ।

बाहर पाले के कारण तारे टिमटिमा रहे थे और हवा लॉरा के गालों और नाक पर बहुत ठंडी लग रही थी। उसकी साँस धुएँ की तरह थी।

वह, दूसरी लॉरा और अन्य बच्चों ने अपनी तश्तरियों से बर्फ खोदा। तब वे मनुष्यों से भरे हुए रसोईघर में गये।

दादी पीतल के देकचे के पास खड़ी थीं और हर एक तश्तरी में बर्फ के ऊपर लकड़ी के चम्मच से शीरा उड़ेलती थीं। ठंडा होकर वह नर्म पट्टी बन जाता था। और वे उसे खाते थे।

वे जितना चाहें, खा सकते थे क्योंकि मेपल का गुड़ किसी को हानि नहीं पहुँचाता। देकची में काफी शीरा था और घर के बाहर काफी बर्फ थी। ज्योंही वे एक तश्तरी खा चुकते थे त्योंही फिर उसे बर्फ से भर देते थे और दादी उस पर शीरा उड़ेल देती थीं।

जब वे इस प्रकार की बनी हुई पट्टी और अधिक नहीं खा सकते थे तब उन्होंने लम्बी मेज पर रक्खे हुए कद्दू के मुरब्बे, झरबेरी के मुरब्बे, पेंठे और केक खाये। आम की चटनी और कचौड़ी भी उन्होंने खाई। आम की चटनी बहुत खट्टी थी।

जितना वे खा सकते थे उतना उन्होंने खाया और फिर नाचने लगे। परन्तु दादी देकचे में रखे हुए शीरे को देखती रहीं। कई बार उन्होंने थोड़ा रकाबी में निकाला और उसे हिलाया। तब उन्होंने सिर हिलाया और फिर उसे देकचे में उड़ेल दिया।

दूसरा कमरा सारंगी के बजने और नाचने की आवाज से भरा हुआ था।

अन्त में जब दादी ने शीरा तश्तरी में हिलाया तब उसमें बालू की तरह छोटे-छोटे दाने पड़ गये और उन्होंने पुकारा—

"लड़कियो, जल्दी करो। शीरे में दाने पड़ रहे हैं।"

चाची रूबी, चाची डोसिया और माँ नाच छोड़कर दौड़ती हुई गईं। उन्होंने छोटे और बड़े कटोरे रख दिये। ज्योंही दादी ने उनमें शीरा भरा त्योंही उन्होंने और कटोरे रक्खे। उन्होंने भरे हुए कटोरों को अलग रख दिया जिससे उनमें शीरा जाकर गुड़ बन जाय।

तब दादी ने कहा।

"अब बच्चों के लिए बर्तन लाओ।"

हर एक लड़के तथा लड़की के लिए कोई न कोई कटोरा, टूटा प्याला, या रकाबी थी। वे सब उत्सुकतापूर्वक देखते थे और दादी बड़े चम्मच से शीरा बाँटती थीं। शायद काफी शीरा न हो। ऐसी परिस्थिति में किसी न किसी को निस्वार्थ तथा विनम्र होना पड़ता था।

पर ठीक सबको परसने भर के लिए शीरा था। पीतल के देकचे की अन्तिम खुरचन अन्तिम व्यक्ति के सामने परसी गई। कोई भी व्यक्ति छूटा नहीं।

सारंगी का बजाना और नाच चलता रहा। दोनों लॉरा खड़ी होकर नाचनेवालों को देखती थीं। तब वे एक कोने में फर्श पर बैठ गईं और देखने लगीं। नाच ऐसा सुन्दर था और संगीत ऐसा मधुर था कि लॉरा समझती थी कि वह इससे कभी नहीं ऊबेगी।

सब स्त्रियाँ और पुरुष नाचते रहे और सारंगी बजती रही।

तब लॉरा जगी। वह दादी के बिस्तर के पैताने बेंड़े-बेंड़े लेटी थी। प्रातःकाल हो गया था। माँ, दादी और बच्ची कैरी सो रही थीं।

पिता और पितामह आग के निकट फर्श पर कम्बल लपेटे सो रहे थे। मेरी कहीं दिखाई नहीं पड़ती थी। वह चाची डोसिया और चाची रूबी के बिस्तर पर उनके साथ सो रही थी।

शीघ्र सब लोग जाग गये। सब के जलपान के लिए केक और मेपल का शीरा तैयार था। तब पिता घोड़ों और गाड़ी को दरवाजे तक लाये।



उन्होंने माँ और कैरी को गाड़ी में चढ़ाया। पितामह, मेरी और चाचा जार्ज ने लॉरा को उठाकर गाड़ी के अन्दर पुआल में बैठा दिया। पिता ने उनको कपड़ा ओढ़ा दिया और किनारे-किनारे लपेट दिया। जब वे घर की तरफ बड़े वन में जाने लगे तब पितामह और चाचा जार्ज निकट खड़े होकर उनको बिदा अभिनन्दन देने लगे।

धूप गर्म थी और घोड़ों के खुरों से अधपिघली बर्फ के छोटे-छोटे टुकड़े ऊपर उछलते थे। गाड़ी के पीछे लॉरा उनके पद-चिह्न देख सकती थी। उनके पैरों से बर्फ में छोटे-छोटे गड्ढे बन गये थे।

पिता ने कहा, "रात होने के पहले गुड़ की बर्फ का गिरना समाप्त हो जायगा।"

अध्याय ९





नगर की



यात्रा

गुड़ की बर्फ समाप्त होने पर वसन्त ऋतु आई। टेढ़े-मेढ़े घर के चारों तरफ नीबू की झाड़ियों में चिड़ियाँ गाती थीं। घास उगकर फिर हरी हो गई और वन में जंगली फूल खिल गये। सर्वत्र विभिन्न प्रकार के फूल दिखाई पड़ते थे ।

ज्योंही दिन गर्म हुए त्योंही उन्होंने माता-पिता से नंगे पाँव दौड़ने की अनुमति माँगी। पहले वे लकड़ी के ढाल के चारों ओर नंगे पाँव दौड़ीं। दूसरे दिन वे कुछ और आगे तक दौड़ीं। शीघ्र उनके जूतों में तेल लगाया गया और वे रख दिये गये। अब वे दिन भर नंगे पाँव दौड़ सकती थीं।

हर रात को सोने के पहले उन्हें पैर धोने पड़ते थे। उनके घाँघरों के नीचे उनके टखने और पैर उनके चेहरों की भाँति बादामी रंग के हो गये।

घर के सामने दोनों बलूत के पेड़ों के नीचे उनके घरौंदे थे। मेरी का घरौंदा मेरी के वृक्ष के नीचे और लॉरा का घरौंदा लॉरा के वृक्ष के नीचे था। हरी घास उनके लिए हरा कालीन थी। हरी

पत्तियों की छत बनी थी और उनके बीच से उनको नीले आकाश का कुछ भाग दिखाई पड़ता था।

पिता ने मजबूत छाल का झूला बनाया और उसे लॉरा के पेड़ की एक बड़ी, नीची डाल से लटका दिया। वह लॉरा का झूला था क्योंकि वह उसके पेड़ पर टँगा था किन्तु वह स्वार्थ का त्याग करती थी और जब कभी मेरी की झूलने की इच्छा होती थी तब वह उसे झूलने देती थी।

मेरी के पास खेलने के लिए एक टूटी रकाबी थी। लॉरा के पास एक सुन्दर प्याला था जिसका केवल एक भाग टूटा था। शार्लट, नेटी और पिता के बनाये हुए दो लकड़ी के मनुष्य उनके साथ घरौंदों में रहते थे। प्रतिदिन वे शार्लट और नेटी के लिए पत्तियों के नये हैट बनाती थीं और उनकी मेजों पर रखने के लिए वे पत्तियों के प्याले और रकाबियाँ बनाती थीं। एक सुन्दर चिकनी चट्टान मेज का काम करती थी।



अब दोनों गायें सूकी और रोजी घास चरने और नई रसीली पत्तियाँ खाने के लिए वन में छोड़ दी जाती थीं। गोशाला में दो बछड़े रहते थे और सूअरबाड़े में सात छौने अपनी माँ के साथ रहते थे।

पिता ने पार साल जो पेड़ काटकर जंगल साफ किया था। उसमें ठूठों के चारों

तरफ जोतकर वह फसलें बो रहे थे। एक रात को वह काम से घर लौटे और लॉरा से बोले :

"तुम्हारी समझ में मैंने आज क्या देखा ?"

वह अटकल न लगा सकी।

पिता ने कहा, "आज प्रातःकाल जब मैं साफ किये हुए भाग में काम कर रहा था तो मुँह ऊपर उठाने पर मैंने जंगल के किनारे हिरणी को देखी। तुम कभी भी कल्पना नहीं कर सकती कि उसके साथ क्या था।

लॉरा और मेरी ने एक दूसरे का हाथ पकड़कर साथ ही अंदाज लगाया, "हिरणी का बच्चा !"

"हाँ", पिता ने कहा, "हिरणी का बच्चा उसके साथ था। वह बड़ा सुन्दर बच्चा था। उसका रंग आकर्षक था और आँखें बड़ी तथा काली थीं। उसके पैर छोटे-छोटे थे—मेरे हाथ के अँगूठे से अधिक बड़े नहीं थे। उसकी टाँगें छोटी और पतली थीं और थूथन कोमल था।

"वह वहाँ खड़ा होकर अपनी बड़ी और कोमल आँखों से मुझे देखता रहा। वह नहीं जानता था कि मैं क्या हूँ। वह बिलकुल भयभीत नहीं था।"

लॉरा ने कहा, "पिता क्या तुम हिरण के छोटे बच्चे को भी गोली मार दोगे ?"

"नहीं, कभी नहीं", उन्होंने उत्तर दिया। "और मैं न तो उसकी माँ को गोली मारूँगा न उसके पिता को जब तक सब छोटे-छोटे जंगली जानवर बड़े न हो जायँगे तब तक मैं शिकार नहीं करूँगा। पतझड़ तक हम लोगों को बिना ताजे गोश्त के काम चलाना पड़ेगा।"

पिता ने कहा कि ज्योंही अनाज हमारे घर में आवेगा त्योंही

हम लोग शहर जायँगे। लॉरा और मेरी भी जा सकती थीं। अब उनकी उम्र नगर जाने योग्य हो गई थी।

वह बहुत उत्तेजित थीं और दूसरे दिन वे नगर यात्रा का नाटक करने लगीं। वे यह नाटक अच्छी तरह न कर सकीं क्योंकि उन्हें मालूम नहीं था कि नगर कैसा होता है। वे जानती थीं कि नगर में एक गोदाम है परन्तु उन्होंने उसे कभी देखा नहीं था।

इसके बाद लगभग प्रतिदिन शार्लेट और नेटी पूछती थीं, "क्या हम लोग भी नगर जा सकती हैं?" परन्तु लॉरा और मेरी सदा कहती थीं, "नहीं, प्रिये, तुम लोग इस वर्ष नहीं जा सकतीं। यदि तुम लोग अच्छा आचरण करोगी तो शायद पार साल तक जा सकोगी।"

तब एक दिन पिता ने कहा, "कल हम लोग नगर जायँगे।"

यद्यपि वह सप्ताह का मध्य था तथापि उस रात को माँ ने लॉरा और मेरी को खूब नहलाया और उनके बाल काढ़े। उनके लम्बे बालों को उन्होंने दो चोटियों में बाँटा, हर चोटी में भी कंघा लगाया और एक कपड़े से उसे बाँध दिया। अपने तकियों पर वे जिधर घूमती थीं उधर उनके सिरों पर बालों की गाँठें थीं। माँ चाहती थीं प्रातःकाल उनके बाल घुँघराले हो जायँ।

वे ऐसी उत्तेजित थीं कि उन्हें जल्द नींद नहीं आई। रोज की तरह माँ मरम्मत करने की टोकरी लेकर वहीं बैठी थीं। वह जलपान के लिए चीजें तैयार करने में व्यस्त थीं। वह सबसे अच्छे मोजे, साये, वस्त्र, पिता की अच्छी कमीज और स्वयं अपना बादामी कैलिको जिस पर छोटे-छोटे बैंगनी फूल बने थे, इकट्ठा करके रख रही थीं।

अब दिन कुछ लम्बे होते थे। प्रातःकाल जलपान समाप्त करने के पहले माँ बत्ती बुझा देती थीं। वसन्त का सुन्दर, साफ प्रातःकाल था।

माँ ने जल्दी-जल्दी लॉरा और मेरी को जलपान कराया और शीघ्रता से रकाबियाँ धोईं। जब माँ बिस्तर लपेट रही थीं तब उन्होंने अपने-अपने मोजे पहने। तत्पश्चात् माँ ने मेरी को नीला कैलिको और लॉरा को गहरा लाल कैलिको पहनाया। मेरी ने लॉरा की पीठ पर बटन बंद किये और तब लारा ने मेरी के बटन बंद किये।

माँ ने उनके बालों में से कपड़े निकालकर उनमें कंघा किया। वे लम्बे घूँघरदार बाल उनके कंधों पर लटक रहे थे। उन्होंने ऐसी तेजी से कंघा लगाया कि कभी कभी कंघे के दाँत उनके सिर में चुभ जाते थे। मेरी के बाल सुन्दर सुनहले थे परन्तु लॉरा के बाल मटमैले रंग के थे।

जब उनके घुँघराले बालों में कंघा लग गया तब माँ ने उनकी टोपियाँ उनकी ठुड्ढियों के नीचे बाँध दीं। उन्होंने अपनी सुनहली पिन से अपना कालर बाँध लिया। वह अपनी टोपी पहन रही थीं तब पिता गाड़ी हाँककर फाटक पर लाये।

उन्होंने घोड़ों को मलकर साफ किया था जिससे वे चमकते थे। उन्होंने गाड़ी को पोंछकर साफ कर दिया था और गाड़ी में बैठने की जगह पर साफ कम्बल बिछा दिया था। बच्ची कैरी को गोद में लेकर माँ पिता के साथ गाड़ी में एक जगह बैठीं और उनके पीछे गाड़ी में बँधे हुए एक तख्ते पर लॉरा और मेरी बैठीं।

जब वे वसन्ती वन में जाते थे तब वे प्रसन्न थे। कैरी हँसती और उछलती थी, माँ मुस्करा रही थीं और घोड़ों को हाँकते हुए पिता सीटी बजाते थे। सड़क पर धूप गर्म और चमकीली थी। पत्तीदार वन में से शीतल और मधुर सुगंध आती थी।

आगे सड़क पर खरगोश खड़े थे। उनके छोटे अगले पंजे लटक रहे थे और वे अपनी नाक से सूँघ रहे थे। उनके लम्बे और हिलते

हुए कानों में धूप चमक रही थी। अपनी छोटी सफेद दुमों को हिलाकर वे छलाँग मारते हुए भाग जाते थे। दो बार लॉरा और मेरी ने देखा कि पेड़ों के नीचे की छाया में से हिरण अपनी बड़ी काली आँखों से उनकी तरफ देख रहे हैं।

नगर सात मील पर था। नगर का नाम पीपिन था। वह पीपिन नामक झील के तट पर स्थित था।

बहुत देर के उपरान्त लॉरा को पेड़ों के बीच से नीले पानी की झलक मिलने लगी। कड़ी सड़क नर्म बालू में बदल गई। गाड़ी के पहिये उसमें गहरे धँस जाते थे। उन्हें खींचने से घोड़ों को पसीना आ जाता था। कुछ मिनटों तक आराम करने के लिए प्रायः पिता उनको रोक दिया करते थे।

तब एकाएक वन में से सड़क बाहर निकली और लॉरा ने झील देखी। वह आकाश जैसी नीली थी और वह संसार के छोर तक फैली थी। जहाँ तक उसकी दृष्टि जाती थी वहाँ तक केवल नीला पानी ही पानी था। बहुत दूर पर आकाश और पानी मिलते थे और वहाँ पर और अधिक नीली रेखा थी।

सिर के ऊपर आकाश विशाल था। लॉरा को पहले कभी नहीं मालूम हुआ था कि आकाश इतना विशाल है। उसके चारों तरफ इतना रिक्त स्थान था कि उसे अपनी लघुता और भय का अनुभव हुआ। पर उसे इस बात का हर्ष था कि माँ और पिता निकट हैं।

एकाएक धूप गर्म हो गई। सूर्य विशाल, रिक्त आकाश में, उनके सिर के लगभग ऊपर था और शीतल वन झील के तट के पीछे स्थित थे। इतने विशाल आकाश के नीचे बड़े वन भी छोटे प्रतीत होते थे।



पिता ने घोड़ों को रोका। वे अपने स्थान पर पीछे घूमे। उन्होंने अपने चाबुक से आगे की ओर संकेत किया।

"देखो, लॉरा और मेरी," उन्होंने कहा, "आगे वह पीपिन का नगर है।"

लॉरा तख्ते पर खड़ी हो गई और पिता ने उसकी सुरक्षा के लिए उसकी बाँहें पकड़ लीं। इसलिए वह नगर को देख सकी। जब उसने उसे देखा तब उसकी साँस रुक गई। वह समझ गई कि मैकीडूडल का क्या अनुभव हुआ होगा जब वह नगर को नहीं देख सका, क्योंकि उसमें अनेक मकान थे।

झील के ठीक दाहिने तट पर एक बड़ी इमारत थी। पिता ने बतलाया कि यह गोदाम है। वह कुन्दों का नहीं बना था। वह चौड़े भूरे तख्तों से बना था जो एक दूसरे से ऊपर रक्खे थे। उसके चारों तरफ बालू फैली थी।

गोदाम के पीछे एक मैदान था। वह उस मैदान से बड़ा था जो पिता ने जंगल में पेड़ों को काटकर बनाया था। ठूँठे पेड़ों के बीच में इतने अधिक मकान स्थित थे जितने कि लॉरा कल्पना भी नहीं कर सकती थी। वे भी कुन्दों के नहीं बने थे। वे गोदाम की तरह तख्तों के बने थे।

लॉरा ने कभी इतने घरों की कल्पना नहीं की थी। वे एक दूसरे के बहुत निकट स्थित थे। निस्सन्देह वे गोदाम से बहुत छोटे



थे। उनमें से एक नये तख्तों का बना था जो अभी भूरा नहीं हुआ था। नई कटी हुई लकड़ी की तरह उसका रंग पीला था।

लोग इन सब घरों में निवास करते थे। उनकी चिमनियों से धुआँ निकलता था। यद्यपि वह सोमवार का दिन नहीं था तथापि किसी स्त्री ने अपने धुले हुए कपड़ों को अपने घर के निकट झाड़ियों और ठूँठे पेड़ों पर फैलाया था।

गोदाम और घरों के बीच जो खुली जगह थी उसमें कई लड़के

और लड़कियाँ एक साथ खेल रहे थे। वे एक ठूँठ से कूदकर दूसरे पर जाते थे और चिल्लाते थे।

पिता ने कहा, "अच्छा, वह पीपिन है।"

लॉरा ने केवल अपना सिर हिलाया। वह ध्यानपूर्वक देखती रही किन्तु एक शब्द न कह सकी। कुछ देर पश्चात् वह फिर बैठ गई और घोड़े आगे बढ़े।

उन्होंने गाड़ी को झील के किनारे छोड़ दिया। पिता ने घोड़ों को खोल दिया और दोनों को गाड़ी के दो तरफ बाँध दिया। तब उन्होंने मेरी और लॉरा का हाथ पकड़ा और माँ बच्ची कैरी को गोद में लेकर उनके साथ चलने लगीं। वे गहरी बालू में होकर गोदाम की ओर गये। गर्म बालू लॉरा के जूतों के ऊपर से भीतर घुस गई।

गोदाम के सामने एक चौड़ा चबूतरा था। उसके एक सिरे पर बालू में से जीने बने थे। लॉरा का हृदय ऐसा तेज धड़क रहा था कि वह जीने पर मुश्किल से चढ़ सकी। उसका सारा शरीर काँप रहा था।

यह वह गोदाम था जहाँ पर पिता ऊन बेचने आया करते थे। जब वे अन्दर गये तब गोदाम के बाबू ने उनको पहचान लिया। गोदाम का बाबू बाहर आया और पिता तथा माता से बातें कीं और तब लॉरा और मेरी ने शिष्टाचार दिखाया।

मेरी ने कहा, "आपके मिजाज कैसे हैं?" लेकिन लॉरा कुछ न कह सकी।

गोदाम के बाबू ने पिता और माता से कहा, "वह लड़की जो आपके पास है सुन्दर है," और उसने मेरी के सुनहरे घुँघराले बालों की प्रशंसा की। किन्तु उसने लॉरा या उसके घूँघरदार बालों के विषय में कुछ नहीं कहा, वे कुरूप और बादामी थे।

गोदाम में देखने योग्य चीजें भरी थीं। उसकी एक तरफ दीवार में आलमारियाँ थीं जिनमें रंगीन छींटें और कैलिको थे। वे सुन्दर लाल, गुलाबी, नीले, बादामी और बैंगनी रंग के थे। फर्श पर तख्तों के किनारे-किनारे कीलों के पीपे, गोल भरे छर्रों के पीपे और गट्टा तथा रेवड़ी से भरे लकड़ी के मटके थे। नमक और चीनी से भरे हुए बोरे भी थे।

गोदाम के बीच में एक हल था जो चमकीली लकड़ी का बना था और जिसमें चमकता हुआ फाल लगा था। उसमें लोहे की कुल्हा-ड़ियाँ, हथौड़े, आरियाँ और भाँति-भाँति के चाकू थे जैसे शिकारियों के चाकू, कसाइयों के चाकू और खाल निकालने के चाकू आदि। उसमें छोटे और बड़े बूट और जूते थे।

जितनी चीजें उस गोदाम में थीं उन्हें लॉरा एक सप्ताह में भी नहीं देख सकती थी। वह नहीं समझती थी कि संसार में इतनी अधिक वस्तुएँ हैं।

माता और पिता ने देर तक क्रय-विक्रय किया। गोदाम के बाबू ने सुन्दर कैलिको के कई थान उतारे और फैला दिये जिससे माँ उन्हें उँगलियों से छूएँ, देखें और मूल्य समझें। लॉरा और मेरी देखती तो थीं पर छू नहीं सकती थीं। हर एक नया रंग और डिजाइन पहले की अपेक्षा अधिक सुन्दर मालूम होता था और वे संख्या में बहुत अधिक थे। लॉरा नहीं समझती थी कि माँ इनमें से कैसे चुन सकेंगी।

पिता को कमीजें बनाने के लिए माँ ने दो नमूने के कैलिको चुने। उनके लिए जम्पर बनाने के लिए उन्होंने बादामी रंग का एक कपड़ा चुना। तब चादरें और जाँघिया बनाने के लिए उन्होंने कुछ सफेद कपड़ा लिया।

पिता ने माँ के लिए नया चोगा बनाने के उद्देश्य से काफी कैलिको खरीदा। माँ ने कहा।

"ओह ! नहीं, चार्ल्स, मुझे उसकी आवश्यकता नहीं है।"

परन्तु पिता हँसे और बोले, "तुम स्वयं चुन लो, नहीं तो मैं वह लाल कपड़ा ले लूँगा जिस पर बड़ी पीली बूटियाँ बनी हैं।" माँ हँसीं और उनका मुँह लाल हो गया। उन्होंने एक कपड़ा चुना जिसकी



जमीन हिरण के बच्चे के रंग की थी और उस पर गुलाब की कलियाँ बनी थीं।

तब पिता ने अपने लिए पेटी और हुक्के पर पीने के लिए कुछ तम्बाकू लिया। माँ ने एक पौंड चाय और कागज में लपेटी हुई कुछ चीनी घर में रखने के लिए ली जिससे अतिथियों के आने पर उनका इस्तेमाल किया जा सके। वह पीली बादामी रंग की चीनी थी। उस प्रकार की गहरे बादामी रंग की मेपल की चीनी नहीं थी जो माँ प्रतिदिन इस्तेमाल करती थीं।

जब सब क्रय-विक्रय हो गया तब गोदाम के बाबू ने लॉरा और मेरी प्रत्येक को एक-एक बड़ी बालूशाही दी। वे इतनी चकित तथा प्रसन्न थीं कि अपनी अपनी बालूशाही को देखती खड़ी रहीं। तब मेरी को स्मरण आया और उसने कहा, "आपको धन्यवाद।"

लॉरा न बोल सकी। प्रत्येक व्यक्ति प्रतीक्षा कर रहा था पर उसके मुँह से कोई शब्द न निकला। माँ को पूछना पड़ा।

"लॉरा, तुम क्या कहा करती हो?"

तब लॉरा ने अपना मुँह खोला और धीमे से बोली, "आपको धन्यवाद।"

इसके पश्चात् वे गोदाम से बाहर निकले। दोनों बालूशाही बड़ी, चपटी और गोल थीं। उन पर लाल अक्षरों में कुछ लिखा था। माँ ने उनको पढ़कर सुनाया।

दोनों बालूशाही बिलकुल एक आकार की थीं। परन्तु लॉरा की बालूशाही पर के अक्षर मेरी की बालूशाही के अक्षरों से बड़े थे।

वे सब बालू में होकर झील के किनारे गाड़ी के पास गये।

गाड़ी के पेंदे में रखकर पिता कुछ जई लाये थे। उन्होंने उसे घोड़ों को खिलाया। माँ ने खाने से भरा हुआ सन्दूक खोला।

वे सब गाड़ी के निकट गर्म बालू पर बैठे और उन्होंने रोटी, मक्खन, पनीर, समोसे और लड्डू खाये। पीपिन झील की लहरें उनके पैरों के पास तट से टकराती थीं और बहुत ही हल्की आवाज के साथ वापस लौट जाती थीं।

भोजन के उपरान्त अन्य मनुष्यों से बातचीत करने के लिए पिता जी गोदाम को वापस गये। माँ कैरी को लिए तब तक बैठी रहीं जब तक वह सो न गई। परन्तु लॉरा और मेरी झील के किनारे दौड़ती थीं। वे उन कंकड़ों को चुन रही थीं जो लहरों में धक्के खाने के कारण चिकने हो गये थे।

बड़े वन में वैसे कंकड़ नहीं मिलते थे।

जब लॉरा को कोई सुन्दर कंकड़ मिलता था तब वह उठाकर जेब में रख लेती थी। फिर उससे भी अधिक अच्छा कंकड़ मिलता था। इस प्रकार वहाँ पर अनेक सुन्दर-सुन्दर कंकड़ थे जिनमें से कुछ को उठाकर उसने अपनी जेब भर ली। तब पिता ने बुलाया और वे दौड़कर गाड़ी के पास गईं क्योंकि घोड़े जोत दिये गये थे और घर जाने का समय आ गया था।

जब लॉरा उन सुन्दर पत्थरों को जेब में लिये हुए बालू में से होकर पिता के पास दौड़कर जाती थी तब वह अत्यन्त प्रसन्न थी। परन्तु जब पिता ने उसे उठाकर गाड़ी में उछाला तब एक भयानक बात हो गई।

भारी कंकड़ों के कारण उसकी जेब वस्त्र से फटकर अलग हो गई। जेब गिर पड़ी और सब कंकड़ गाड़ी के पेंदे में बिखर गये।

लॉरा रोने लगी क्योंकि उसका सर्वोत्तम वस्त्र फट गया था।

माँ ने कैरी को पिता की गोद में दे दिया और जल्दी से फटी हुई जगह को देखने आईं। तब उन्होंने कहा "कोई बात नहीं, सब ठीक है।"

"लॉरा, रोना बन्द करो," उन्होंने कहा, "मैं जेब को फिर लगा दूँगी।" उन्होंने लॉरा को दिखाया कि न तो वस्त्र फटा है और न जेब। जेब एक छोटी थैली थी जो उसके वस्त्र में सिल दी गई थी और उसके नीचे लटकती रहती थी। केवल सिलाई उखड़ गई थी। माँ फिर से जेब को सिलकर नई बना सकती थीं।



माँ ने कहा, "लॉरा, सुन्दर कंकड़ों को चुन लो। दूसरी बार इतना लालच मत करना।"

इसलिए लॉरा ने कंकड़ों को एकत्र किया, उन्हें जेब में रक्खा और जेब को गोद में ले लिया। पिता उसकी हँसी उड़ाते हुए कहते थे कि वह ऐसी लालची लड़की है कि उसने इतने अधिक कंकड़ एकत्र किये हैं जिन्हें वह ले नहीं जा सकती। पर उसे इसकी चिन्ता नहीं थी।

मेरी के साथ कोई ऐसी घटना नहीं हुई। वह छोटी अच्छी लड़की थी जो सदा अपने वस्त्रों को साफ रखती थी और शिष्टाचार का पालन करती थी। उसके बाल सुनहरे घूँघरदार थे और उसकी हृदयाकार बालूशाही पर एक कविता लिखी थी।

लॉरा की बगल में बैठी हुई मेरी बहुत अच्छी, कोमल और स्वच्छ दिखाई पड़ती थी। लॉरा समझती थी कि यह उचित नहीं है।

परन्तु यह उसके जीवन का सबसे आश्चर्यजनक दिन था। वह सुन्दर झील, नगर और अनेक वस्तुओं से भरे हुए गोदाम के विषय में सोचती थी। जब तक वह घर नहीं पहुँची तब तक वह सावधानी से कंकड़ों को गोद में और हृदयाकार बालूशाही को रूमाल में रक्खे रही। वह ऐसी सुन्दर थी कि वह उसे खाना नहीं चाहती थी बल्कि सदा के लिए सुरक्षित रखना चाहती थी।

गाड़ी बड़े वन में होती हुई घर की तरफ जाती थी। सूर्यास्त हो गया और वन में अँधेरा छा गया। परन्तु शीघ्र ही चन्द्रमा निकल आया। वे सुरक्षित थे क्योंकि पिता अपनी बन्दूक लिये हुए थे।

पेड़ों से छनकर हल्की चाँदनी नीचे आती थी और आगे सड़क

पर प्रकाश और छाया के टुकड़े दिखाई पड़ते थे। घोड़ों के खुरों से खटखट की आवाज की मधुर ध्वनि होती थी।

लॉरा और मेरी कुछ नहीं बोलती थीं क्योंकि वे थक गई थीं और सोती हुई कैरी को गोद में लिये हुए माँ शान्त बैठी थीं। किन्तु पिता गुनगुना रहे थे—

"जन्मभूमि है अति ही प्यारी,
तीनों लोकों से है वह न्यारी।'

अध्याय १०



ग्रीष्मकाल

अब ग्रीष्म ऋतु आ गई और लोग अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों के घर जाने लगे। कभी-कभी चाचा हेनरी या चाचा जार्ज या पितामह बड़े वन में से होकर पिता से मिलने आते थे। माँ दरवाजे पर आती थीं और पूछती थीं कि सब लोग कैसे हैं और कहती थीं––

"चार्ल्स जंगल के साफ किये हुए भाग में है।"

तब वह रोज की अपेक्षा अधिक भोजन पकाती थीं और भोजन करने में अधिक समय लगता था। काम पर जाने के पहले पिता, माता और अतिथि बैठकर थोड़ा वार्तालाप किया करते थे।

कभी-कभी माँ लॉरा और मेरी को सड़क के पार पहाड़ी के नीचे श्रीमती पीटरसन से मिलने जाने देती थीं। पीटरसन परिवार हाल में ही आया था। उनका घर नया था और सदा साफ रहता था क्योंकि श्रीमती पीटरसन के कोई छोटी लड़की नहीं थी जो उसे गन्दा करती। वह स्वीडेन की रहनेवाली थीं। श्रीमती

पीटरसन लॉरा और मेरी को वे फीते, सुई के रंगीन काम और चीनी के खिलौने दिखाती थीं जो वह स्वीडेन से ले आई थीं।

श्रीमती पीटरसन उनसे स्वीडिश भाषा बोलती थीं और लॉरा और मेरी उनसे अँगरेजी में बातें करती थीं किन्तु वे एक दूसरे की बातें खूब समझती थीं। जब वे घर वापस लौटने लगती थीं तब वह उनमें से प्रत्येक को एक कचौड़ी देती थीं और वे उसे धीरे-धीरे खाते हुए घर जाती थीं।

लॉरा अपनी कचौड़ी का आधा खाती थी और मेरी अपनी कचौड़ी का आधा। वे आधी-आधी कचौड़ी बच्ची कैरी के लिए बचा लेती थीं। जब वे घर पहुँचती थीं तब कैरी को आधी-आधी दो कचौड़ियाँ मिलती थीं जो मिलकर एक कचौड़ी के बराबर होती थी।

यह ठीक नहीं था। लॉरा और मेरी केवल यह चाहती थीं कि उनको और कैरी को कचौड़ियों का बराबर-बराबर भाग मिले। तथापि यदि मेरी अपनी आधी कचौड़ी बचा लेती और लॉरा अपनी पूरी कचौड़ी खा जाती या लॉरा अपनी आधी कचौड़ी बचा लेती और मेरी अपनी पूरी कचौड़ी खा लेती तब भी उनके हिस्से बराबर नहीं होते।

उन्हें नहीं मालूम था कि वे क्या करें। इसलिए हर एक आधी-आधी कचौड़ी बचाती थीं और उसे बच्ची कैरी को देती थीं। परन्तु उन्हें सदैव अनुभव होता था कि कचौड़ियों का विभाजन उचित नहीं है।

कभी-कभी कोई पड़ोसी समाचार भेजता था कि उसका परिवार एक दिन के लिए आ रहा है। तब माँ अधिक सफाई करती थीं और अधिक भोजन पकाती थीं और गोदाम से खरीदी

हुई चीनी का बंडल खोलती थीं। निश्चित दिन को प्रातःकाल एक गाड़ी फाटक पर आती थी और लॉरा तथा मेरी को अपरिचित बच्चों के साथ खेलने को मिलता था।

जब श्री और श्रीमती ह्यूलीट आये तब वे अपने साथ ईवा और क्लेरेन्स को लाये। ईवा सुन्दर लड़की थी जिसकी आँखें काली और बाल काले तथा घुँघराले थे। वह सावधानी से खेलती थी और अपना वस्त्र साफ रखती थी वह सिकुड़ने नहीं पाता था। मेरी यह पसन्द करती थी किन्तु लॉरा क्लेरेन्स के साथ खेलना पसन्द करती थी।

क्लेरेन्स का सिर लाल था और उसके चमड़े पर कहीं-कहीं बादामी चित्तियाँ पड़ी थीं। वह सदा हँसा करता था। उसके भी वस्त्र सुन्दर थे। वह नीले कपड़ों का सूट पहने था जिसमें सामने गिलट के बटन लगे थे और किनारों पर गोट लगी थी। उसके जूतों के अगले भाग में ताँबा लगा था।

जूतों के अगले भागों पर लगी हुई ताँबे की पट्टियाँ ऐसी चमक रही थीं कि लॉरा की इच्छा होती थी कि यदि वह लड़का होती तो बहुत अच्छा होता। छोटी लड़कियाँ ताँबा लगे हुए जूते नहीं पहनती थीं।

लॉरा और क्लेरेन्स दौड़ते-चिल्लाते और पेड़ों पर चढ़ते थे परन्तु मेरी और ईवा साथ-साथ अच्छी तरह चलती थीं और बातें करती थीं।

माँ और श्रीमती ह्यूलीट साथ-साथ आती-जाती थीं और महिलोपयोगी पुस्तक देखती थीं जो श्रीमती ह्यूलीट लाई थीं। पिता और श्री ह्यूलीट घोड़ों और फसलों को देखते थे और हुक्का पीते थे।

एक बार चाची लाटी दिन व्यतीत करने के लिए आई। उस दिन प्रात:काल लॉरा को बहुत देर तक शान्त खड़ा रहना पड़ा जब माँ ने उसके बालों में बँधी हुई कपड़ों की पट्टियाँ खोलीं और उनमें कंघी लगाई जिससे लम्बे-लम्बे घूँघर बन गये। मेरी बिलकुल तैयार एक कुर्सी पर बैठी थी। उसके सुनहरे घुँघराले बाल चमक रहे थे और नीली पोशाक साफ और धुली थी।



लॉरा अपनी लाल फ्राक को पसन्द करती थी। माँ ने उसके बालों को भयानक रूप से खींचा। परन्तु सुनहले के बदले वह बादामी थे। इससे किसी ने उन पर ध्यान नहीं दिया। प्रत्येक व्यक्ति मेरी के बालों को देखता था और उसकी प्रशंसा करता था।

अन्त में माँ ने कहा, "अब तुम लोग तैयार हो गईं। तुम्हारे बाल सुन्दर घूँघरदार हैं और लाटी आ रही है। तुम दोनों दौड़कर उससे मिलो और पूछो कि उसे कैसे बाल अच्छे लगते हैं—बादामी घूँघरदार या सुनहरे घूँघरदार?

लॉरा और मेरी घर के बाहर दौड़ती हुई गईं, क्योंकि चाची

लाटी फाटक पर पहुंच गई थीं। वह मेरी से बहुत लम्बी लड़की थीं, उनका वस्त्र सुन्दर गुलाबी रंग का था और उनकी गुलाबी टोपी एक डोरी से लटक रही थी।

मेरी ने पूछा, "चाची लाटी, तुम्हें बादामी घूँघरदार बाल अच्छे लगते हैं या सुनहरे?" माँ ने उनसे यह पूछने के लिए कहा था और मेरी बहुत अच्छी छोटी लड़की थी जो अपने माता-पिता की आज्ञा का सदैव पालन करती थी।

लारा प्रतीक्षा कर रही थी कि देखें चाची लाटी क्या कहती है। वह बेचैन थी।

मुस्कराकर चाची लाटी ने कहा, "मुझे दोनों प्रकार के बाल बहुत अच्छे लगते हैं।" उसने लॉरा और मेरी का हाथ पकड़ा। वे उसके दोनों ओर खड़ी थीं और नाचती-कूदती दरवाजे पर पहुँचीं जहाँ माँ खड़ी थीं।

धूप खिड़कियों से घर के भीतर आ रही थी और प्रत्येक वस्तु स्वच्छ तथा सुन्दर थी। मेज पर लाल कपड़ा बिछा था और अँगीठी पर काली चमकीली पालिश लगी हुई थी। शयनागार के दरवाजे से लॉरा देख सकती थी कि पहियेदार बिस्तर बड़े बिस्तर के नीचे अपने स्थान पर रक्खा है। भंडारघर का दरवाजा बिलकुल खुला था जिससे आलमारियों पर रक्खे हुए स्वादिष्ठ भोजन दिखाई पड़ते थे और उनकी सुगन्ध आ रही थी। काली सूसन ऊपर के कमरे में सो रही थी, वहाँ से "म्याऊँ म्याऊँ" करती हुई आई।

सब कुछ इतना सुन्दर था और लॉरा इतनी प्रसन्न थी कि कोई भी कल्पना नहीं कर सकता था कि लॉरा इतनी शरारत करेगी जितनी उसने उस दिन शाम को की।

चाची लाटी चली गई थीं। लॉरा और मेरी थकी और चिड़-

चिड़ी हो गई थीं। वे लकड़ी के टाल के पास थीं और प्रातःकाल आग जलाने के लिए टोकरी में चैलियाँ एकत्र कर रही थीं। वे सदा चैलियाँ चुनने से घृणा करती थीं किन्तु प्रतिदिन उन्हें यह करना पड़ता था। आज रात को इस काम से वे सब दिनों की अपेक्षा अधिक घृणा करती थीं।

लॉरा ने सबसे बड़ी चैली उठाई और मेरी ने कहा--

"मुझे इसकी चिन्ता नहीं। खैर, चाची लाटी मेरे बालों को सबसे अधिक पसन्द करती है। सुनहले बाल बादामी बालों से कहीं अधिक सुन्दर होते हैं।"

लॉरा का गला भर आया और वह बोल न सकी। वह जानती थी कि सुनहरे बाल बादामी बालों से अधिक सुन्दर होते हैं। वह कुछ कह न सकी, इसलिए शीघ्रता से लपककर उसने मेरी के चेहरे पर तमाचा लगाया।

तब उसने पिता को यह कहते हुए सुना, "लॉरा, यहाँ आओ।"

वह अपने पैरों को घसीटती हुई धीरे-धीरे वहाँ गई। पिता दरवाजे के ठीक भीतर बैठे थे। उन्होंने उसे मेरी को तमाचा लगाते हुए देखा था।

"तुम्हें याद होगा," पिता ने कहा, "मैंने तुम लड़कियों से कहा था कि तुम्हें कभी भी एक दूसरे को नहीं मारना चाहिए।"

लॉरा ने आरम्भ किया, "किन्तु मेरी ने कहा था--"

"इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता" पिता ने कहा। "तुम्हें मेरे आदेशों का पालन करना चाहिए।"

तब उन्होंने दीवार से चमड़े का एक पट्टा उतारा और उससे लॉरा को मारा।

लॉरा एक कोने में कुर्सी पर बैठकर सिसकने लगी। जब उसकी



सिसकियाँ बन्द हुई तब वह बहुत उदास थी। संसार में यदि कोई वस्तु उसे थोड़ा बहुत प्रसन्न कर सकती थी तो वह यह थी कि मेरी को अकेले टोकरी में चैलियाँ भरनी पड़ी थीं।

अन्त में जब अँधेरा हो रहा था तब पिता ने फिर कहा, यहाँ आओ, लॉरा।" उनके शब्द दयापूर्ण थे और जब लॉरा उनके पास गई तब उन्होंने उसे घुटनों पर उठाकर हृदय से कसकर लगा लिया। वह उनकी गोद में बैठी थी। उसका सिर उनके कंधे से लगा था। उनके लम्बे बादामी गलमुच्छे उसकी आँखों को कुछ ढके हुए थे और फिर सब कुछ ठीक हो गया था।

उसने पिता से सब कुछ बताया और उनसे पूछा, "क्या तुम्हें सुनहरे बाल बादामी बालों से अधिक पसन्द हैं?"

पिता की नीली आँखें चमक उठीं और नीचे की ओर देखकर उन्होंने कहा, "अच्छा, देखो लॉरा, मेरे बाल भी बादामी हैं।"

उसने इस पर विचार नहीं किया था। पिता के बाल बादामी थे। उनके गलमुच्छे बादामी थे और उसने सोचा कि बादामी रंग सुन्दर होता है। किन्तु उसे हर्ष था कि मेरी को सब चैलियाँ इकट्ठी करनी पड़ी थीं।

ग्रीष्म-ऋतु में संध्या-समय पिता न तो कहानी कहते थे और न सारंगी बजाते थे। ग्रीष्म के दिन लम्बे होते थे और खेत में काम करते-करते थक जाते थे।

माँ भी व्यस्त रहती थीं। लॉरा और मेरी बाग निराने, और बछड़ों तथा मुर्गियों के खिलाने में उनकी सहायता करती थीं। वे अंडे इकट्ठा करती थीं और पनीर बनाने में सहायता देती थीं।

जब वन में घास घनी और लम्बी होती थी और गायें काफी दूध देती थीं तब पनीर बनाने का समय होता था।

किसी को बछड़ा मारना होता था, क्योंकि पनीर बनाने के लिए बछड़े के पेट की झिल्ली की आवश्यकता पड़ती थी और वह बछड़ा ऐसा होना चाहिए जिसने दूध के सिवाय कभी और कुछ न खाया हो।

लॉरा को भय था कि पिता गोशाला में से किसी छोटे बछड़े को मार डालेंगे। वे बहुत अच्छे थे। एक हिरण के बच्चों के रंग का था और एक लाल था। उनके बाल बहुत कोमल थे और उनकी आँखें आश्चर्यपूर्ण थीं। जब माँ पिता से पनीर बनाने के विषय में बातें करती थीं तो लॉरा का हृदय धड़कने लगता था।

पिता अपनी बछियों में से किसी को नहीं मारना चाहते थे क्योंकि वे बढ़िया थीं और बढ़ने पर वे गायें होंगी। वह पनीर बनाने के विषय

में बातचीत करने के लिए पितामह और चाचा हेनरी के घर गये और चाचा हेनरी ने उनको बताया कि मैं अपने एक बछड़े को मारूँगा। उससे जो झिल्ली निकलेगी वह चाची पाली, दादी और माँ के लिए काफी होगी।

इसलिए पिता फिर चाचा हेनरी के घर गये और छोटे बछड़े के पेट का एक टुकड़ा लेकर वापस आये। वह एक नर्म और जरा भूरे सफेद चमड़े की तरह था। वह एक तरफ बिलकुल खुरखुरा था।

जब रात को गायों का दूध निकाला गया तब उसे माँ ने कड़ाहियों में रख दिया। प्रातःकाल उन्होंने मलाई निकाल ली जिससे बाद में मक्खन बनाया जा सके। फिर जब सबेरे का दूध ठंडा हो गया तब उन्होंने उसे मखनियाँ दूध में मिला दिया और गर्म होने के लिए अँगीठी पर चढ़ा दिया।

झिल्ली का एक टुकड़ा कपड़े में बाँधकर गर्म पानी में डुबो दिया गया।

जब दूध काफी गर्म हो गया तब माँ ने कपड़े में रखी हुई झिल्ली का पानी अच्छी तरह निचोड़ लिया और उस पानी को दूध में उड़ेल दिया। उन्होंने उसे अच्छी तरह चलाया और अँगीठी के पास गर्म जगह में छोड़ दिया। थोड़ी देर में वह जमकर चिकना पिल-पिला डला हो गया।

माँ ने इस डले को एक बड़े चाकू से छोटे-छोटे वर्गाकार टुकड़ों में काट दिया और थोड़ी देर तक उन्हें ज्यों का त्यों छोड़ दिया। जिससे दही छाँछ से अलग हो जाय। तब उन्होंने सब कुछ एक कपड़े में उड़ेल दिया और पतले पीले छाँछ को छान दिया।

जब कपड़े में से छाँछ का चूना बन्द हो गया तब माँ ने उसे

एक बड़े तसले में उलट दिया और अच्छी तरह उलट-पुलटकर उसमें नमक मिलाया।

लॉरा ओर मेरी सदा उनके पास रहती थीं और जो कुछ सहायता दे सकती थीं, देती थीं। जब माँ दही में नमक मिलाती थीं तब लॉरा और मेरी को दही के टुकड़ों को खाने में बड़ा मजा आता था। वह उनके दाँतों में चीं-चीं करता था।

पिछले दरवाजे के बाहर एक जामुन-वृक्ष के नीचे पिता ने एक तख्ता खड़ा किया था जिस पर दबाकर पनीर बनाया जाता था। उन्होंने तख्ते की लम्बान में दो पतली नालियाँ बनाई थीं और



तख्ते को दो कुन्दों पर इस प्रकार रक्खा था कि एक सिरा दूसरे सिरे से जरा ऊँचा रहे। नीचेवाले सिरे के नीचे एक खाली घड़ा रक्खा था।

माँ पानीवाला लकड़ी का वह गोल बर्तन तख्ते पर रख देती थीं जिसमें पेंदी नहीं होती थी और उसके भीतर साफ, भीगा कपड़ा बिछा देती थीं और उसमें नमकीन दही को भर देती थीं। फिर दही के ऊपर दूसरा साफ गीला कपड़ा बिछा देती थीं। तब उसके ऊपर एक गोल तख्ता रखती थीं जो काटकर इतना छोटा बनाया रहता था कि पनीरवाले बर्तन के अन्दर जा सके। अन्त में वह इस तख्ते के ऊपर एक चट्टान रख देती थीं।

दिन भर गोल तख्ता चट्टान के भार से धीरे-धीरे दबता जाता था। इससे छाँछ निकलकर बड़े तख्ते की नालियों से बहकर नीचे घड़े में इकट्ठा होता जाता था।

दूसरे दिन प्रातःकाल माँ गोल पीला पनीर निकाल लेती थीं जो दूध की कड़ाही के बराबर बड़ा होता था। तब वह और दही बनाकर पनीरवाले गोल बर्तन में रख देती थीं।

प्रतिदिन प्रातःकाल वह दबानेवाले यंत्र के नीचे से पनीर निकाल लेती थीं और उसको काट छाँटकर चिकना बना लेती थीं। वह उसकी चारों तरफ कसकर एक कपड़ा सिल देती थीं और कपड़े के ऊपर ताजा मक्खन पोत देती थीं। तब वह उसे भंडारघर में आलमारी पर रख देती थीं।

प्रतिदिन वह हर पनीर को नर्म कपड़े से सावधानी के साथ पोंछती थीं और उस पर ताजा मक्खन पोतती थीं। फिर उसको उलटकर रख देती थीं। बहुत दिनों के बाद पनीर पक जाता था और उसकी चारों तरफ कड़ी पपड़ी पड़ जाती थी।

तब माँ हर एक पनीर को कागज से लपेटकर ऊँचे ताक पर रख देती थीं। अब उसे खाने के सिवाय और कुछ करना नहीं शेष रहता था।

लॉरा और मेरी पनीर बनाना पसन्द करती थीं। वे उस दही को खाना पसन्द करती थीं जो उनके दाँतों में चीं-चीं करता था। वे उस छीलन और कतरन को भी खाना पसन्द करती थीं जो कपड़े में सीने से पहले बड़े, गोल और पीले डले में से काट-छाँटकर माँ निकालती थीं।

हरा पनीर खाने के लिए माँ उन पर हँसती थीं।

वह उन्हें बतलाती थीं कि कुछ लोग कहते हैं कि चन्द्रमा हरे पनीर का बना है।

नया पनीर सचमुच गोल चन्द्रमा की भाँति दिखाई पड़ता था जब वह पेड़ों के पीछे उगता था। परन्तु जो पनीर वह खाती थीं वह हरा नहीं होता था बल्कि चन्द्रमा की भाँति पीला होता है।

माँ ने कहा, "यह हरा पनीर है क्योंकि अभी यह पका नहीं है। जब यह पक जायगा तब यह हरा पनीर नहीं होगा।"

"क्या सचमुच चन्द्रमा हरे पनीर का बना है", लॉरा ने पूछा और माँ हँस पड़ीं।

"मेरी समझ में लोग ऐसा इसलिए कहते हैं कि चन्द्रमा हरे पनीर की भाँति दिखाई पड़ता है", उन्होंने कहा, "परन्तु बाहरी आकार से कभी-कभी धोखा हो जाता है।" तब वह हरे पनीरों को पोंछकर उन पर मक्खन पोतती थीं और लड़कियों को बताती थीं कि चन्द्रमा ठंडे जीवनहीन लघु संसार की भाँति है जिस पर कुछ पैदा नहीं होता।

पहले दिन माँ ने जब पनीर बनाया तब लारा ने मट्ठा चखा।

उसने माँ मे बिना कुछ कहे हुए उसे चखा और घूमकर जब माँ ने मुँह देखा तो माँ हँसीं। उस रात को जब वह खाने की रकाबियाँ धो रही थीं और लॉरा और मेरी उन्हें पोंछ रही थीं तब उन्होंने पिता से कहा लारा ने मट्ठा चखा था परन्तु उसे पसन्द नहीं किया था।

"क्या माँ का मट्ठा पीकर तुम मरना चाहती हो जैसे बुड्ढा ग्राइम्स अपनी पत्नी का मट्ठा पीकर मरा था?" पिता ने कहा।

लॉरा ने उनसे बुड्ढे ग्राइम्स की कहानी कहने की प्रार्थना की। इसलिए यद्यपि पिता थके थे तथापि उन्होंने ग्राइम्स की कहानी कहना आरम्भ किया।"

"ग्राइम्स एक बुड्ढा भला आदमी था। वह पुराना भूरा कोट पहना करता था। उसकी स्त्री मखनिया दूध से पनीर बनाती थी। बुड्ढा ग्राइम्स मट्ठा पीता था। एक बार पश्चिम से तेज हवा चली और बुड्ढे ग्राइम्स को उड़ा ले गई।"

फिर पिता ने कहा, "यह उसकी कहानी है। उसकी पत्नी नीच, कंजूस स्त्री थी। यदि वह दूध से एकदम मक्खन न निकाल लेती तो मट्ठे में थोड़ा मक्खन बहकर जाता और बुड्ढे ग्राइम्स को हवा न उड़ा ले जाती।

"परन्तु वह दूध से सब मलाई पूरी-पूरी उतार लेती थी और इससे बुड्ढा ग्राइम्स इतना दुबला हो गया था कि हवा उसे उड़ा ले गई। बेचारा भूखों मर गया।"

तब पिता ने माँ को देखा और कहा, "कैरोलिन, जब तक तुम हमारे बीच में हो तब तक कोई भूखों न मरेगा।"

"नहीं," माँ ने कहा, "नहीं, चार्ल्स, जब तक तुम हमारे भोजन

की सामग्री इकट्ठी करने के लिए जीवित हो तब तक कोई नहीं मरेगा।"



पिता प्रसन्न हो गये। सब कुछ बहुत सुन्दर था। सब दरवाजे और खिड़कियाँ ग्रीष्म की संध्या के समय खुली थीं। जब माँ रकाबियाँ धोती थीं और लॉरा और मेरी उन्हें पोंछती थीं तब हल्की-हल्की हर्ष-पूर्ण आवाज होती थी। पिता मुस्कराते थे और अपने आप सीटी बजाते थे।

कुछ समय के बाद उन्होंने कहा, "कैरोलिन, कल प्रातःकाल मैं हेनरी के घर उसकी कुदाली उधार लेने जा रहा हूँ। गेहूँ के खेत में कटे हुए पेड़ों की जड़ों से निकले हुए पौधे कमर भर उग आये हैं। हमें सदैव उन्हें काटते रहना चाहिए नहीं तो वहाँ फिर जंगल हो जायगा।"

दूसरे दिन तड़के उन्होंने चाचा हेनरी के घर के लिए पैदल प्रस्थान किया परन्तु शीघ्र ही वह जल्दी-जल्दी वापस लौट आये। उन्होंने घोड़ों को गाड़ी में जोता और उसमें अपनी कुल्हाड़ी, दो नहाने के टब, पानी गर्म करने का पीपा, सब मटके और लकड़ी की बाल्टियाँ जो वहाँ थीं रख दीं।

"कैरोलिन, मैं नहीं समझता कि मुझे सबकी जरूरत पड़ेगी।" उन्होंने कहा, "किन्तु यदि मुझे उनकी जरूरत पड़ी और ये मेरे पास न हुए तो मुझे बड़ा बुरा लगेगा।"

उत्तेजना से उछलती-कूदती हुई लॉरा ने पूछा, "क्या बात है ? क्या मामला है ?"

माँ ने कहा, "पिता को पेड़ पर लगा हुआ मधुमक्खी का छत्ता मिला है। हो सकता है कि वह हमारे लिए कुछ शहद लायें।"

दोपहर को पिता गाड़ी हाँकते हुए घर आये। लॉरा उनकी बाट जोह रही थी। ज्योंही गाड़ी गोशाला के पास रुकी त्योंही वह दौड़कर उसके निकट गई। परन्तु वह उसमें देख न सकी।

पिता ने पुकारा "कैरोलिन, यदि तुम मेरे निकट आकर शहद का यह घड़ा थाम लो तो मैं घोड़ों को खोल दूँ।"

माँ निराश गाड़ी तक गईं। उन्होंने कहा---

"खैर, चार्ल्स, एक घड़ा शहद भी कम नहीं है।" तब उन्होंने गाड़ी में झाँका और अपने हाथ ऊपर उठा दिये। पिता हँसे।

सब मटके और बाल्टियाँ मधुमक्खी के सुनहरे छत्ते से लबालब भरी थीं। दोनों टब और पानी गर्म करने का पीपा भरे थे।

पिता और माता भरे हुए टबों, पीपा, सब बाल्टियों और मटके को एक एक करके घर में ले जाते थे। इस प्रकार उन्हें कई बार आना-जाना पड़ता था। माँ ने एक रकाबी में सुनहरे छत्तों के कई टुकड़े रक्खे और शेष को साफ कपड़े से ढक दिया।

भोजन के समय सब व्यक्तियों ने स्वादिष्ट शहद यथेष्ट मात्रा में खाया और पिता ने उनको बतलाया कि किस प्रकार उनको मधुमक्खी के छत्तेवाला पेड़ मिला था।

"मैं बन्दूक लेकर नहीं गया था," उन्होंने कहा, "क्योंकि मैं शिकार नहीं कर रहा था और चूँकि अब ग्रीष्म ऋतु है इसलिए खतरा आने की बहुत सम्भावना नहीं थी। वर्ष के इस भाग में तेंदुए

और भालू इतने मोटे होते हैं कि वे सुस्त हो जाते हैं और उनका स्वभाव भी अच्छा हो जाता है।

"मैं वन में होकर छोटे रास्ते से गया और एक बड़े भालू के बहुत निकट पहुँच गया। मैं झाड़ियों के एक कुंज का चक्कर काटने लगा और वहाँ पर वह था। उसके और मेरे बीच की दूरी इस कमरे के बराबर थी।

"उसने घूमकर मेरी ओर देखा और मेरा विचार है कि उसने देखा कि मेरे पास बन्दूक नहीं है। खैर, उसने मेरी तरफ और ध्यान न दिया।

"वह एक बड़े पेड़ की जड़ के पास खड़ा था और उसके चारों ओर मधुमक्खियाँ भनभना रही थीं। उसके बाल बहुत घने थे। इसलिए वे उसे डंक नहीं मार सकती थीं और एक पंजे से वह उन्हें अपने सिर पर से बराबर भगाता रहा।

"मैं वहाँ खड़ा होकर उसे देखता रहा। उसने दूसरा पंजा पेड़ के एक छेद में डाला और जब उसे बाहर निकाला तब उसमें से शहद चू रहा था। उसने पंजे पर से शहद चाट लिया और फिर पंजे को छेद में डाला। उस समय तक मुझे एक मोटा डंडा मिल गया था। मैं स्वयं वह शहद चाहता था।

"इसलिए मैंने डंडे को कसकर पेड़ पर मारा और चिल्लाया। भालू इतना मोटा था और शहद से उसका मन इतना भर गया था कि वह अपनी चारों टाँगों पर खड़ा हो गया और फिर पेड़ों के बीच में चला गया। मैंने कुछ दूर तक उसका पीछा किया और उसे शहद के पेड़ से दूर भगा दिया और तब गाड़ी लेने वापस आया।"

लॉरा ने पूछा कि तुमने मधुमक्खियों से शहद कैसे छीना?

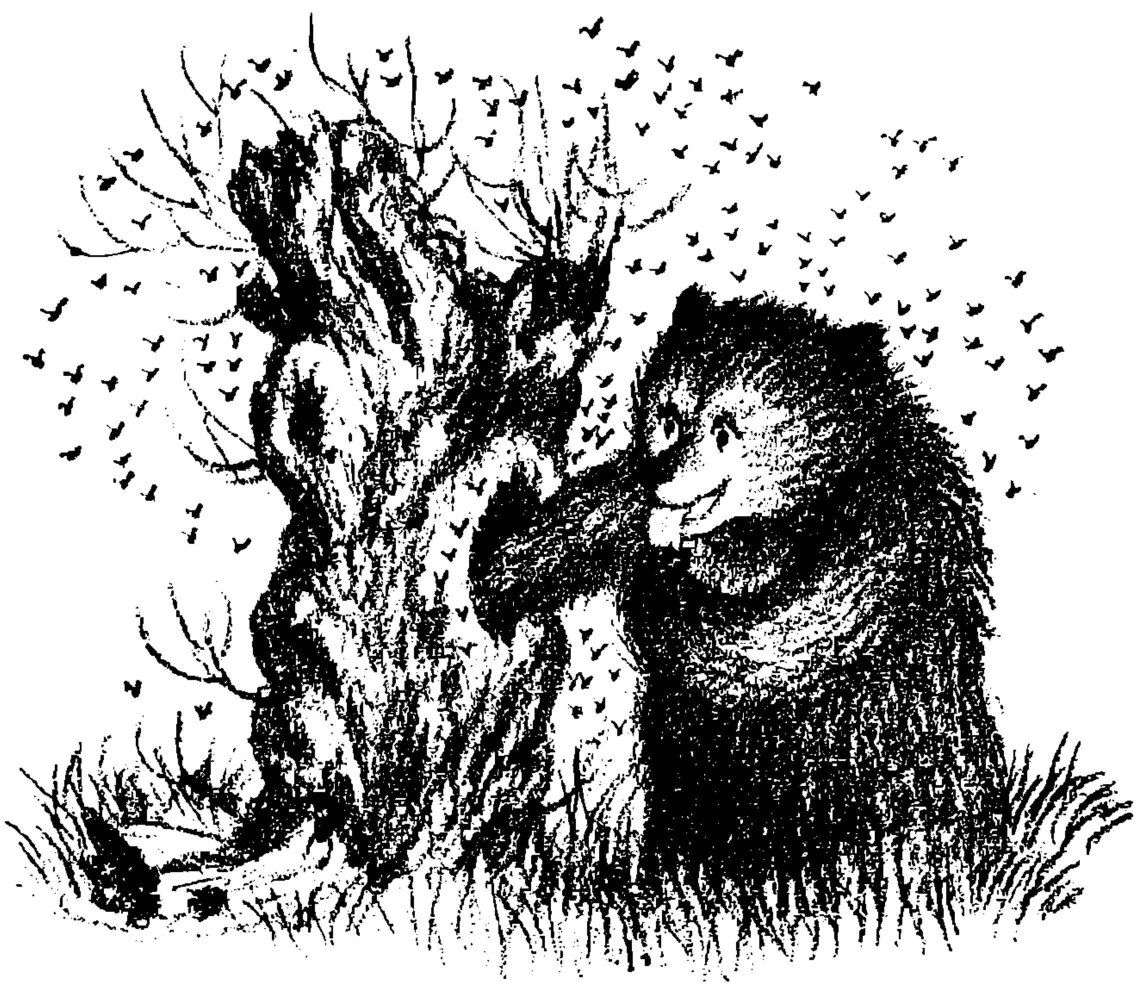
"यह काम सरल था," पिता ने कहा, "मैंने घोड़ों को दूर वन में

छोड़ दिया जहाँ मक्खियाँ उन्हें डंक न मार सकें। तब मैंने पेड़ को काट गिराया और उसे चीर डाला।"

"क्या मधुमक्खियों ने तुम्हें डंक नहीं मारा?"

"नहीं," पिता ने कहा, "मक्खियाँ मुझे कभी डंक नहीं मारतीं।"

"पूरा पेड़ खोखला था और चोटी से पेंदे तक शहद से भरा था। उसमें मधुमक्खियाँ अवश्य कई वर्षों से शहद इकट्ठी करती रही होंगी। कुछ शहद पुराना और काला था, किन्तु मेरा विचार है कि



मुझे इतना काफी अच्छा और साफ शहद मिला जो हमारे घर बहुत दिनों तक चल सकता है।"

लॉरा को बेचारी मधुमक्खियों के लिए खेद था। उसने कहा--

"उन्होंने इतना कठोर परिश्रम किया था, और अब उन्हें जरा भी शहद नहीं मिलेगा।"

किन्तु पिता ने कहा कि मधुमक्खियों के लिए काफी शहद बन गया है और निकट ही दूसरा बड़ा, खोखला पेड़ है जिसमें वे जाकर छत्ता लगा सकती हैं। उन्होंने कहा कि यही समय है जब उनके लिए एक साफ, नये घर की आवश्यकता है।

पुराने पेड़ में मैंने जो शहद छोड़ दिया है उसे मधुमक्खियाँ ले जायेंगी और ताजा नया शहद बनाकर अपने नये घर में एकत्र करेंगी। वे गिरे हुए शहद की हर एक बूंद को बचाकर रख देंगी और इस प्रकार जाड़ा आने के बहुत पहले उनके पास फिर बहुत अधिक शहद हो जायगा।

अध्याय ११



फसल काटने का समय

पिता और चाचा हेनरी परस्पर एक दूसरे के काम में सहायता देते थे। जब खेतों में अनाज पक जाता था तब चाचा हेनरी पिता के साथ काम करने आ जाते थे और चाची पाली और सब चचेरे भाई-बहन दिन व्यतीत करने के लिए आते थे। तब पिता अनाज काटने में चाचा हेनरी की सहायता करने गये और चाची पाली के साथ दिन बिताने के लिए माँ, लॉरा, मेरी और कैरी को लेकर गईं।

भोजन के समय तक माँ और चाची पाली एक साथ घर में काम करती थीं और सब भाई-बहन आँगन में खेलते थे। चाची पाली का आँगन खेलने के लिए सुन्दर था क्योंकि उसमें कटे हुए पेड़ों की जड़ें बहुत मोटी थीं। भाई-बहन बिना पृथ्वी को छुए ही एक जड़ पर से दूसरी जड़ पर कूद जाते थे।

लॉरा भी जो सबसे छोटी थी उन स्थानों में ऐसा कर सकती थी जहाँ छोटे-छोटे पेड़ घने उगे थे। चचेरा भाई चार्ली ग्यारह वर्ष का बड़ा लड़का था। वह एक जड़ से दूसरी जड़ पर कूद कर सारे

आँगन में जा सकता था। वह एक बार में दो छोटी-छोटी जड़ों पर कूद सकता था और बाड़े की ऊपरी बल्लियों पर वह निर्भय चल सकता था।

पिता और चाचा हेनरी खेतों में हँसिया से जई काट रहे थे। वह हँसिया लकड़ी की पतली पट्टियों के ढाँचे में लोहे का फल लगाकर इस प्रकार बनाई गई थी कि जब फल जई के पौधों को काटता था तब ढाँचा उनके डंठलों को पकड़े रहता था। पिता



और चाचा हेनरी हँसियों के लम्बे, टेढ़े दस्ते को पकड़कर खड़ी जई में चलाते थे। जब वे काफी जई काट लेते थे तब वे डंठलों को लकड़ी की पट्टियों से निकालकर पृथ्वी पर सफाई से रख देते थे।

कड़ी धूप में खेत के चारों तरफ घूमना, दोनों हाथों से भारी हँसिया को चलाकर अनाज काटना और फिर उनका ढेर बनाना कठिन काम था।

जब सब अनाज कट जाता था तब वे फिर पूरे खेत में जाते थे। इस बार वे हर एक ढेर पर झुकते थे और हर एक हाथ में एक-एक मुट्ठी डंठल लेकर वे एक में बाँध देते थे। तब अपनी बाँहों में डंठलों की राशियाँ इकट्ठी करके वे उस बंधन से कसकर बाँध देते थे और उसके सिरों को बोझ में खोंस देते थे।

जब वे ऐसे सात बंडल बाँध लेते थे तब उनको एकत्र करके एक बड़ी ढेरी बनाते थे। यह ढेरी बनाने के लिए पाँच बंडल खड़ा करते थे जिनमें जई की बालें ऊपर रहती थीं। तब इनके ऊपर वे दो बंडल इस प्रकार फैलाकर रखते थे जिससे एक छोटी सी छत बन जाय और ओस और वर्षा से पाँचों बंडलों को बचा सके।

कटे हुए हर एक डंठल के लिए इस प्रकार के ढेर में रखना आवश्यक था क्योंकि यदि वह रात भर ओस में रहता तो नष्ट हो जाता।

पिता और चाचा हेनरी कठोर परिश्रम करते थे क्योंकि हवा इतनी गर्म, शान्त और भारी थी कि वे वर्षा की आशंका करते थे। जई पक गई थी। यदि वर्षा होने के पहले वह काटकर ढेर में न रख दी जाती तो फसल नष्ट हो जाती। तब जाड़े भर चाचा हेनरी के घोड़े भूखे रहते।

दोपहर को पिता और चाचा हेनरी बहुत जल्दी में घर आते

थे और जल्दी-जल्दी भोजन करते थे। चाचा हेनरी कहते थे कि उस दिन तीसरे पहर चार्ली को उनकी सहायता करनी होगी।

जब चाचा हेनरी ने यह कहा तब लॉरा ने पिता की ओर देखा। घर पर पिता कहते थे कि चाचा हेनरी और चाची पाली ने चार्ली को बिगाड़ डाला है। जब पिता ग्यारह वर्ष के थे वह प्रतिदिन घोड़ों की जोड़ी हाँककर खेत जोतते थे। किन्तु चार्ली कुछ काम नहीं करता।

अब चाचा हेनरी कहते थे कि चार्ली को खेतों में आना होगा। उसके काम करने से उनका बहुत अधिक समय बच जायगा। वह पानी के लिए सोते पर जा सकता था और जब उन्हें प्यास लगे तब उनके पास पानी की सुराही पहुँचा सकता था। जब हँसिया के फलों को तेज करने की आवश्यकता होती तो तेज करनेवाला पत्थर ला सकता था।

सब बच्चे चार्ली को देखते थे। चार्ली खेत में नहीं जाना चाहता था। वह आँगन में रहकर खेलना चाहता था। परन्तु वह ऐसा कहता नहीं था।

पिता और चाचा हेनरी ने बिलकुल विश्राम नहीं किया। उन्होंने शीघ्रतापूर्वक भोजन किया और काम पर वापस लौट गये। चार्ली उनके साथ गया।

मेरी सबसे बड़ी थी। वह शान्त, महिलोचित खेल खेलना चाहती थी। इसलिए तीसरे पहर चचेरे भाई-बहनों ने आँगन में एक घरौंदा बनाया। पेड़ों के ठूँठ कुर्सियाँ, मेजें और अँगीठियाँ होते थे, पत्तियाँ तश्तरियाँ होती थीं और लकड़ियाँ बच्चे मानी जाती थीं।

उस रात को घर लौटते समय खेत में जो कुछ हुआ था उसका वर्णन पिता ने माँ से किया। लॉरा और मेरी ने उनकी बातें सुनीं।

पिता और चाचा हेनरी को सहायता देने के बदले चार्ल्स तरह-तरह से उनको तंग करता था। वह उनके आगे खड़ा हो जाता था। इसलिए वे हँसिया नहीं चला सकते थे। वह हँसिया तेज करनेवाला पत्थर छिपा देता था। इसलिए जब उन्हें हँसिया तेज करने की आवश्यकता होती थी तब उसे ढूँढ़ना पड़ता था। जब तक चाचा हेनरी तीन-चार बार नहीं चिल्लाते थे तब तक वह पानी की सुराही नहीं लाता था और जब लाता था तब उद्विग्न रहता था।

इसके बाद वह उनके पीछे-पीछे चलता था और उनसे बातें करता और प्रश्न पूछता रहता था। वे इतना कठोर परिश्रम कर रहे थे कि वे उसकी बातों पर ध्यान नहीं दे सकते थे। इसलिए वे उससे कहते थे कि यहाँ से चले जाओ, हम लोगों को परेशान मत करो।

परन्तु जब उन्होंने उसे चीखते हुए सुना तब उन्होंने हँसिया फेंक दी और दौड़कर उसके पास गये। खेत के चारों ओर वन थे और जई में साँप रहते थे।

जब वे चार्ली के पास पहुँचे तो उन्होंने देखा कि कोई बात नहीं है। वह उन पर हँस पड़ा। उसने कहा—

"उस समय मैंने आप लोगों को मूर्ख बनाया था!"

पिता ने कहा, यदि मैं हेनरी होता तो मैं यहीं और इसी समय इस लड़के की मरम्मत करता। परन्तु चाचा हेनरी ने ऐसा नहीं किया।

इसलिए उन्होंने पानी पिया और काम पर वापस लौट गये।

तीन बार चार्ली चिल्लाया और तीनों बार वे तेजी से दौड़कर उसके पास गये। वह समझता था कि यह एक अच्छा प्रहसन है। तिस पर भी चाचा हेनरी ने उसे नहीं पीटा।

तब चौथी बार वह पहले से भी अधिक जोर से चिल्लाया।

पिता और चाचा हेनरी ने उसकी तरफ देखा। वह इधर-उधर कूद और चिल्ला रहा था। उनको कोई बात नहीं दिखाई पड़ी और इतनी बार वे मूर्ख बनाये जा चुके थे कि उन्होंने अपना काम जारी रक्खा।

चार्ली और जोर से चिल्लाता रहा। पिता ने कुछ नहीं कहा किन्तु चाचा हेनरी ने कहा, "उसे चिल्लाने दो।" इसलिए वे काम करते रहे और उसे चिल्लाने दिया।

वह इधर-उधर कूदता और चिल्लाता रहा। वह रुका नहीं, अन्त में चाचा हेनरी ने कहा--

"हो सकता है कि मामला कुछ गड़बड़ है।" उन्होंने अपनी हँसिया रख दी और खेत के पार उसके पास पहुँचे।



और तब तक चार्ली बराबर पीली बर्रे के घोंसले पर उछलता-कूदता रहा। पीली बर्रें पृथ्वी पर एक घोंसले में रहती थीं और चार्ली ने गलती से उस पर पैर रख

दिया था। तब सब छोटी पीली बर्रें झुंड की झुंड बाहर निकल आईं। वे क्रुद्ध थीं और उन्होंने चार्ली को इतना डंक मारा कि वह भाग न सका।

वह इधर-उधर उछल-कूद रहा था और सैकड़ों बर्रें उसे डंक मार रही थीं। वे उसके चेहरे, हाथ, गर्दन और नाक में डंक मार रही थीं। वे उसके पतलून में नीचे से घुसकर और गर्दन से नीचे कपड़े के भीतर डंक मार रही थीं। जितना ही वह कूदता और चिल्लाता था उतना ही वह डंक मारती थीं।

पिता और चाचा हेनरी ने उसकी बाँहें पकड़ लीं और पीली ततैयों के छत्ते से दूर भगा ले गये। उन्होंने उसके कपड़े खोले। वे ततैयों से भरे थे और उनके डंक उसके पूरे शरीर पर फूले हुए थे। जो ततैयाँ उसे डंक मार रही थीं उनको उन्होंने मार डाला और उसके वस्त्रों को झाड़कर अन्य ततैयों को उनमें से निकाल दिया। उन्होंने फिर उसे कपड़े पहनाये और घर भेज दिया।

लॉरा, मेरी और चचेरे भाई-बहन शान्तिपूर्वक आँगन में खेल रहे थे। इस बीच में उन्होंने रोने की ऊँची चिल्लाहट सुनी। चार्ली चिल्लाता हुआ आँगन में आया। उसका चेहरा इतना फूला था कि उसकी आँखों से आँसू कठिनाई से निकल पाते थे।

उसके हाथ, गर्दन और गाल सब फूल गये थे। उसकी उँगलियाँ कड़ी और फूली थीं। उसके पूरे फूले चेहरे और गर्दन पर छोटे, कठोर और सफेद दाग थे।

लॉरा, मेरी और चचेरे भाई-बहन खड़े हो गये और उसे देखने लगे।

माँ और चाची पाली दौड़ती हुई घर से बाहर आईं और उससे पूछा कि क्या मामला है? चार्ली रोता और चिल्लाता था। माँ ने



कहा कि इसको ततैयों ने काटा है। वह दौड़कर बाग में गई और एक तसला मिट्टी ले आई। चाची पाली चार्ली को घर के भीतर ले गई और उसके वस्त्र खोल दिये।

उन्होंने एक बड़ी कड़ाही में मिट्टी को साना और उसके पूरे शरीर पर लपेट दिया। फिर उसके ऊपर एक चादर लपेटकर उसे लिटा दिया। उसकी आँखें फूलकर बन्द हो गई थीं और उसकी नाक का आकार विचित्र हो गया था। माँ और चाची पाली ने उसके चेहरे को गीली मिट्टी से ढक दिया और मिट्टी के ऊपर कपड़े बाँध दिये। उसकी नाक का केवल सिरा और मुँह दिखाई पड़ते थे।

उसका बुखार ठीक करने के लिए चाची पाली ने कुछ जड़ी-बूटियों को पानी में भिगोया। लॉरा, मेरी और चचेरे भाई-बहन कुछ देर तक उसके चारों ओर खड़े होकर देखते रहे।

उस रात को जब पिता और चाचा हेनरी खेत से बाहर आये तब अँधेरा हो गया था। सब जई ढेर में रक्खी जा चुकी थी। अब चाहे पानी बरसे पर उससे कोई हानि नहीं होनेवाली थी।

पिता रात का खाना खाने के लिए नहीं ठहर सके। उनको घर जाकर गायों को दुहना था। घर पर गायें प्रतीक्षा कर रही थीं और यदि गायें ठीक समय पर नहीं दुही जातीं तो वह अधिक दूध नहीं देतीं। उन्होंने घोड़ों को जल्दी से गाड़ी में जोता और वे सब गाड़ी में बैठ गये।

पिता बहुत थके थे और उनके हाथों में दर्द था। इससे वह बहुत अच्छी तरह नहीं हाँक सकते थे पर घोड़े घर का रास्ता जानते थे। माँ कैरी के साथ उनकी बगल में बैठी थीं। लॉरा और मेरी उनके पीछे तख्ते पर बैठी थीं। तब चार्ली ने जो कुछ किया था उसे उन्होंने पिता से सुना।

लॉरा और मेरी भयभीत थीं। प्रायः वे स्वयं शरारत करती थीं परन्तु वे कल्पना नहीं कर सकती थीं कि कोई व्यक्ति चार्ली के बराबर नटखट हो सकता है। उसने जई को सुरक्षित करने में सहायता नहीं दी थी। जब उसके पिता ने आदेश दिया था तब उसने उसका पालन नहीं किया था। जब पिता और चाचा हेनरी काम में व्यस्त थे तब उसने उसको तंग किया था।

तब पिता ने पीली ततैयों के विषय में बतलाया और कहा, "झूठे लड़के को बहुत अच्छा दंड मिला।"

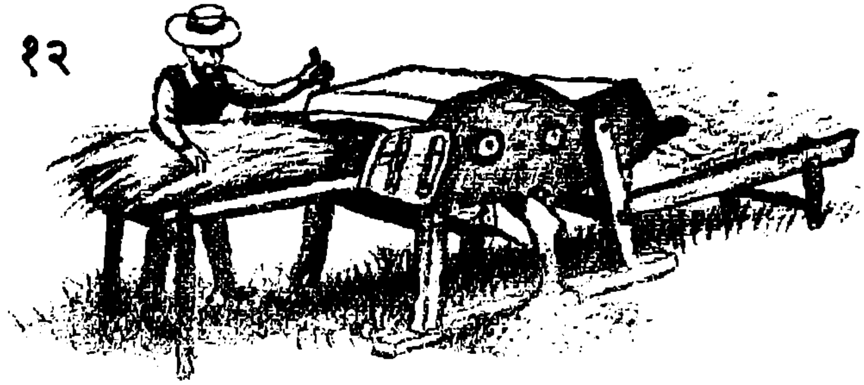
उस रात को जब लॉरा पहियेदार बिस्तर में लेटी तब उसने

छत पर पानी बरसने की आवाज सुनी और ओल्ती से उसे गिरते देखा। जो कुछ पिता ने कहा था उसके विषय में उसने सोचा।

जो कुछ पीली ततैयों ने चार्ली के साथ किया था उसके विषय में उसने सोचा। वह भी समझती थी कि चार्ली को ठीक दंड मिला। उसको यह दंड मिलना उचित था क्योंकि वह इतना अधिक नटखट था और जब वह ततैयों के छत्ते पर कूदता था तब उन्हें उसे काटने का अधिकार था।

परन्तु वह नहीं समझती थी कि पिता ने उसे झूठा लड़का क्यों कहा था। वह नहीं जानती थी कि जब चार्ली ने एक शब्द भी नहीं कहा था तब वह झूठा कैसे हो सकता है ?

अध्याय १२



आश्चर्यजनक यंत्र

दूसरे दिन पिता ने जई के कई बंडलों की बालें काट लीं और साफ, चमकीले, पीले डंठल माँ के पास लाये। माँ ने उन्हें पानी की नाँद में रख दिया जिससे वे नर्म हो जायँ और नर्म बने रहें। तब वह नाँद के पास कुर्सी पर बैठकर डंठलों को बनाने लगीं।

उन्होंने कई डंठल लिये और उनके सिरों को बाँध दिया। फिर वह बुनने लगीं। डंठल विभिन्न लम्बाई के थे। जब वह एक डंठल के सिरे पर पहुँचती थीं तब वह उसकी जगह पर नाँद में से एक लम्बा डंठल निकालकर रख देती थीं और बुनने लगती थीं।

बुनी हुई पट्टी का सिरा वह पानी में गिरा देती थीं और जब तक कई गज लम्बी पट्टी नहीं बुन गई तब तक वह बुनती रहीं। कई दिनों तक अवकाश के समय वह डंठलों को बुनती रहीं।

सात छोटे डंठलों को बुनकर उन्होंने सुन्दर, पतली, चिकनी पट्टी बनाई। नौ बड़े डंठलों को बुनकर उन्होंने एक चौड़ी पट्टी तैयार की जिसके किनारे दानेदार थे। सबसे बड़े और मोटे डंठलों से उन्होंने सबसे चौड़ी पट्टी तैयार की।

जब सब डंठल बुन लिये गये तब उन्होंने एक सुई में मजबूत,

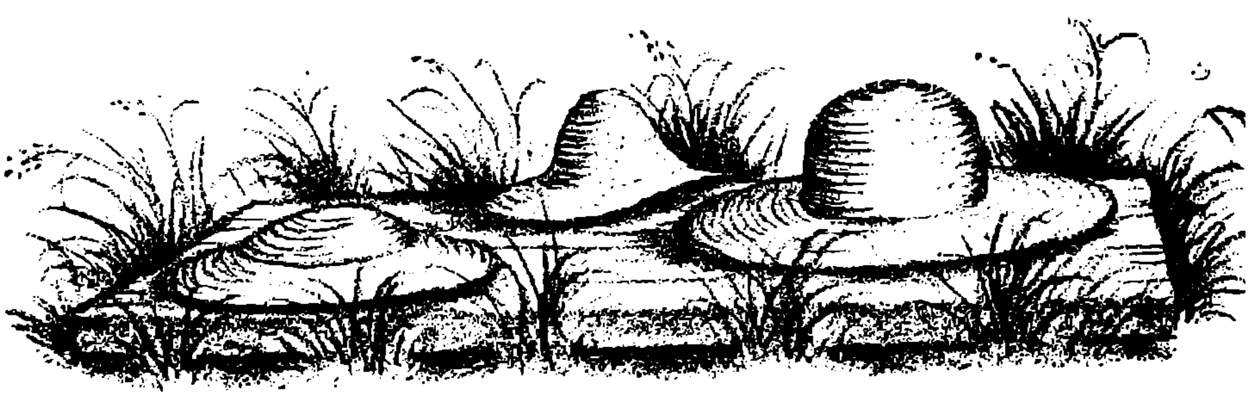
सफेद तागा डाला और एक सिरे से आरम्भ करके वह एक पट्टी को गोल सिलने लगीं और पट्टी को इस प्रकार पकड़े रहीं कि सिल जाने पर वह जमीन पर चपटी बैठ जाय। इस प्रकार एक छोटी चटाई बन गई। माँ ने कहा कि यह हैट का ऊपरी भाग है।

तब उन्होंने पट्टी के एक सिरे को कसकर पकड़ा और उसे गोलाई में सिलती रहीं। पट्टी भीतर चली गई और हैट के ऊपरी भाग की दीवार बन गई। जब ऊपरी भाग काफी ऊँचा हो गया तब माँ ने फिर पट्टी को ढीले पकड़कर गोलाई में सिला। पट्टी चपटी होकर हैट का किनारा बन गई।

जब किनारा काफी चौड़ा था तब वह पट्टी को काटकर सिरे को शीघ्रतापूर्वक सी देती थीं जिससे वह खुल न सके।

पतली और सँकरी पट्टी से माँ ने मेरी और लॉरा के लिए हैट सिला। चौड़े और दाँतेदार पट्टी से उन्होंने अपने और पिता के लिए हैट बनाया। उस हैट को पिताजी रविवार को पहना करते थे। मोटी और सबसे चौड़ी पट्टी से उन्होंने पिताजी के प्रतिदिन पहनने के लिए हैट बनाया।

जब माँ एक हैट को सी चुकती थीं तब वह उसे सूखने के लिए एक बोर्ड पर रख देती थीं। बोर्ड पर रखकर यह उसका आकार



सँवार देती थीं। जब वह सूख जाता था तब वह उसी आकार का रह जाता था जिस आकार का माँ ने उसे बनाया था।

माँ सुन्दर हैट बना सकती थीं। लॉरा को उन्हें हैट बनाते हुए देखना अच्छा लगता था। उसने डंठलों को बुनकर पट्टी बनाना सीख लिया और शार्लट के लिए एक छोटा हैट बना डाला।

दिन छोटे होने लगे थे और रातें ठंडी होती थीं। एक रात को तुषार-पात हुआ और प्रातःकाल बड़े वन में हरी पत्तियों पर कहीं-कहीं पाला चमकता हुआ दिखाई पड़ता था। तब पत्तियों की हरियाली समाप्त होने लगी। वे पीली, लाल, सुनहरी और बादामी हो गईं।

बाड़े की बल्लियों और कुन्दों के चारों तरफ सुमैक वृक्ष की लाल पत्तियों के ऊपर गहरे लाल रंग के उसके छोटे-छोटे फल दृष्टिगोचर होते थे। बलूत के पेड़ों से फल गिर रहे थे। लॉरा और मेरी ने घरौंदों के लिए बलूत के फलों के छोटे-छोटे प्याले और तश्तरियाँ बनाईं। बड़े वन में अखरोट और चिरौंजी गिर रहे थे और गिलहरियाँ उनको चुनकर खोखले पेड़ों में जाड़े के लिए एकत्र करने में व्यस्त थीं।

लॉरा और मेरी माँ के साथ अखरोट, चिरौंजी और बलूत के फल इकट्ठा करने गईं। उन्होंने उन्हें धूप में सूखने के लिए फैलाया, तब उन्होंने पीटकर ऊपरी छिलका निकाल दिया और भीतर का भाग जाड़े में रखने के लिए ऊपरी मंजिल के कमरे में रख दिया।

बड़े अखरोटों, काजू और छोटी चिरौंजियों को एकत्र करने में बड़ा मजा आता था। ये फल झाड़ियों पर गुच्छों में उगते थे। अखरोट के नर्म बाहरी छिलके में एक प्रकार का बादामी रस भरा

रहता था जिससे उनके हाथों में दाग पड़ जाते थे। चिरौंजी और अखरोट लॉरा को बहुत स्वादिष्ट लगते थे।

इस समय हर एक व्यक्ति व्यस्त था क्योंकि प्रत्येक प्रकार की तरकारी को भंडारघर में एकत्र कर लेना आवश्यक था। जब पिता मटमैले आलुओं को पृथ्वी में से खोद देते थे तब लॉरा और मेरी उनको चुन लेती थीं। वे पीली गाजरों और गोल लाल चोटीवाले शलजमों को उखाड़ती थीं और माँ को कद्दू पकाने में सहायता देती थीं जिससे उसका मुरब्बा बनाया जा सके।

माँ बड़े चाकू से नारंगी रंगवाले कद्दुओं को दो भागों में काट देती थीं। वह बीच में से बीज निकाल देती थीं और कद्दू को काटकर लम्बी-लम्बी फाँक बना डालती थीं और उनके ऊपर से छिलका छील देती थीं। लॉरा फाँकों को घनाकार काटने में उनकी सहायता करती थी।

माँ घनाकार टुकड़ों को लोहे के बड़े बर्त्तन में रखकर अँगीठी पर चढ़ाती थीं, उसमें कुछ पानी छोड़ती थीं और दिन भर कद्दू को धीमी आँच पर उबालती थीं। सब पानी और रस को सुखा देना था और यह भी देखना था कि कद्दू जल न जाय।

देकचे में पककर कद्दू गाढ़ा और सुगन्धित पिण्ड हो गया। वह पानी की तरह नहीं खौलता था बल्कि उसमें से बुलबुले निकलते थे और एकाएक फट जाते थे। इस प्रकार उसमें छोटे-छोटे छेद हो जाते थे जो शीघ्र भर जाते थे। हर बार जब बुलबुला फटता था तब कद्दू की गर्म सुगंध बाहर निकलती थी।

लॉरा एक कुर्सी पर खड़ी होकर माँ के स्थान में कद्दू को देखती थी और लकड़ी की करछुल से चलाती थी। वह करछुल को

दोनों हाथों में पकड़े थी और सावधानी से चलाती थी। क्योंकि यदि जल जाता तो उससे मुरब्बा न बन पाता।

उन्होंने दिन को रोटी के साथ उबाला हुआ कद्दू खाया। अपनी रकाबियों में वे उबले कद्दू की सुन्दर आकृतियाँ बनाती थीं। उसका रंग बहुत सुन्दर था और वे सरलता के साथ अपने चाकुओं से उसकी विभिन्न आकृतियाँ बना सकती थीं। माँ मेज पर भोजन के साथ उन्हें कभी नहीं खेलने देती थीं। उनको प्रत्येक वस्तु को सफाई से खाना पड़ता था जो उनके सामने परोसी जाती थी। वे अपनी रकाबियों में कुछ छोड़ नहीं सकती थीं। किन्तु खाने के पहले वह उनको उबले हुए बादामी कद्दू की विभिन्न आकृतियाँ बनाने देती थीं। माँ उनको ऐसा करने से नहीं रोकती थीं।

अन्य समय में वे दिन को भूना हुआ कद्दू खाते थे। उसका छिलका इतना कड़ा होता था कि माँ पिता की कुल्हाड़ी से उसके टुकड़े-टुकड़े काटती थीं। जब टुकड़े चूल्हे में भून लिये जाते थे तब लॉरा उनके नर्म भीतरी भाग पर मक्खन लगाती थी और पीले गूदे को छिलके से खुरचकर निकाल लेती थी और उसे प्रेम से खाती थी।

अब रात को वे प्रायः भूसी निकाला हुआ अनाज और दूध खाते थे। वह अच्छा भी होता था। वह इतना अच्छा होता था कि जब माँ उसकी भूसी निकालने लगती थीं तब लॉरा उसके तैयार होने की प्रतीक्षा नहीं कर सकती थी। अनाज का छिलका निकालकर तैयार करने में दो-तीन दिन लगते थे।

पहले दिन माँ अँगीठी में से सब राख निकालकर उसे पोंछती थीं। तव वह कुछ साफ, कड़ी लकड़ी जलाकर उसकी राख इकट्ठी करती थीं। वह इस राख को कपड़े के एक छोटे थैले में रखती थीं।

उस रात को पिताजी मोटे गूदेवाले अनाज की कुछ बालें लाये। बालों को मलकर उन्होंने उनके ऊपर का भूसा छुड़ा दिया। तब सब दानों को एक बड़ी कड़ाही में रख दिया।

दूसरे दिन प्रातःकाल माँ ने छिलका निकाले हुए अनाज और थैले में की राख को लोहे के एक बड़े देकचे में रक्खा। उन्होंने देकचे में पानी भर दिया और देर तक उसे गर्म करती रहीं अन्त में अनाज का गूदा फूलने लगा। वह इतना फूल गया कि अनाज़ के दानों की भूसी फटकर निकलने लगी।

जब सब भूसी ढीली होकर निकलने लगी तब माँ भारी देकचे को घसीट कर बाहर ले गईं। चश्मे में से ठंडा पानी लाकर उन्होंने नाँद में भर दिया और देकचे में से अनाज निकालकर नाँद में डाल दिया।

तब उन्होंने अपने कैलिको के बने हुए वस्त्र की आस्तीन को केहुनी के ऊपर चढ़ाया और नाँद की बगल में झुक गईं। अपने



हाथों से उन्होंने अनाज को रगड़ा। इससे सब भूसी दानों से अलग होकर पानी पर तैरने लगी।

उन्होंने कई बार नाँद का पानी गिरा दिया और चश्मे से बाल्टियों में पानी लाकर उसे भरा। उन्होंने अनाज हाथों से मलना और पानी को बदलना जारी रक्खा जब तक सब भूसी निकलकर बह न गई।

जब माँ अनाज को साफ पानी में रगड़कर धोती थीं तब वह सुन्दर दिखाई पड़ती थीं। उनकी नंगी बाँहें मोटी और गोरी थीं, उनके कपोल लाल थे और उनके काले बाल चिकने और चमकीले थे। पानी का एक छींटा भी कभी उनके सुन्दर वस्त्र पर नहीं पड़ा।

जब अनाज धुलकर तैयार हो गया तब माँ ने सफेद नर्म गूदे को मटके में करके भंडारघर में रख दिया। तब अन्त में वे भूसी निकाले हुए अनाज और दूध को रात में खाते थे।

कभी-कभी मेपल के शीरे और भूसी निकाले हुए अनाज का कलेवा करते थे। कभी-कभी माँ नर्म गूदे को सुअर की चर्बी में तल लेती थीं। परन्तु गूदे को दूध के साथ खाना लॉरा को सबसे अधिक अच्छा लगता था।

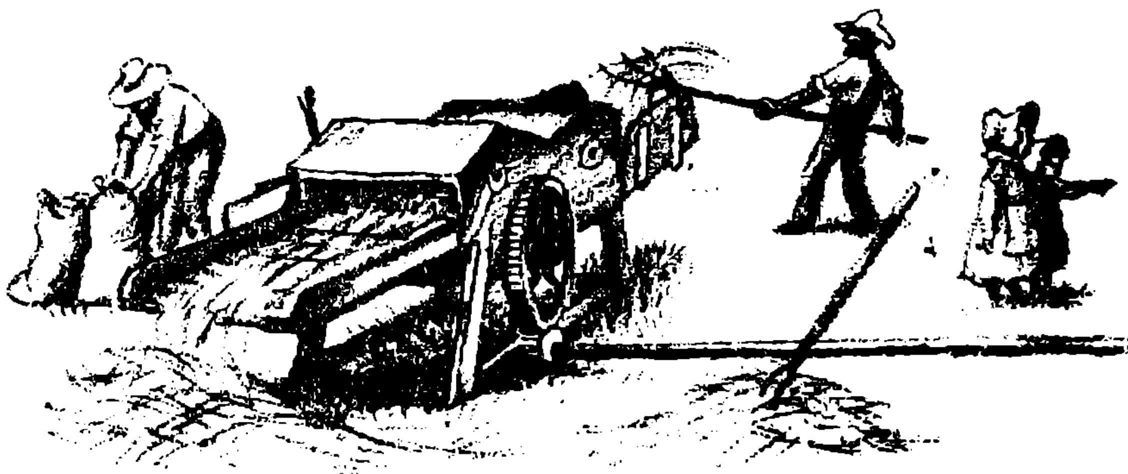
पतझड़ बहुत मजेदार था। बहुत अधिक काम करने को था, काफी अधिक चीजें खाने को और बहुत सी चीजें देखने को थीं। प्रातःकाल से रात तक गिलहरियों की भाँति लॉरा दौड़ती और बोलती रहती थी।

एक दिन प्रातःकाल जब तुषार-पात हो रहा था तब एक यंत्र सड़क पर आया। उसे चार घोड़े खींच रहे थे और उस पर दो आदमी थे। घोड़े उसे खींचकर उस खेत में ले गये जहाँ पिता, चाचा हेनरी, पितामह और श्री पीटरसन ने अपना गेहूँ इकट्ठा किया था।

उसके पीछे दो और आदमी एक और छोटी मशीन चलाते थे।

पिता ने माँ से कहा कि अनाज के माँड़ने और ओसानेवाले आ गये हैं। तब वह अपने घोड़े लेकर खेत में गये। लॉरा और मेरी ने माँ की अनुमति माँगी और तब वे उनके पीछे दौड़ती गईं। यदि वे सावधान रहें और घोड़ों के रास्ते में न आवें तो उन्हें देख सकती थीं।

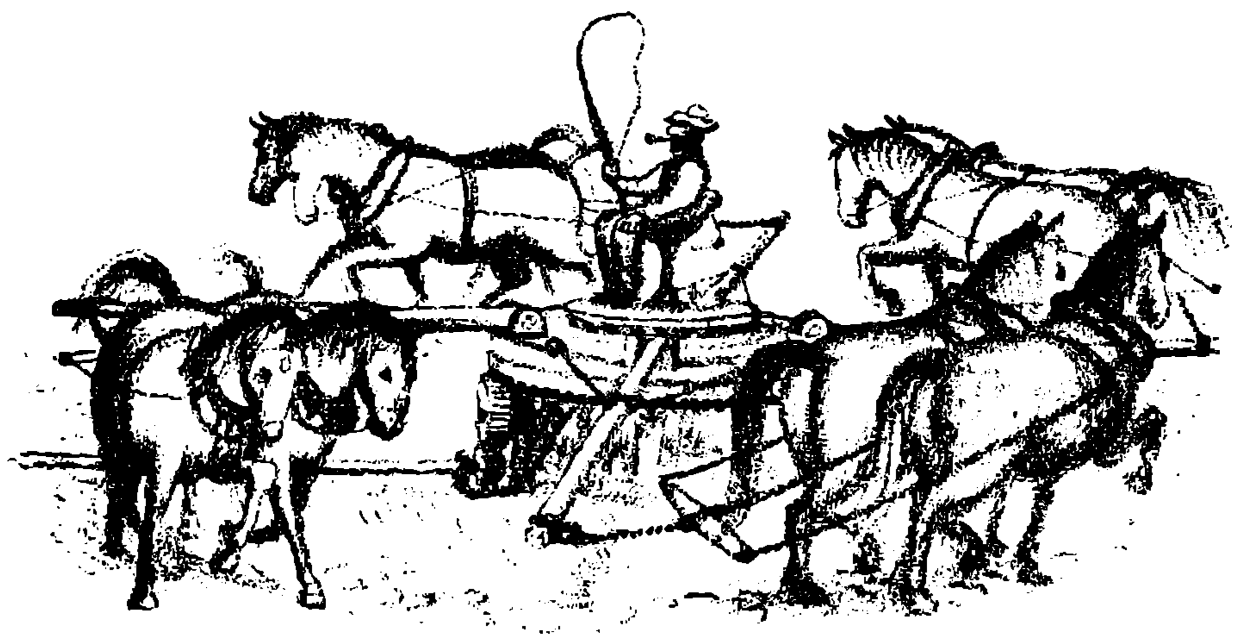
चाचा हेनरी घोड़े पर सवार आये और अपना घोड़ा एक पेड़ में बाँध दिया। तब उन्होंने और पिता ने आठ घोड़ों को छोटी



मशीन में जोता। मशीन के केन्द्र से एक बल्ली निकली थी, उन्होंने घोड़ों की हर एक जोड़ी को उसमें जोता। इस मशीन से बड़ी मशीन तक लोहे का एक लम्बा छड़ लगा था।

बाद में लॉरा और मेरी ने प्रश्न पूछे और पिता ने बतलाया कि बड़ी मशीन को "सपरेटर", छड़ को "टम्बलिंग राड" और छोटी मशीन को "हार्स पावर" कहते हैं। उसमें आठ घोड़े जुते थे और उसे चलाते थे। इसलिए उसे आठ हार्स पावर मशीन (अष्ट अश्व-शक्ति यंत्र) कहते हैं।

हार्स पावर मशीन के ऊपर एक आदमी बैठता था। जब सब कुछ तैयार हो जाता था तब वह चाबुक से घोड़े को हाँकता था और वे चलने लगते थे। वे उसके चारों तरफ गोलाई में चलते थे। जिस लम्बे जुए में हर एक जोड़ी जुती थी वह उसे खींचती थी और अगली जोड़ी के पीछे-पीछे चलती थी। जब वे गोलाई में घूमते थे तब वे सावधानी से टम्बलिंग राड को फाँद जाते थे जो जमीन पर घूमती रहती थी।



उनके खींचने से टम्बलिंग राड घूमती रहती थी और राड सपरेटर को चलाती थी जो गेहूँ के ढेर के पास खड़ा था।

इन मशीनों से बड़ा शोर-गुल होता था। खेत के किनारे खड़ी होकर लॉरा और मेरी एक दूसरे का हाथ पकड़े थीं और आँखें फाड़कर देख रही थीं। उन्होंने पहले कभी मशीन नहीं देखी थी। उन्होंने कभी ऐसी खड़खड़ाहट नहीं सुनी थी।

पिता और चाचा हेनरी गेहूँ के ढेर पर खड़े थे और गेहूँ के

बोझ एक तख्ते पर फेंकते थे। तख्ते के निकट एक व्यक्ति खड़ा था। वह बोझों के बन्धनों को काटता था और सपरेटर के सिरे के एक छेद में एक-एक बोझ रखता था।

वह छेद "सपरेटर" के मुँह की भाँति दिखाई पड़ता था और उसमें लोहे के लम्बे-लम्बे दाँत थे। वे दाँत बोझों को चबाते थे और सपरेटर उन्हें निगलता था। सपरेटर के दूसरे सिरे से भूसा निकलता था और गेहूँ उसकी बगल में गिरता था।

दो मनुष्य तेजी से काम कर रहे थे। वे भूसे को पैरों से कुचल और दबाकर ढेर बना रहे थे। एक आदमी तेजी से गेहूँ की राशि बना रहा था। गेहूँ आधे बुशल के एक बर्त्तन में गिरता था। ज्योंही वह बर्तन भर जाता था त्योंही वह आदमी एक खाली बर्तन उसकी जगह पर रख देता था और भरे बर्तन का गेहूँ राशि में उड़ेल देता था। जब तक वह गेहूँ उड़ेलकर चोंगा के नीचे पहला बर्तन रखता था तब तक दूसरा बर्तन भर जाता था।

सब मनुष्य यथा-शक्ति शीघ्रतापूर्वक काम कर रहे थे किन्तु मशीन उनसे पिछड़ती नहीं थी। लॉरा और मेरी ऐसी उत्तेजित थीं कि वे कठिनाई से साँस ले सकती थीं। वे कसकर एक दूसरे का हाथ पकड़कर घूरती थीं।

घोड़े गोलाई में चक्कर लगाते रहे। हाँकनेवाला उनको चाबुक से मारकर चिल्लाता था, "शाबाश, जान! बढ़ते चलो। जी चुराना बेकार है।" फिर दूसरे घोड़े को चाबुक लगाकर वह कहता था, "बिली होशियार रहो। तुम बहुत धीरे-धीरे चल रहे हो!"

सपरेटर बोझों को निगलता था, सुनहरा भूसा सुनहरे बादल के रूप में उड़ता था, चोंगे से सुनहरे बादामी गेहूँ की धार निकलती

थी और मनुष्य जल्दी-जल्दी काम कर रहे थे। जितनी शीघ्रता से हो सकता था उतनी शीघ्रता से पिता और चाचा हेनरी बोझा फेंकते थे। हर एक चीज के ऊपर भुसा और गरद उड़ती थी।

जितनी देर तक हो सका, लॉरा और मेरी देखती रहीं। तब वे दौड़कर घर गईं जिसमें उन सब मनुष्यों के लिए भोजन तैयार करने में वे माँ की सहायता कर सकें।

अँगीठी पर एक बड़े देकचे में करमकल्ला की भाजी पक रही थी और चूल्हे पर एक बड़ी कड़ाही में फलियाँ उबल रही थीं। लॉरा और मेरी ने गेहूँ माँड़ने और ओसानेवालों के लिए मेजें लगाईं। उन मेजों पर उन्होंने रोटी, मक्खन, कद्दू की सब्जी, कद्दू का मुरब्बा, पेठा, पनीर, शहद और दूध रख दिया।

तब माँ ने उन पर उबले हुए आलू, करमकल्ला, गोश्त, भुनी हुई फलियाँ और समोसे रक्खे और प्यालों में चाय उड़ेली।

गेहूँ माँड़ने और ओसानेवाले लोग दोपहर को भोजन से लदी हुई मेजों के निकट आये। किन्तु वह सब भोजन उनकी आवश्यकता से अधिक नहीं था, क्योंकि वे बहुत कड़ा परिश्रम करते थे और उन्हें बहुत तेज भूख लगती थी।

अपराह्ण के मध्यकाल तक मशीनों ने गेहूँ माड़ने और ओसाने का काम समाप्त कर दिया और उनके मालिक उनको लेकर बड़े वन में चले गये। वे अपने पारिश्रमिक के रूप में कई बोरे गेहूँ भी ले गये। वे दूसरे स्थान पर जा रहे थे जहाँ पड़ोसियों ने गेहूँ एकत्र किये थे और जो उसको माँड़ने के लिए मशीनों की प्रतीक्षा कर रहे थे।

पिता उस रात को बहुत थके, परन्तु प्रसन्न थे। उन्होंने माँ से कहा—

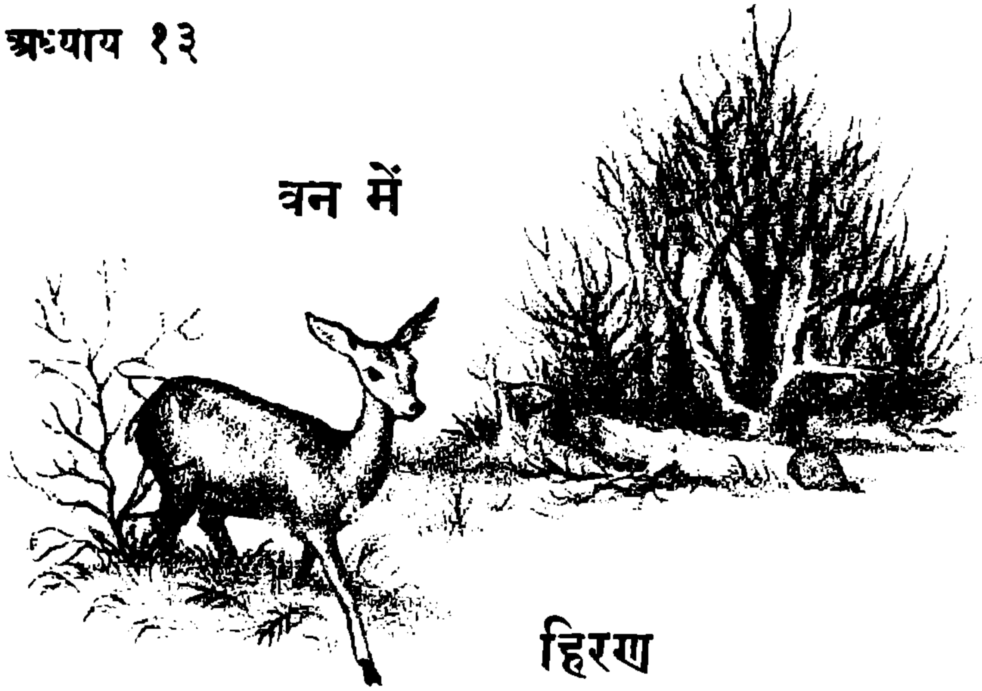
"जितना अनाज आज मशीन ने माँड़ा है उसे मुँगरी से पीटने में हेनरी, पीटरसन, पिता और मुझको दो सप्ताह लगते। हमको न तो इतना गेहूँ मिला होता और न वह इतना साफ हुआ होता।

"वह मशीन बहुत बड़ा आविष्कार है।" उन्होंने कहा, "यदि दूसरे लोग चाहें तो वे पुरानी प्रणालियों से चिपके रहें किन्तु मैं तो प्रगति का पक्षपाती हूँ। जिस युग में हम लोग रह रहे हैं वह महान् युग है। जब तक मैं गेहूँ बोऊँगा तब तक यदि कहीं पड़ोस में कोई मशीन रहेगी तो उसी से मँड़वाऊँगा।"

उस रात को वह ऐसे थके थे कि लॉरा से बातचीत नहीं कर सकते थे परन्तु लॉरा को उन पर गर्व था। पिता ने मनुष्यों को अपना खलिहान इकट्ठा करने को तैयार किया था और उन्होंने माँड़ने की मशीन मँगाई थी। वह आश्चर्यजनक मशीन थी। उसके आने से प्रत्येक व्यक्ति प्रसन्न था।

अध्याय १३

वन में हिरण



घास सूख गई थी। अब गायों को वनों में से निकालकर गोशाला में रखना और खिलाना आवश्यक था। जब ठंडे पतझड़ की वर्षा आरम्भ हुई तब सब चमकीली पत्तियाँ बादामी रंग की हो गई थीं।

अब लॉरा और मेरी पेड़ों के नीचे नहीं खेलती थीं। परन्तु जब वर्षा होती थी तब पिता घर के अन्दर रहते थे और उन्होंने फिर रात के भोजन के उपरान्त सारंगी बजाना आरम्भ कर दिया था।

वर्षा बन्द हो गई। मौसम और ठंडा हो गया। प्रातःकाल तड़के प्रत्येक वस्तु पर तुषार चमकता था। दिन छोटे हो रहे थे और घर को गर्म रखने के लिए अँगीठी में दिन भर आग जलती रहती थी।

ऊपरी मंजिल का कमरा और तहखाना एक बार फिर अच्छी चीजों से भर गये और लॉरा और मेरी ने कपड़े के टुकड़ों को सीकर लिहाफ बनाना आरम्भ कर दिया था फिर प्रत्येक वस्तु सुखप्रद होने लगी थी।

एक रात को घर का काम करने के पश्चात् जब पिताजी अन्दर आये तब उन्होंने कहा कि खाना खाने के बाद मैं वन में जाकर हिरण की तलाश करूँगा। वसन्त से घर में ताजा गोश्त नहीं आया था, पर अब हिरण के बच्चे बड़े हो गये थे और पिताजी फिर शिकार करने जानेवाले थे।

पिता ने वन के बीच एक खुली जगह में कुछ नमक बिखेर दिया था। यहाँ पर हिरण नमक चाटने आते थे। उस जगह के निकट पेड़ थे जिनमें पिता बैठकर हिरणों को देख सकते थे।

रात के भोजन के बाद अपनी बन्दूक लेकर पिताजी वन में गये और बिना कोई संगीत या कहानी सुने ही लॉरा और मेरी सो गईं।

प्रातःकाल ज्योंही वे उठीं त्योंही वे दौड़कर खिड़की के पास गईं और पेड़ों से कोई हिरण लटकता हुआ नहीं दिखाई पड़ा। इसके पहले जब कभी पिता हिरण मारने जाते थे तब वह एक न एक हिरण लेकर आते थे, कभी खाली हाथ नहीं आते थे। लॉरा और मेरी की समझ में कुछ न आया।

दिन भर पिता छोटे घर और गोशाला के किनारे-किनारे पत्तियों और फूस का ढेर लगाकर पत्थरों से दबाते रहे जिससे घर में ठंड न आये। दिन भर ठंड बढ़ती रही। उस रात को एक बार फिर अग्निकुंड में आग जलाई गई और जाड़े के लिए खिड़कियाँ कसकर बन्द कर दी गईं।

भोजन के बाद पिता ने लॉरा को अपने घुटने पर लिया और मेरी निकट, अपनी छोटी कुर्सी पर, बैठी। पिता ने कहा—

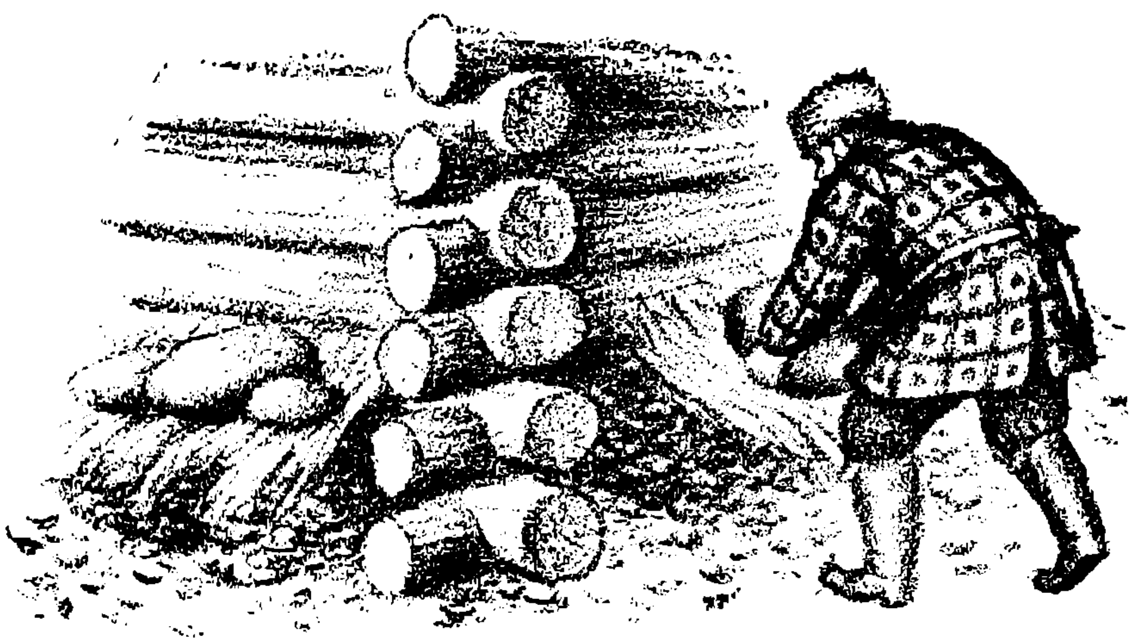
"अब मैं तुम लोगों को बताऊँगा कि क्यों आज तुम लोगों को ताजा गोश्त खाने को नहीं मिला।

"जब मैं वन में उस जगह गया जहाँ मैंने नमक बिखेरा था तब मैं बलूत के एक बड़े पेड़ पर चढ़ गया। एक डाल पर मुझे ऐसी जगह मिली जहाँ पर मैं आराम से बैठकर हिरण को देख सकता था। मेरी बन्दूक भरी थी और मेरे घुटनों पर रक्खी थी। कोई जानवर वहाँ आता तो मैं उसे गोली मार देता।

"वहाँ बैठकर मैं चन्द्रोदय की प्रतीक्षा कर रहा था जिससे खुली जगह प्रकाशित हो जाती।

"कल दिन भर लकड़ी काटने के कारण मैं कुछ थक गया था। इससे मुझे झपकी आ गई। कुछ देर बाद मेरी आँखें खुलीं।

"बड़ा, गोल चाँद अभी निकल रहा था। पेड़ों की नंगी डालों के बीच से मैं उसे आकाश में नीचे देख सकता था, और उसके प्रकाश में मैंने एक हिरण को खड़ा देखा। वह अपना सिर ऊपर करके सुन रहा था। उसके बड़े सशाख सींग उसके सिर के ऊपर खड़े थे। वह चाँदनी में काला दिखाई पड़ता था।



"वह अवश्य मेरी गोली का शिकार हो गया होता, परन्तु वह इतना सुन्दर, शक्तिशाली और मस्त दिखाई पड़ता था कि मैं उसे न मार सका। वहाँ बैठकर मैं उसे देखता रहा अन्त में वह छलाँगें मारकर अँधेरे वन में चला गया।

"तब मुझे याद आया कि माँ और मेरी छोटी लड़की घर पर प्रतीक्षा करती होंगी कि मैं हिरण का ताजा गोश्त लाऊँगा। मैंने संकल्प किया कि अगली बार मैं अवश्य गोली मारूँगा।

"कुछ समय उपरान्त एक बड़ा भालू लुढ़कता हुआ खुली जगह में आया। गर्मी भर झरबेरी, कन्द और कीड़े-मकोड़े के खाने से वह दो भालुओं के बराबर भारी हो गया था। जब वह खुली जगह के पार जा रहा था तब उसका सिर एक तरफ से दूसरी तरफ हिलता था। अन्त में वह सड़े हुए कुन्दे के पास आया। उसने उसे सूँघा और सुनने लगा तब उसने उसे पंजे से तोड़ डाला और टूटे हुए टुकड़ों को सूँघता था और सफेद मोटे अंडों को खाता था।

"तब वह अपने-चारों तरफ देखता हुआ अपने पिछले पैरों पर बिलकुल शान्त खड़ा हो गया। ऐसा प्रतीत होता था कि उसे सन्देह हो रहा है कि कुछ गड़बड़ मामला है। वह देख या सूँघकर गड़बड़ी का पता लगाना चाहता था।

"गोली मारने के लिए वह बड़ा अच्छा निशाना था किन्तु उसे देखने में मैं ऐसा तल्लीन हो गया था और चाँदनी में वन इतना शान्त था कि मुझे अपनी बन्दूक की बात भूल गई। जब तक वह वन में नहीं जाने लगा तब तक उसे गोली मारने की बात मेरे मन में नहीं आई।

"मैंने सोचा, इस तरह काम न चलेगा। इस प्रकार तो मुझे बिलकुल गोश्त न मिलेगा।



"पेड़ पर बैठकर मैं फिर प्रतीक्षा करने लगा। इस बार मैंने संकल्प कर लिया था कि जो कोई शिकार दिखाई पड़ेगा उसे मैं अवश्य मारूँगा।

"चन्द्रमा आकाश में और ऊँचा चढ़ आया था और छोटी, खुली जगह में चाँदनी साफ चमकती थी। उसके चारों तरफ पेड़ों की अँधेरी छाया थी।

"बहुत देर बाद एक हिरणी और उसका साल भर का बच्चा अँधेरे से बाहर आये। वे बिल्कुल भयभीत नहीं थे। वे उस जगह

गये जहाँ मने नमक छिड़का था और दोनों ने थोड़ा सा नमक चाटा।

"तब उन्होंने सिर उठाया और एक दूसरे को देखा। बच्चा जाकर हिरणी की बगल में खड़ा हो गया। वन की चाँदनी को देखते हुए वे वहाँ खड़े थे। उनकी आँखें कोमल और देदीप्यमान थीं।

"जब तक वे अँधेरे में नहीं चले गये तब तक वहाँ बैठा मैं उनको देखता रहा। तब मैं पेड़ पर से उतरकर घर चला आया।"

लॉरा ने उनके कान में धीरे से कहा, "मुझे प्रसन्नता है कि आपने उन्हें नहीं मारा।"

मेरी ने कहा, "हम रोटी और मक्खन खा सकते हैं।"

पिता ने मेरी को कुर्सी से उठा लिया और दोनों लड़कियों को सीने से लगा लिया।

उन्होंने कहा, "तुम दोनों बहुत अच्छी लड़कियाँ हो। अब सोने का समय हो गया है। तुम लोग दौड़कर बिस्तर पर जाओ। मैं अपनी सारंगी लेने जाता हूँ।"

जब लॉरा और मेरी ने ईश्वर से प्रार्थना की और पहियेदार बिस्तर पर ओढ़ना के नीचे सुख से लेट गईं तब पिता आग की रोशनी में सारंगी लेकर बैठे। माँ ने बत्ती बुझा दी थी क्योंकि उन्हें उसके प्रकाश की आवश्यकता नहीं थी। अग्निकुंड की दूसरी तरफ वह हिलनेवाली कुर्सी पर बैठी थीं और उनकी सलाइयाँ उस मोजे पर चमकती थीं जो वह बुन रही थीं।

अब फिर जाड़े की लम्बी शाम आ गई थी। इसलिए आग जलाई जाती थी और उसके पास संगीत होता था। पिता की सारंगी बजती थी और वह गाते थे :—

"मत रोओ मेरे लिए सुसियाना

मैं जाता हूँ कैलीफोर्निया
तलासने सोने की खानें।"

फिर पिता ने बुड्ढे ग्राइम्स के विषय में गाना आरम्भ किया। पर उन्होंने वे शब्द नहीं गाये जिनको उन्होंने उस समय गाया था जब माँ पनीर बना रही थीं। इस बार उन्होंने भिन्न शब्द गाये। वह मधुर कंठ से गा रहे थे—

"क्या भूल जावेगा सुन्दर अतीत ?
क्या भूल जावेंगे सब पूर्व-परिचित ?
क्या नहीं होंगे वे पुनः स्मृत ?
क्या हो जावेंगे सब विस्मृत ?"

जब सारंगी का बजना बंद हुआ तब लॉरा ने धीरे से पूछा—"पिताजी, सुन्दर अतीत का क्या अर्थ है ?"

पिता ने उत्तर दिया—"लॉरा, सुन्दर अतीत का अर्थ है प्राचीन काल के अच्छे दिन। अच्छा, अब सो जाओ।"

किन्तु लॉरा कुछ देर तक जागती रही। वह पिता की सारंगी का कोमल राग और बड़े वन में बहती हुई हवा की आवाज सुनती रही। उसने देखा कि पिता अग्निकुंड के पास बेंच पर बैठे हैं और आग की रोशनी उनके बादामी बाल, दाढ़ी और मधुर सारंगी पर चमक रही है। उसने यह भी देखा कि माँ कुर्सी पर हिल रही हैं और बुनाई कर रही हैं।

उसने मन में सोचा, "यह वर्तमान समय है, अतीत नहीं है।"

उसे हर्ष था कि सुखद घर, पिता, माता, आग की रोशनी और संगीत सब वर्तमान हैं। उसने सोचा कि यह सब भूला नहीं जा सकता क्योंकि यह समय वर्तमान समय है, यह अतीत की बात नहीं हो सकती।